राजस्थान विधान सभा की कार्यवाही का वृत्तान्त

अंक: 05] पन्द्रहवीं विधान सभा के पांचवें सत्र का पहला दिवस [संख्या: 01

शुक्रवार,

14 अगस्त 2020

(राजस्थान विधान सभा की बैठक 11.00 बजे
राजस्थान विधान सभा भवन, जयपुर में प्रारम्भ हुई)

(श्री सी.पी. जोशी, अध्यक्ष, पदासीन)

राष्ट्रीय गीत

वन्दे मातरम्। वन्दे मातरम्।
सुजलाम् सुफलाम् मलयज शीतलाम्।
शस्य श्यामलाम् मातरम्। वन्दे मातरम्।
शुभ्र ज्योत्स्नां पुलकित यामिनीम्।
फुल्ल कुसुमित द्रुमदल शोभिनीम्।
सुहासिनीम् सुमधुर भाषिणीम्।
सुखदाम् वरदाम् मातरम्।
वन्दे मातरम्। वन्दे मातरम्।

श्री अध्यक्ष: सचिव।

सदन पटल पर रखे गये पत्र

श्री सचिव, विधान सभा: अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी अनुमति से राजस्थान विधान सभा के विगत सत्रों में पारित उन विधेयकों का विवरण सदन की मेज पर रखता हूं, जिन पर राज्यपाल महोदय की अनुमति प्राप्त हो चुकी है:

राज्यपाल महोदय से अनुमति प्राप्त विधेयक

(1) डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन राजस्थान आयुर्वेद विश्वविद्यालय, जोधपुर (संशोधन) विधेयक, 2020

(2) राजस्थान कृषि उपज मंडी (संशोधन) विधेयक, 2020

(3) राजस्थान जन आधार प्राधिकरण विधेयक, 2020

(4) राजस्थान माल और सेवा कर (संशोधन) विधेयक, 2020

2] सदन पटल पर रखे गये पत्र-14 अगस्त 2020-शोका. एवं श्रद्धांजलि

(श्री सचिव, विधान सभा)

(5) राजस्थान विनियोग (संख्या-1) विधेयक, 2020

(6) राजस्थान विनियोग (संख्या-2) विधेयक, 2020

(7) राजस्थान नगरपालिका (संशोधन) विधेयक, 2020

(8) राजस्थान वित्त विधेयक, 2020

(9) राजस्थान आवासन बोर्ड (संशोधन) विधेयक, 2020

(10) राजस्थान न्यायालय फीस तथा वाद मूल्यांकन (संशोधन) विधेयक, 2020

(11) राजस्थान नगर सुधार (संशोधन) विधेयक, 2020

श्री अध्यक्ष: शोकाभिव्यक्ति।

शोकाभिव्यक्ति एवं श्रद्धांजलि

माननीय सदस्यगण, शोकाभिव्यक्ति के इस अवसर पर मैं गत दिनों दिवंगत हुए मध्य प्रदेश के पूर्व राज्यपाल श्री लालजी टंडन; मिजोरम, मणिपुर एवं झारखण्ड के पूर्व राज्यपाल श्री वेद मारवाह; छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्य मंत्री श्री अजीत जोगी एवं महाराष्ट्र के पूर्व मुख्य मंत्री श्री शिवाजीराव पाटिल निलांगेकर; पूर्व मंत्री श्री भंवरलाल शर्मा तथा पूर्व सदस्य श्री बजरंग लाल शर्मा एवं श्री हनुमान सहाय व्यास के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए यह शोक प्रस्ताव प्रस्तुत करता हूं।

लालजी टंडन, श्री, पूर्व राज्यपाल (मध्य प्रदेश)

मध्य प्रदेश के पूर्व राज्यपाल श्री लालजी टंडन का जन्म 12 अप्रैल, 1935 को लखनऊ जिले के चौक ग्राम में हुआ। आपने स्नातक तक शिक्षा प्राप्त की।

श्री लालजी टंडन दो बार उत्तर प्रदेश विधान परिषद् तथा तीन बार उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्य रहे। इस कार्यकाल के दौरान आप उत्तर प्रदेश सरकार में विभिन्न विभागों के राज्य मंत्री रहे। आप उत्तर प्रदेश विधान परिषद में सदन के नेता तथा उत्तर प्रदेश विधान सभा में नेता, प्रतिपक्ष भी रहे। श्री टंडन पन्द्रहवीं लोक सभा के लिए लखनऊ निर्वाचन क्षेत्र से भारतीय जनता पार्टी के सांसद निर्वाचित हुए। दीर्घ संसदीय अनुभव रखने वाले श्री टंडन अगस्त, 2018 से जुलाई, 2019 तक बिहार के राज्यपाल रहे।

(श्री अध्यक्ष)

दिनांक 29 जुलाई, 2019 को आप मध्य प्रदेश के राज्यपाल बने तथा मृत्यु पर्यन्त इस पद पर आसीन रहे।

विभिन्न सामाजिक, शैक्षिक तथा सांस्कृतिक संस्थाओं से सम्बद्ध रहे श्री टंडन के विभिन्न आलेख कई पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए। आपकी 'सतह से शिखर तक' शीर्षक से पुस्तक भी प्रकाशित हुई।

श्री लालजी टंडन का दिनांक 21 जुलाई, 2020 को निधन हो गया।

वेद मारवाह, श्री, पूर्व राज्यपाल (झारखण्ड)

मिजोरम, मणिपुर एवं झारखण्ड के पूर्व राज्यपाल श्री वेद मारवाह का जन्म 15 सितम्बर, 1934 को पाकिस्तान के पेशावर में हुआ। आपने सेंट स्टीफन कालेज से शिक्षा प्राप्त की तथा मैनचेस्टर विश्वविद्यालय से लोक प्रशासन में डिप्लोमा प्राप्त किया।

श्री वेद मारवाह दिसम्बर, 1999 से जून, 2003 तक मणिपुर के राज्यपाल रहे। इस कार्यालय के दौरान दिसम्बर, 2000 से मई, 2001 तक मिजोरम के राज्यपाल का प्रभार भी आपके पास था। श्री मारवाह जून, 2003 से दिसम्बर, 2004 तक झारखण्ड के राज्यपाल के पद पर आसीन रहे।

लगभग 36 वर्ष पुलिस विभाग में सेवाएं देने वाले श्री मारवाह दिल्ली के पुलिस आयुक्त, राष्ट्रीय सुरक्षा प्रहरी के महा निदेशक तथा जम्मू कश्मीर एवं बिहार के राज्यपाल के सलाहकार सहित विभिन्न विभागों में अनेक पदों पर रहे। उल्लेखनीय सेवाओं के लिए आपको वर्ष 1989 में पद्मश्री से भी सम्मानित किया गया। आपकी 'अनसिविल वार्स-पैथोलोजी आफ टैररिज्म इन इंडिया' सहित अनेक पुस्तकें भी प्रकाशित हुईं।

श्री वेद मारवाह का दिनांक 5 जून, 2020 को निधन हो गया।

अजीत जोगी, श्री, पूर्व मुख्य मंत्री (छत्तीसगढ़)

छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्य मंत्री श्री अजीत जोगी का निधन 29 अप्रैल, 1946 को बिलासपुर जिले के जोगी डोंगरी ग्राम में हुआ। आपने एलएल.बी. तथा बी.ई. (मैकेनिकल) की उपाधियां प्राप्त कीं।

श्री अजीत जोगी वर्ष 1986 से 1998 तक दो बार राज्य सभा के सदस्य रहे। आप बारहवीं तथा चौदहवीं लोक सभा के सदस्य भी रहे। इस दौरान आप संसद की विभिन्न समितियों के सदस्य रहे। आप लोक सभा में कांग्रेस संसदीय दल के सचेतक भी रहे। श्री जोगी छत्तीसगढ़ विधान सभा के

(श्री अध्यक्ष)

भी सदस्य रहे। समाज सेवा को समर्पित रहे श्री जोगी वर्ष 2000 में गठित छत्तीसगढ़ राज्य के पहले मुख्य मंत्री बने। भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी के रूप में भी आपने दीर्घ अवधि तक अपनी सेवाएं दीं।

इंडियन नेशनल कांग्रेस से सम्बद्ध रहे श्री जोगी ने पार्टी के राज्य तथा राष्ट्रीय स्तर के विभिन्न पदों की जिम्मेदारियों का बखूबी निर्वहन किया। कुशल प्रशासक श्री जोगी की 'एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ पैरिफेरल एरियाज' एवं 'दृष्टिकोण' सहित अन्य पुस्तकें भी प्रकाशित हुईं। आपके अनेक आलेख भी विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए। श्री जोगी ने अनेक विश्वविद्यालयों एवं शैक्षिक तथा धार्मिक संस्थाओं के विभिन्न पदों पर कार्य किया। सामाजिक कल्याण की अनेक संस्थाओं से सम्बद्ध रहे श्री जोगी जनजाति, अल्पसंख्यक तथा कमजोर वर्गों के उत्थान के लिए प्रयत्नशील रहे।

श्री जोगी का दिनांक 29 मई, 2020 को निधन हो गया।

शिवाजीराव पाटिल निलांगेकर, श्री, पूर्व मुख्य मंत्री (महाराष्ट्र)

महाराष्ट्र के पूर्व मुख्य मंत्री श्री शिवाजीराव पाटिल निलांगेकर का जन्म 1 सितम्बर, 1931 को महाराष्ट्र के लातूर जिले के निलंगा में हुआ।

श्री शिवाजीराव पाटिल निलांगेकर वर्ष 1962 से 1980 तक लगातार तथा इसके पश्चातवर्ती सदनों में महाराष्ट्र विधान सभा के सदस्य रहे। सुदीर्घ संसदीय अनुभव रखने वाले श्री निलांगेकर जून, 1985 से मार्च, 1986 तक महाराष्ट्र के मुख्य मंत्री रहे। आपने राज्य में गरीबों तथा किसानों की दशा सुधारने के लिए उल्लेखनीय कार्य किये।

शिक्षा के क्षेत्र में सक्रिय रहे श्री निलांगेकर ने वर्ष 1968 में महाराष्ट्र एजुकेशन ट्रस्ट बनाया तथा राज्य में कई महाविद्यालय, उच्चतर माध्यमिक विद्यालय तथा प्राथमिक विद्यालयों की स्थापना की।

श्री शिवाजीराव पाटिल निलांगेकर का दिनांक 5 अगस्त, 2020 को निधन हो गया।

भंवरलाल शर्मा, श्री, पूर्व मंत्री

पूर्व मंत्री श्री भंवरलाल शर्मा का जन्म 21 नवम्बर, 1924 को जयपुर में हुआ। आपने बी.ए. एलएल.बी. एवं विशारद् की उपाधियां प्राप्त कीं।

श्री भंवरलाल शर्मा छठी से ग्यारहवीं राजस्थान विधान सभा में

(श्री अध्यक्ष)

हवामहल निर्वाचन क्षेत्र से विधायक निर्वाचित हुए। आप छठी विधान सभा में जनता पार्टी तथा सातवीं से ग्यारहवीं विधान सभा में भारतीय जनता पार्टी के विधायक रहे। श्री शर्मा राजस्थान सरकार में शिक्षा, स्वायत्त शासन, नगर आयोजना एवं आवास, नगरीय विकास तथा जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभागों के मंत्री रहे। विधान सभा के कार्यकाल के दौरान आप विशेषाधिकार समिति, जन लेखा समिति, अधीनस्थ विधान संबंधी समिति, राजकीय उपक्रम समिति एवं कार्य सलाहकार समिति के सदस्य रहे। आप भारतीय जनता पार्टी विधायक दल के सचेतक तथा माननीय अध्यक्ष द्वारा गठित पेयजल समस्या समाधान समिति के सदस्य भी रहे।

सरल एवं सौम्य व्यक्तित्व के धनी श्री शर्मा अपने निर्वाचन क्षेत्र की समस्याओं के समाधान के लिए सदैव प्रयत्नशील रहते थे। आप राजस्थान विश्वविद्यालय एवं उदयपुर विश्वविद्यालय के सिंडीकेट के सदस्य भी रहे। भारतीय जनता पार्टी से सम्बद्ध रहे श्री शर्मा ने प्रदेशाध्यक्ष सहित पार्टी के विभिन्न पदों पर अपनी सेवाएं दीं। आप नगर परिषद्, जयपुर के अध्यक्ष भी रहे।

श्री भंवरलाल शर्मा का दिनांक 29 मई, 2020 को निधन हो गया।

बजरंग लाल शर्मा, श्री, पूर्व सदस्य

पूर्व विधायक श्री बजरंग लाल शर्मा का जन्म 19 अगस्त, 1933 को खेतड़ी तहसील के पांव डोली ग्राम में हुआ। आपने एम.ए. एवं एलएल.बी. की उपाधियां प्राप्त कीं।

श्री बजरंग लाल शर्मा छठी राजस्थान विधान सभा में बनीपार्क निर्वाचन क्षेत्र से जनता पार्टी के विधायक रहे। विधान सभा के कार्यकाल के दौरान आप विभिन्न समितियों के सदस्य रहे। आप राजस्थान विश्वविद्यालय अध्यापक एवं अधिकारी (सेवा की विशेष शर्तें) (संशोधन) विधयेक, 1978 पर गठित प्रवर समिति के सभापति भी रहे।

छात्र जीवन से ही राजनीति में सक्रिय श्री शर्मा जयसिंह हाई स्कूल, खेतड़ी तथा राजस्थान लॉ कालेज यूनियन के महामंत्री रहे। श्री शर्मा आल इंडिया कामर्स फैडरेशन की राजस्थान शाखा के महा मंत्री तथा सहकारी उपभोक्ता संघ के संचालक भी रहे। अधिवक्ता रहे शर्मा राजस्थान उच्च न्यायालय बार एसोसिएशन के सदस्य रहे तथा आपने अनेक जन आंदोलनों से

(श्री अध्यक्ष)

जुड़ी याचिकाओं पर न्यायालय में पक्ष रखा। श्री शर्मा ने जनता से जुड़ी समस्याओं के समाधान को लेकर हुए विभिन्न आंदोलनों में सक्रिय भाग लिया। आपने कांग्रेस तथा जनता पार्टी में विभिन्न पदों पर कार्य किया।

श्री बजरंग लाल शर्मा का दिनांक 30 जुलाई, 2020 को निधन हो गया।

हनुमान सहाय व्यास, श्री, पूर्व सदस्य

पूर्व विधायक श्री हनुमान सहाय व्यास का जन्म 14 मई, 1934 को जयपुर जिले के राडावास ग्राम में हुआ। आपने विशारद् की उपाधि प्राप्त की।

श्री हनुमान सहाय व्यास पांचवीं राजस्थान विधान सभा में बैराठ निर्वाचन क्षेत्र से कांग्रेस के विधायक निर्वाचित हुए। विधान सभा में आप अपने निर्वाचन क्षेत्र की समस्याओं के समाधान के लिए सदैव प्रयत्नशील रहते थे।

अपने सार्वजनिक जीवन में श्री व्यास राडावास ग्राम पंचायत के सदस्य एवं सरपंच; पंचायत समिति शाहपुरा के उप प्रधान तथा पंचायत समिति बैराठ के प्रधान रहे। आप शाहपुरा क्रय-विक्रय सहकारी समिति के उपाध्यक्ष एवं अध्यक्ष भी रहे। सहकारिता में रुचि रखने वाले श्री व्यास सहकारिता कुटीर उद्योग के सहवृत सदस्य एवं अध्यक्ष रहे।

श्री हनुमान सहाय व्यास का दिनांक 16 मई, 2020 को निधन हो गया।

मैं अपनी ओर से तथा इस सदन के सभी माननीय सदस्यों की ओर से दिवंगतों के प्रति शोक प्रकट करते हुए, उनके परिवार के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करता हूं तथा दिवंगत आत्माओं को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि दिवंगत आत्माओं को शांति प्रदान करे तथा उनके शोकसंतप्त परिजनों को उनका बिछोह सहन करने की शक्ति दे।

लद्दाख के गलवान सैक्टर में शहीद हुए भारतीय सैनिक

पूर्वी लद्दाख की गलवान घाटी में दिनांक 15 जून, 2020 को चीन के सैनिकों के साथ हुई झड़प में लगभग 20 जवान शहीद हो गए। यह सदन जवानों की मृत्यु पर शोक प्रकट करता है।

माननीय सदस्यगण, कृपया 2 मिनट मौन खड़े रहकर दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए प्रार्थना करें।

(श्री अध्यक्ष)

(तदनन्तर सदन द्वारा 2 मिनट मौन खड़े रहकर दिवंगत आत्माओं को श्रद्धांजलि अर्पित की गई)

सदन की कार्यवाही एक बजे तक के लिए स्थगित की जाती है।

(तदनन्तर सदन की बैठक 11.12 बजे 13.00 बजे तक के लिए स्थगित हुई)

(13.00 बजे)

पुन: समवेत होने पर

(श्री सी.पी. जोशी, अध्यक्ष, पदासीन)

सदन पटल पर रखे गये पत्र

अध्यादेश

श्री अध्यक्ष: माननीय सदस्यगण, सदन की गरिमा को बनाये रखना हम सबकी जिम्मेदारी है। माननीय सदस्यगण, नियमों में शिथिलता देते हुए मैं माननीय शान्ती कुमार धारीवाल जी को पहले अध्यादेश सदन की मेज पर रखने की अनुमति देता हूं।

श्री शान्ती कुमार धारीवाल (स्वायत्त शासन, नगरीय विकास एवं आवासन मंत्री): अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी अनुमति से निम्नांकित अध्यादेश सदन की मेज पर रखता हूं:-

(1) राजस्थान महामारी अध्यादेश, 2020 (2020 का अध्यादेश संख्यांक-1);

(2) राजस्थान कृषि उपज मण्डी (संशोधन) अध्यादेश, 2020 (2020 का अध्यादेश संख्यांक-2);

(3) राजस्थान माल और सेवा कर (संशोधन) अध्यादेश, 2020 (2020 का अध्यादेश संख्यांक-3);

(4) राजस्थान स्टाम्प (संशोधन) अध्यादेश, 2020 (2020 का अध्यादेश संख्यांक-4);

(5) राजस्थान महामारी (संशोधन) अध्यादेश, 2020 (2020 का अध्यादेश संख्यांक-5);

(6) राजस्थान आबकारी (संशोधन) अध्यादेश, 2020 (2020 का अध्यादेश संख्यांक-6);

(श्री शान्ती कुमार धारीवाल)

(7) राजस्थान माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अध्यादेश, 2020 (2020 का अध्यादेश संख्यांक-7); एवं

(8) राजस्थान पुलिस (संशोधन) अध्यादेश, 2020 (2020 का अध्यादेश संख्यांक-8)

श्री अध्यक्ष: माननीय सदस्यगण, मुझे विश्वास मत का प्रस्ताव मिला है। शान्ती कुमार धारीवाल, संसदीय कार्य मंत्री प्रस्ताव प्रस्तुत करेंगे।

विश्वास प्रस्ताव

मंत्री परिषद् में विश्वास का प्रस्ताव

श्री शान्ती कुमार धारीवाल (स्वायत्त शासन, नगरीय विकास एवं आवासन मंत्री): अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी अनुमति से प्रस्ताव करता हूं कि यह सदन मंत्री परिषद् में विश्वास व्यक्त करता है।

श्री अध्यक्ष: माननीय सदस्यगण, आज की चर्चा 2 घंटे से 3 घंटे के बीच में हम समाप्त करेंगे। सत्ता पक्ष के और विपक्ष के जो माननीय सदस्य पहले प्रारम्भ करेंगे, वे 15-15 मिनट अपनी बात कहेंगे और उसके बाद विपक्ष के और पक्ष के जो माननीय सदस्य बोलेंगे, उनको 10-10 मिनट का समय देंगे। प्रतिपक्ष के नेता 30 से 45 मिनट में अपनी बात समाप्त करेंगे और सदन के नेता मुख्य मंत्री जी 30 से 45 मिनट में अपनी बात समाप्त करेंगे। मेरा आप सबसे सानुरोध निवेदन है कि सदन की गरिमा को बनाये रखते हुए सदन में हम चर्चा इस ढंग से करें, जिससे सदन का महत्व बढ़े और लोगों में समाचार जाए कि हम यहां पर बैठकर नियमों का पालन करते हुए सार्थक चर्चा कर रहे हैं। मैं अपेक्षा करूंगा कि जो भी इस चर्चा में भाग लेंगे, वे नियम, कानून और संसदीय परम्पराओं को ध्यान में रखते हुए इस गरिमापूर्ण चर्चा में अपनी बातों को व्यक्त करेंगे। माननीय संसदीय कार्य मंत्री सबसे पहले अपनी बात प्रारम्भ करेंगे। (व्यवधान) माननीय सदस्य प्लीज, I'll not allow you. आप सीनियर आदमी हैं। संसदीय मंत्री जी।

श्री शान्ती कुमार धारीवाल (स्वायत्त शासन, नगरीय विकास एवं आवासन मंत्री): माननीय अध्यक्ष महोदय, सदन के लिये, न केवल सदन के लिये बल्कि पूरे प्रदेश की जनता के लिये और न केवल प्रदेश की जनता के लिये बल्कि पूरे देश की जनता के लिये यह ऐतिहासिक क्षण है। राजनीतिक

(श्री शान्ती कुमार धारीवाल)

दलों के लिये तो खास तौर पर यह परीक्षा का समय है। जब चुनाव हुए तो एक तरफ मतदाताओं के सामने सादगी से भरा हुआ सहकार और सद्भाव से युक्त गांधीवादी चेहरा था और दूसरी तरफ, अध्यक्ष महोदय, आपका ध्यान चाहूंगा कि दूसरी तरफ अहंकार ही अहंकार था। राजस्थान की जनता के लिये राजस्थान की सरकार पहले दिन से गरीबों के कल्याण के लिये तहेदिल से काम कर रही है। बीजेपी की सरकार किसानों पर करोड़ों रुपये का कर्जा छोड़ कर चली गई थी, लेकिन लाखों किसानों को अगर राहत दी तो गहलोत की सरकार ने दी और उनका कर्जा माफ किया। अध्यक्ष महोदय, कोरोना को नियंत्रण में रखने के लिये विश्व में राजस्थान ने मिसाल कायम की। वर्ल्ड हैल्थ आर्गेनाइजेशन ने, देश के माननीय प्रधान मंत्री ने, किस-किसने यहां की भरपूर प्रशंसा नहीं की, सबने यहां के कोरोना के प्रबंधन की प्रशंसा की है। इतिहास में पहली बार, इतिहास में पहली बार किसी मुख्य मंत्री ने अगर, प्रदेश की जनता को यह वादा किया हो कि कोई भूखा नहीं सोयेगा, यह वादा निरंतर आज भी पूरा किया जा रहा है। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष: I'll name you. मदन दिलावर जी, आप सीनियर मैम्बर हैं। I'll not allow you. आपको सदन की कार्यवाही नहीं करनी है तो कोई चिंता नहीं है but I'll not allow you. आप सीनियर आदमी हैं, क्या एग्जाम्पल सैट करना चाहते हैं? यू ट्यूब पर लाइव जा रहा है। आप पार्टी के पदाधिकारी भी हैं, क्या एग्जाम्पल सैट करना चाहते हैं? माननीय सदस्य, बैठे-बैठे नहीं बोलेंगे।

श्री शान्ती कुमार धारीवाल (स्वायत्त शासन, नगरीय विकास एवं आवासन मंत्री): माननीय अध्यक्ष महोदय, राजस्थान सरकार का कोई भी ऐसा विभाग नहीं है जिसने गरीबों को, किसानों को, मजदूरों को, छात्र-छात्राओं को, व्यवसायियों को, रीयल एस्टेट के कारोबारियों को तथा अन्य सभी वर्गों को राहत पहुंचाने के लिये नियम और कानून न बदले हों। कोरोना काल में बेरोजगार हुए 55 से 60 लाख बेरोजगारों को रोजगार दिया गया। ओबीसी के लिये केवल एक शर्त रखी 8 लाख रुपये की इनकम, बाकी सब शर्तें हटा दी गईं। अध्यक्ष महोदय, लेकिन हमें इस बात का अफसोस है कि केन्द्र सरकार ने वह बदलाव नहीं किया। सिर्फ इसलिए नहीं किया कि कहीं अशोक गहलोत का दर्जा ऊंचा न हो जाए। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष: माननीय सदस्य, प्लीज।

श्री शान्ती कुमार धारीवाल (स्वायत्त शासन, नगरीय विकास एवं आवासन मंत्री): केन्द्र के इशारे पर अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, गोवा, मेघालय, कर्नाटक, मध्यप्रदेश में संवैधानिक तरीकों से चुनी हुई सरकारों को जोड़तोड़ की राजनीति और खरीद-फरोख्त करके धन और सत्ता के बल पर उनको गिराया गया। बीजेपी का मूल मंत्र है ''अंबानी और अडानी को चंदा, खरीद-फरोख्त का गोरखधंधा।'' प्रजातांत्रिक तरीके से चुनी हुई सरकारों को धन, बल और सत्ता के बल से उखाड़ फैंको। (व्यवधान)

श्री मदन दिलावर (रामगंज मण्डी): कितने-कितने करोड़ दिये थे बसपा के लोगों को? (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष: माननीय सदस्य, आप बैठें प्लीज, आप नीचे बैठें प्लीज। I am giving you a final warning, otherwise I'll name you or will wind up the debate. I'll not allow it. Please don't set a wrong example...(व्यवधान) प्लीज माननीय सदस्य, बैठे-बैठे नहीं बोलेंगे। माननीय सदस्य, माननीय सदस्य, बैठे-बैठे नहीं बोलेंगे otherwise I'll wind up this debate.

श्री शान्ती कुमार धारीवाल (स्वायत्त शासन, नगरीय विकास एवं आवासन मंत्री): प्रजातांत्रिक तरीकों से चुनी हुई सरकारों को धन और सत्ता के बल पर गिराने की कोशिशें की गईं। अंबानी को खरबों रुपये की आईपीसीएल थोड़े-से करोड़ रुपयों में बेच दी गई। उदयपुर की हिन्दुस्तान जिंक की लाखों करोड़ों रुपये की सम्पत्ति सिर्फ 400 करोड़ रुपये में बेच दी गई और यही नहीं जो लक्ष्मी विलास होटल उदयपुर में था, उसके साथ जो सैकड़ों एकड़ जमीन थी, सिर्फ 60 करोड़ रुपये में बेच दी गई। अध्यक्ष महोदय, और अब खेतड़ी के कापर प्रोजेक्ट को भी बेचने की तैयारी की जा रही है। अंबानी से ले लो, अडानी से ले लो, लेकिन जनता की सम्पत्ति को तो मत बेचो। यह बतायें कि दीनदयाल उपाध्याय पर, दीनदयाल उपाध्याय के मार्ग पर बीजेपी ने अपना जो आलीशान दफ्तर बनाया, उसमें से 500 करोड़ रुपया कैसे निकला? कहां गया? जनता सब हिसाब पूछना चाहती है कि वह 500 करोड़ रुपया किसके पास गया। राजस्थान में खरीद-फरोख्त के लिए, 500 करोड़ का जनता एक-एक पैसे का हिसाब मांगेगी। आज नहीं मांगेगी, कल नहीं मांगेगी, कभी तो मांगेगी और आपको देना पड़ेगा। आदरणीय पूनियां साहब, आदरणीय राठौड़ साहब, आपस में झगड़ा मत करना वरना भांडा फूट जाएगा। (व्यवधान)

श्री गुलाब चन्द कटारिया (नेता, प्रतिपक्ष): अध्यक्ष महोदय, मैं प्रार्थना करना चाहता हूं। इस समय जो घटनाक्रम हुआ, जिसके कारण से आप विश्वास मत लेकर आ रहे हैं। आप यदि पुराना सारा इतिहास खोलेंगे तो मैं सोचता हूं कि न तो आप विषय पर पहुंच पाएंगे। हमें कोई एतराज नहीं है, आप अपनी उपलब्धियां बताएं लेकिन इन फालतू बातों को उखाड़ कर आप अपने भाषण को नीरस कर रहे हैं।

श्री शान्ती कुमार धारीवाल (स्वायत्त शासन, नगरीय विकास एवं आवासन मंत्री): कटारिया साहब, ये बातें आपके लिये फालतू हो सकती हैं लेकिन आज जनता में चर्चा का सबसे ज्यादा विषय यही है। अमित शाह हिसाब मांगकर रहेगा, छोड़ेगा नहीं। इतिहास गवाह है महाराज। अध्यक्ष महोदय, इतिहास गवाह है।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (चूरू): देश के गृह मंत्री जी का नाम इस तरह से सदन में लेना, यह उचित नहीं है। मेरी मांग है कि इसे एक्सपंज कराइये। माननीय मंत्री जी, हम आपकी बातें शांति से सुनने के लिए तैयार हैं, पर आप जिस तरह से नाम ले रहे हैं। पहले हमारे प्रदेश अध्यक्ष जी और मेरा नाम ले लिया और अब गृह मंत्री जी का नाम ले रहे हैं, यह अच्छी परम्परा नहीं है। अध्यक्ष महोदय, आप आसन पर विराजे हैं।

श्री अध्यक्ष: माननीय मंत्री जी।

श्री शान्ती कुमार धारीवाल (स्वायत्त शासन, नगरीय विकास एवं आवासन मंत्री): बात बहुत साफ है, पैसा दिया है तो उसका हिसाब तो मांगा ही जाएगा। अब आगे बढ़ते हैं। (व्यवधान) अच्छा इसको बदल दूं। बदल देता हूं।

अध्यक्ष महोदय, इतिहास गवाह है कि अकबर ने पूरे भारत पर साम्राज्य स्थापित करने की मुहिम चलायी, वह पानीपत, ग्वालियर, चुनार, मालवा, गोंडावन, सूरत, गुजरात, अहमदाबाद, पूरे भारत के साथ-साथ बिहार और बंगाल को भी जीतता हुआ और अपने साम्राज्य का विस्तार करता हुआ 1576 में जब मेवाड़ पहुंचा तो महाराणा प्रताप ने उसको नाकों चने चबवा दिये। इसी तरह से केन्द्र की सरकार षड्यंत्र रचकर गोवा, कर्नाटक, मध्य प्रदेश में कांग्रेस की सरकारों को गिराते हुए जब राजस्थान पहुंची तो यहां के रणबांकुरों ने और वीर सपूतों ने अशोक गहलोत के नेतृत्व में छठी का दूध याद दिला दिया। ईडी, आईटी सबका दुरुपयोग किया। क्या नतीजा निकला?

(श्री शान्ती कुमार धारीवाल)

मेरे विपक्ष के माननीय साथियों! सुनें, आई.टी. लाओ, ईडी लाओ, सीबीआई लाओ, सीआरपीएफ लाओ, इससे भी कोई बड़ी एजेंसी हो तो उसको भी लाओ। सिर्फ फौज ही नहीं लाये, फौज को भी बुला लेते। कोई डरने वाला नहीं, चुन-चुनकर संवैधानिक संस्थाओं को जिस तरह से तहस-नहस किया गया और धज्जियां उड़ायी गयीं और मैं आज दावे से कहता हूं कि अदालत के फैसले पर भी अब जनता को विश्वास कम होता जा रहा है। बीजेपी की तिकड़ी मुख्य मंत्री बनने का सपना देख रही है। संजीवनी बूटी खाकर इथोपिया में हजारों एकड़ जमीन खरीदकर नये-नये नेता मुख्य मंत्री बनने का सपना देख रहे हैं, मैडम। यह भारतीय लोकतंत्र के लिये कितना शर्मनाक है कि विधायकों को करोड़ों रुपयों का प्रलोभन देकर दल-बदल करवाने की कोशिशें की गयीं। अध्यक्ष महोदय, आपकी इजाजत हो तो मैं चार लाइनें पढ़कर सुनाता हूं।

"यमुना जी के घाट पर, करते साधक बात,
चुनी हुई सरकारों पर मोदी जी करते रोज घात,
खामोश यमुना घाट है, गुमसुम है गुजरात,
खरीद-फरोख्त की दिल्ली में करते हुए बात।"

अध्यक्ष महोदय, इस देश का किसान आंदोलित है। धरना-प्रदर्शन कर रहा है। जगह-जगह लाठियां खा रहा है, कई जगह पर गोलियों का सामना करना पड़ रहा है। उसकी सिर्फ एक मांग थी कि मिनिमम सपोर्ट प्राइस को बढ़ा दो लेकिन उसके बजाय क्या हुआ? यह हुआ कि छोटा भाई और मोटा भाई ने विधायकों के लिए मिनिमम सपोर्ट प्राइस बढ़ा दिये। विधायकों ने जब देखा कि हमारी मिनिमम सपोर्ट प्राइस कितनी है तो विधायकों ने हाथ जोड़ लिये कि महाराज इतनी बड़ी रकम हम घर पर कहां रखेंगे? पत्नी से पूछा कि क्या करें तो कहा कि घर में इतनी रकम आयेगी तो बच्चे बिगड़ जाएंगे। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष: माननीय सदस्य, बैठे-बैठे नहीं बोलें।

श्री शान्ती कुमार धारीवाल (स्वायत्त शासन, नगरीय विकास एवं आवासन मंत्री): अध्यक्ष महोदय, राजस्थान में न किसी शाह की चली और न ही किसी तानाशाह की चली है। अंग्रेजी में एक शब्द चलता है Modus Operandi लेकिन लोगों ने अब एक नया शब्द बोलना चालू कर दिया Modi’s Operandi.

(श्री शान्ती कुमार धारीवाल)

अध्यक्ष महोदय, मैं बादशाह अकबर का फिर से नाम लेना चाहूंगा। बादशाह अकबर ने मनुष्य की स्वाभाविक भाषा को जानना चाहा। एक छोटा-सा किस्सा है, साहब टाइम ज्यादा नहीं लूंगा। मनुष्य की स्वाभाविक भाषा क्या है, इसको जानने की अकबर में उत्सुकता थी तो उसने घने जंगल में एक गूंगा महल बनाया, dumb महल बनवाया। उस गूंगे महल में एक नव दम्पत्ति को रखा। जो पत्नी थी, वह तीन-चार महीने की गर्भवती थी। अकबर ने उनको ये इंस्ट्रक्शन दिये कि नि:शब्द वातावरण में तुम्हें एक भी शब्द बोलने का अधिकार नहीं होगा। तुम आपस में भी बात नहीं कर सकते, बिलकुल गूंगे की तरह बिहेव करोगे। कालांतर में गूंगे महल में एक बच्चे का जन्म हुआ। वह बच्चा नि:शब्द वातावरण में पला। उसने किसी की आवाज ही नहीं सुनी। अकबर वहां पर तीन-चार साल बाद परिणाम जानने के लिये पहुंचा। जब वह पहुंचा तो अचंभित हो गया। अचंभित हो गया और उसने देखा कि ये बालक सियार की और पक्षियों की बोली बोल रहा है। सियार की और पक्षियों की बोली बोल रहा है अर्थात् जिस व्यक्ति की जैसी संगत होगी, वैसी ही उसकी रंगत होगी। भ्रष्टों के साथ रहकर व्यक्ति स्वयं भ्रष्ट हो जाएगा। हमारी एकजुटता को बाड़ाबंदी बता रहे हैं तो जो गुजरात आपने भेजे थे, वे क्या रासलीला रचाने के लिए भेजे थे? डांडिया खेलने भेजे थे? वो कारण बताओ कि उनमें से पांच आदमी वापस अहमदाबाद प्लेन उतरते ही पांच आदमी वापस राजस्थान में क्यों आ गए? कारण बताओ? बार-बार बयान दे रहे हैं हमारे आदरणीय पूनियां साहब और हमारे मित्र और हमारे मेहरबान राठौड़ साहब कि बाड़ा खोल दो और फिर देखो कि कितने पंछी उड़ाकर हम ले जाएंगे। कहा आपने? मना नहीं कर रहे हैं ये। अब वक्त ने बता दिया...

श्री अध्यक्ष: माननीय मंत्री जी, प्लीज वाइंड-अप।

श्री शान्ती कुमार धारीवाल (स्वायत्त शासन, नगरीय विकास एवं आवासन मंत्री): जी साहब, पांच मिनट लूंगा। पांच मिनट में खतम कर दूंगा। वक्त ने बता दिया कि तुम्हारे पंछी तो कितने उड़े, असल में तो तुम्हारे अभियान की जो कमर टूटी, ये उन्हीं वजह से टूटी और आपरेशन लोटस हमने फेल नहीं किया, तुमने ही अपने आप फेल कर दिया। ये वे लोग हैं जो आधी रात को राष्ट्रपति को जगाते हैं, महाराष्ट्र में सरकार बनानी है, दस्तखत करो।

(श्री शान्ती कुमार धारीवाल)

राष्ट्रपति शासन हटाओ। जैसे कोई रबर स्टाम्प हो। कोई कैबिनेट मीटिंग नहीं, कोई कैबिनेट का फैसला नहीं। सुबह फडणवीस को मुख्य मंत्री बना दिया।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (चूरू): एक्सपंज कराओ, अध्यक्ष महोदय। ये क्या हो रहा है सदन में? (व्यवधान) आपके नियम बने हुए हैं।

श्री शान्ती कुमार धारीवाल (स्वायत्त शासन, नगरीय विकास एवं आवासन मंत्री): क्या गलत है? (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष: माननीय सदस्य, बैठे-बैठे नहीं बोलेंगे। बोलिए।

श्री शान्ती कुमार धारीवाल (स्वायत्त शासन, नगरीय विकास एवं आवासन मंत्री): मुख्य मंत्री बना दिया। ये षड्यंत्र रचकर कानून और संविधान को ताक में रखकर मोदी जी ने काम करने का अपना तरीका बता दिया। जिस दिन फडणवीस की सरकार गिरी उस दिन छोटे भाई और मोटे भाई को इस्तीफा दे देना चाहिए था, पर उनमें नैतिकता कहां थी? क्या उस दिन संविधान की हत्या नहीं हुई थी। मैं धन्यवाद देना चाहूंगा, धन्यवाद देना चाहूंगा पूर्व विधान सभा अध्यक्ष श्री कैलाश जी मेघवाल को जिन्होंने खरीद-फरोख्त करने की, होर्स ट्रेडिंग करने वालों की डंके की चोट निंदा की। उन्होंने कहा कि राजनीतिक दलों में दुश्मनी और एक-दूसरे से बदला लेने की स्थिति को ठीक नहीं कहा जा सकता। अब आपके कौनसे नंबर कम होने वाले हैं। विधान सभा उप-चुनाव हुए नगरीय निकायों के चुनाव हुए। जनता ने बीजेपी को हराकर कांग्रेस में विश्वास व्यक्त किया और क्या तरीका होता है विश्वास जनता का लेने का? इसके अलावा कोई तरीका है?

अध्यक्ष महोदय, कृष्ण ने अर्जुन से कहा कि तुम यात्रा पर जा रहे हो, रास्ता खतरनाक है। तुम पर हमला हो सकता है। अर्जुन को लगा, नहीं ऐसा नहीं, मुझे किसी की मदद की आवश्यकता नहीं है क्योंकि मेरे पास गांडीव धनुष है। कृष्ण उनके आत्मविश्वास को देखकर मुस्कुरा दिए। उन्होंने अपने धनुष का इस्तेमाल किया। अर्जुन ने अपने धनुष का इस्तेमाल किया, लेकिन वह असफल रहे। अंततः अर्जुन ये समझ नहीं पाए कि वे असफल क्यों रहे? कृष्ण बोले कि अर्जुन, देखा पहला बाण जो तुमने छोड़ा तो तुम्हारे दुश्मन समझ गए थे कि तुम पहले जैसे कुशल योद्धा नहीं रहे। तुमने अब लगातार अभ्यास करना छोड़ दिया। अगर तुम्हारा पहला बाण अच्छा होता तो वे समझते कि तुम अजेय हो और वे पीछे हट जाते। दुर्भाग्य से तुमने दोयम दर्जे

(श्री शान्ती कुमार धारीवाल)

के लोगों की सलाह ली। कृष्ण ने ऐसे शब्द कहे जो आज भी प्रासंगिक हैं। आज भी प्रासंगिक हैं। बीजेपी के मठाधीशों ने राजस्थान में यही किया। दोयम दर्जे के लोगों को जिम्मेदारियां दे दीं। नतीजा देख लीजिए क्या हुआ? अंत में, अब मैं खतम कर रहा हूं साहब। थोड़ासा टाइम और दें तो कुछ और बोलूं।

श्री अध्यक्ष: नहीं, माननीय प्लीज। माननीय मंत्री जी समय पर कीजिए।

श्री शान्ती कुमार धारीवाल (स्वायत्त शासन, नगरीय विकास एवं आवासन मंत्री): आप मेरे साथ ही ऐसा क्यों करते हैं?

श्री अध्यक्ष: आप मेरे मित्र हो।

श्री शान्ती कुमार धारीवाल (स्वायत्त शासन, नगरीय विकास एवं आवासन मंत्री): जो आपकी मर्जी। आपका हुक्म और आपकी आज्ञा को मानने के लिए मैं बाध्य हूं। अंत में अध्यक्ष महोदय, मैं निवेदन करना चाहता हूं कि सत्ता लोलुप, दल-बदल के एक्सपर्ट, भ्रष्ट कर्तव्यों में माहिर थैलीशाह छोटा भाई, मोटा भाई जो केन्द्र में सत्ता में बैठे हैं, उनके इशारों पर ओछी राजनीति मत करो। ओछी राजनीति इस प्रदेश में कभी होती नहीं आई है। सबके मुंह पर ठोकर मार कर राजस्थान की जनता ने अशोक गहलोत के नेतृत्व में विश्वास जाग्रत किया है और अत्यधिक विश्वास के साथ अशोक गहलोत साहब फेयरमाउंट में रात के दो बजे जब इनके इर्द-गिर्द चालीस-पचास विधायक बैठे हुए थे, तरह-तरह की बातें चल रही थीं। उसके बाद में गीत-संगीत भी चला। मैं इनके बराबर में बैठा हुआ था तो मैंने इनको गुनगुनाते हुए देखा, ये गा रहे थे, मैं हर फिक्र को धुएं में उड़ाता चला गया, मैं जिन्दगी का साथ निभाता चला गया। जब लोगों को पता लगा कि ये व्यक्ति कितना कांफिडेंट है तो लोगों में जोश जाग्रत हुआ और जाग्रत होने पर नतीजा क्या निकला? हम जितने भी थे एक पंछी को तुम नहीं उड़ा पाए और आज भारी बहुमत के साथ अशोक गहलोत गर्व से सीना तानकर खड़े हुए हैं। धन्यवाद।

श्री अध्यक्ष: श्री राजेन्द्र राठौड़।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (चूरू): अध्यक्ष महोदय, मैं सबसे पहले तो आपको धन्यवाद देना चाहूंगा, महामहिम राज्यपाल के पास जो संवैधानिक अधिकार थे आर्टिकल 174 के अंदर, हमारे नियम और प्रक्रियाओं के नियम 3(2) के तहत आपने इस सदन को आहूत किया। इस सदन को आहूत करने के प्रपंच को

(श्री राजेन्द्र राठौड़)

राजस्थान की अवाम के साढ़े सात करोड़ लोगों ने बड़े अचरज से देखा। मैं जनता की कृपा से इस सदन में बहुत बार आया हूं। परन्तु आज इस सदन के अंदर मेरे सामने बैठे लोगों में जो मैं उत्तेजना देख रहा हूं, जो एक-दूसरे के प्रति संदेह देख रहा हूं, एक-दूसरे के प्रति तिरस्कार देख रहा हूं, एक-दूसरे के प्रति घृणा देख रहा हूं, मैं समझता हूं इस प्रकार का दृश्य कभी देखा नहीं।

अध्यक्ष महोदय, मैं बधाई देना चाहूंगा हमारे सत्तारूढ़ दल के सभी माननीय सदस्यों को जयपुर-जैसलमेर, जैसलमेर से फिर जयपुर, आखिर 34 दिन बाद पांच सितारा का बाड़ा तोड़कर इस सर्वोच्च सदन में आए।

अध्यक्ष महोदय, मैं निवेदन करना चाहूंगा, बड़ी बेचैनी भी थी। कृष्ण जन्माष्टमी चली गई, रक्षा बंधन, ईद का त्यौहार चला गया। संगीनों के पहरे, जैमर लगे हुए होटल, बातचीत इंटरकोम पर नहीं कर पाओ। स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर आपकी स्वतंत्रता के लिए मैं आपको बधाई देना चाहता हूं।

अध्यक्ष महोदय, संसदीय कार्य मंत्री मेरे मित्र भी हैं, मैं इनका 24 मिनट का भाषण सुन रहा था, अपने भाषण में इन्होंने न्यायालय को नहीं छोड़ा, इन्होंने महाभारत के प्रसंग बता दिए, इन्होंने महामहिम राष्ट्रपति को भी नहीं छोड़ा, कई तरीके से देश के गृह मंत्री, प्रधान मंत्री जी का नाम ले लिया। अध्यक्ष महोदय, मुझे फिराक जलालपुरी का एक शेर याद आ रहा है। शान्ती जी, मैं आपसे ही कहता हूं, तू इधर-उधर की बात न कर, ये बता कि काफिला क्यों लुटा, मुझे रहबरों से गिला नहीं, तेरी रहबरी का सवाल है ...(व्यवधान) अध्यक्ष महोदय, काफिला लुटा, कांग्रेस के अंतर्विरोध से लुटा। सरकार बाड़े में चली गई, 34 दिन तक सरकार गायब रह गई। अध्यक्ष महोदय, मैं निवेदन करना चाहूंगा ...(व्यवधान)

श्री शान्ती कुमार धारीवाल (स्वायत्त शासन, नगरीय विकास एवं आवासन मंत्री): करेक्ट बोलो। आप करेक्ट बोलो (व्यवधान)

श्री मदन दिलावर (रामगंज मण्डी): अध्यक्ष महोदय, यह बीच में खड़े होकर ...(व्यवधान)

श्री शान्ती कुमार धारीवाल (स्वायत्त शासन, नगरीय विकास एवं आवासन मंत्री): अध्यक्ष महोदय, मैं और कोई बात नहीं कह रहा ...(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष: माननीय मंत्री जी ...(व्यवधान)

श्री शान्ती कुमार धारीवाल (स्वायत्त शासन, नगरीय विकास एवं आवासन मंत्री): मैं कह रहा हूं कि इन्होंने जो शेर बोला है वह थोड़ा-सा गलत बोला है ...(व्यवधान) काफिला नहीं, कारवां क्यों लुटा।

श्री अध्यक्ष: माननीय सदस्य ...(व्यवधान) आप हाउस चलाइये, मैं बैठा हूं, चलाइये हाउस ...(व्यवधान) मदन जी, आखिरी बार बोल रहा हूं मैं, I'll not tolerate it. I'll name you and last time I'm telling you. कटारिया जी, मैं फिर निवेदन कर रहा हूं, सीनियर हैं, मुझे .अच्छा नहीं लगता, सदन नियमों से चलेगा ...(व्यवधान) मैं नियमों से चलाऊंगा। मैं यह अलाउ नहीं करूंगा।

श्री गुलाब चन्द कटारिया (नेता, प्रतिपक्ष): अध्यक्ष महोदय, शान्ती धारीवाल जी को इस तरह से बीच में खड़े होकर, अपनी कविता को आगे बढ़ाने का, यह इनको अधिकार है क्या?

श्री अध्यक्ष: मैंने रोका नहीं? Am I not intervening into it? मैंने अपना काम नहीं किया? मेरे मित्र हैं यह, तब भी मैंने खड़े होकर इनको रोका है, पर जब मैं उनको रोकता हूं तो मैं यह भी अलाउ नहीं करूंगा। मैं आपसे अपेक्षा करूंगा कि आपकी पार्टी का सीनियर विधायक यदि इस तरह से खड़े होकर करेगा तो सदन में चर्चा नहीं होगी। मैं सभी माननीय सदस्यों से भी निवेदन करूंगा, please don't intervene. जब तक कोई सदस्य यील्ड नहीं करे, प्लीज आप खड़े नहीं हों।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (चूरू): अध्यक्ष महोदय, धन्यवाद। अध्यक्ष महोदय, पन्द्रहवीं विधान सभा का यह पांचवां सत्र संसदीय इतिहास में कुछ नई परम्परा डाल गया। हिन्दुस्तान के संसदीय इतिहास में यह पहली बार हुआ, सदन के नेता अपने 84 विधायकों के साथ, आर्टिकल 153 में हमारे यहां संवैधानिक प्रमुख है महामहिम राज्यपाल, जिस क्षेत्र में गृह मंत्री के रूप में खुद धारा 144 लगाते हैं, उसमें पहुंचते हैं। वैश्विक महामारी का आपदा प्रबंधन 2020 है, आपने चार लाख से ज्यादा लोगों का चालान कर दिया, शादी-ब्याह में 50 से ज्यादा इकट्ठा हो गए। आप राजभवन में जाते हैं, संवैधानिक प्रमुख को कहते हैं कि 48 घंटे के अंदर-अंदर सत्र आहूत करने का आदेश दो वरना राजस्थान की जनता राज्यपाल के राजभवन को घेर लेगी, मैं समझता हूं कि मैंने ऐसा व्यवहार किसी मुख्य मंत्री जी का किसी संवैधानिक प्रमुख से नहीं देखा।

(श्री राजेन्द्र राठौड़)

अध्यक्ष महोदय, माननीय महामहिम राज्यपाल ने जो पत्र लिखा उसकी दो लाइन उद्धृत करना चाहूंगा। उन्होंने कहा, प्रिय अशोक गहलोत जी, आज आपका प्रेस वक्तव्य मीडिया में देखा, आपने संवैधानिक अनुरोध और लिए जाने वाले संवैधानिक निर्णयों, दोनों को राजनीतिक रंग दे दिया। मुझे संविधान प्रदत्त प्रावधानों की जांच करते हुए संविधान सम्मत निर्णय लेना था, आपने सत्र बुलाने के लिए अनुशंसा 23 तारीख को की, मैं चर्चा कर पाऊं इससे पहले ही आपने सार्वजनिक कर दिया। आप आज राजभवन का घेराव करने की बात कर रहे हैं। मुझे इतना निवेदन कर दो कि राज्यपाल अपनी सुरक्षा के लिए किससे बात करे। अध्यक्ष महोदय, मैं समझता हूं कि महामहिम के साथ इस प्रकार का व्यवहार, आखिर में मैं धन्यवाद देना चाहूंगा, आपको भी धन्यवाद देना चाहूंगा, एक बार यह सिद्ध हो गया कि संविधान के सामने न तो धौंस चलेगी, न संविधान को डराया जा सकता है। 21 दिन बाद आर्टिकल 174 और रूल्स 3(2) के तहत आपने विधान सभा को आहूत किया। मैं निवेदन करना चाहूंगा, डेढ़ महीना हो गया राजस्थान का अवाम इस हाई प्रोफाइल पोलिटिकल ड्रामे को देख रहा है। इसके निर्माता कौन हैं, निर्देशक कौन हैं, कौन इसके किरदार हैं, कौन अभिनेता हैं, कौन इसके विलेन हैं, अध्यक्ष महोदय, सारे के सारे एक ही कुनबे के हैं, परन्तु सत्ता को केन्द्रित करने के खूनी संघर्ष को राजस्थान के लोगों ने भुगता, वह देखिए।

अध्यक्ष महोदय, आखिर में मैं बधाई देना चाहूंगा, पटाक्षेप हुआ, कल कुछ टूटे दिल मिले परन्तु मुख्य मंत्री जी, आप इसमें परिवार के मुखिया के रूप में कामयाब नहीं हुए। शांति का फरमान आलाकमान ने जारी किया। फिर भी जैसलमेर से चले, फेयरमोंट से, तरकश से जो तीर चले, मैं समझता हूं कि तूफान से पहले की यह शांति राजस्थान को कहां ले जाएगी।

अध्यक्ष महोदय, आज कोरोना की बात चल रही है, यह राजस्थान में 50 हजार से ज्यादा अपनी उपस्थिति दिखा रहा है। मृत्यु का आंकड़ा 900 के पार पहुंच रहा है। राजस्थान में ऐसे 15 हजार संक्रमित रोगी हैं जिनका सोर्स मालूम नहीं है। राजस्थान कम्युनिटी स्प्रैड की तरफ बढ़ रहा है। टिड्डी का प्रकोप है। पिछले साल खुद मुख्य मंत्री जी ने कहा 16 ज़िलों के अंदर 1100 करोड़ रुपये की फसल टिड्डी लील गई। अब 33 ज़िलों में से 32 ज़िले, मुख्य मंत्री जी आपने खुद ने कहा, आज वहां फाका हो गया, किसान बर्बाद हो रहा है। टिड्डी की इस खौफनाक तकलीफ में आपसे किसान पूछ रहा है। आपने

(श्री राजेन्द्र राठौड़)

19 दिसम्बर, 2018 को मुख्य सचिव जी से एक आदेश जारी करवाया। राष्ट्रीयकृत बैंक, अनुसूचित बैंक, क्षेत्रीय बैंक, ग्रामीण बैंक, इन सभी में जो आर्थिक रूप से संकटग्रस्त हैं, अपना ऋण नहीं चुका सका है, 30 नवम्बर, 2018 तक का बकाया ऋण माफ करोगे। अध्यक्ष महोदय, 22 लाख किसान चक्करघिन्नी हैं। सहकारी क्षेत्र में केसीसी से जुड़े हुए वह किसान जो 32 लाख हैं, उनको व्यक्तिगत सुरक्षा बीमा योजना, जीवन सुरक्षा बीमा योजना जो आदरणीय वसुन्धरा जी ने प्रारम्भ की, 10 लाख तक का सुरक्षा चक्र दिया, आपने उसको भी बंद कर दिया, क्योंकि आप चहेती कम्पनी को नहीं दे पाए। अभी हाल क्या है। कोरोना ने आम उपभोक्ता को तोड़कर रख दिया। आपने फरवरी में बिजली के दाम 12 परसेंट बढ़ाए, अब आपने फ्यूल चार्ज के नाम पर फिर 28 पैसे बढ़ा दिए, 58 पैसे फ्यूल चार्ज के ले रहे हैं। तीन महीने के स्थगित बिल आज सामने आए हैं, आज हालत क्या है।

आपने बेरोज़गारों को कहा कि 3500 रुपये प्रति महीना देंगे, आज हालत क्या है। मुख्य मंत्री जी, सेन्ट्रल फार मानिटरिंग इंडिया इकोनोमिक, जुलाई की बात है। इन्होंने जुलाई में कहा कि 13.60 परसेंट से बेरोजगारी बढ़कर 15.2 हो गई।

अध्यक्ष महोदय, कानून की बात तो मैं क्या करूं, अजमेर की पोश कालोनी में हत्या हो जाए, दौसा में मूक बधिर बच्ची की इज्जत लूट ली जाए, झालावाड़ में राजेश मीणा को पुलिस कस्टडी में मार दिया जाए, पचपदरा में आरटीआई कार्यकर्ता जगदीश को पुलिस हिरासत में मार दिया जाए, देचू में 11 पाक विस्थापित पुलिस की प्रताड़ना से आत्महत्या कर ले।

अध्यक्ष महोदय, एक क्राइम ब्यूरो रिपोर्ट 31 मई की जारी हुई है। मुख्य मंत्री जी, मैं उसके कुछ आंकड़े प्रस्तुत करना चाहता हूं। इन पांच महीनों में आपके शासन काल में 69,445 गंभीर अपराध दर्ज हुए हैं, उसमें से 35,524 मुलजिम पुलिस की पकड़ से बाहर हैं, 594 हत्याओं में से 443 हत्याएं पुलिस की पकड़ से बाहर हैं, 1807 बलात्कार हो गए, 1020 के अंदर अभी जांच विचाराधीन है। इसी प्रकार अगर आगे बात करूंगा तो लंबा समय लगेगा, पर, अध्यक्ष महोदय, कानून व्यवस्था की धज्जियां इसलिए उडीं, पहली बार राजस्थान में डेढ़ दर्जन आईपीएस और आरपीएस अधिकारी, पक्ष और प्रतिपक्ष के विधायकों को सम्पर्क कर रहे थे, अपना प्रबंधकीय कौशल दिखा रहे थे, दो कुनबों में टूटी सरकार आज खरीद फरोख्त का आरोप भारतीय

(श्री राजेन्द्र राठौड़)

जनता पार्टी पर लगा रही है। इसमें कोई पूछे, इस कारवां को लूटने के लिए जिम्मेदार कौन है? अगस्त क्रांति का महीना चल रहा हैं, इसमें एक दूसरे को इन्होंने जिस तरह की उपमाएं दीं, नाकारा, निकम्मा, बेशर्म, तिकड़मबाज। मैं समझता हूं कि आज ...(व्यवधान) अध्यक्ष महोदय, पर्यटन विभाग का एक स्लोगन है। स्लोगन है 'जाने क्या दिख जाये' राजस्थान का जाने क्या दिख जाये और सरकार का स्लोगन है, मुख्य मंत्रीजी, जाने क्या हो जाये। कोई मालूम नहीं, जाने क्या हो जाये। आज प्रदेश कांग्रेस में जिनका नेतृत्व रहा साढ़े छह साल तक, वे अध्यक्ष, टोंक से आने वाले माननीय सदस्य, यूथ कांग्रेस के निर्वाचित अध्यक्ष लाडनूं से आने वाले माननीय सदस्य, सेवादल को चलाने वाले मसूदा से आने वाले माननीय सदस्य, आज ये सब के सब लोग एक तरह से तिरस्कार की भावना से अलग बैठे हैं। मैं समझता हूं, यह जो होटल से संगीनों के पहरों में आप इनको लेकर आये हैं, निश्चित तौर पर इसका नतीजा आने वाले समय में होगा।

मैं मेरे हुजूर की तो क्या बात करूं पौने दो साल में हर सप्ताह आप आलाकमान के पास गये। उस समय इस अंतर्विरोध का अगर किसी ने खामियाजा भुगता तो राजस्थान के लोगों ने भुगता। यह 0.5 फीसदी से जो सरकार का गठन हुआ, इसके जन्म में ही अन्तर्विरोध था। सत्ता किसको सौंपी जाये, सबसे पहले विवाद यहां हुआ। सत्ता उन लोगों को सौंपी जाये, जो कभी सदन में नहीं दिखे, जो कभी विधान सभा और सारी सभाओं में नहीं दिखे, जिन्होंने इस राजस्थान से सरोकार नहीं रखा या उनको सौंपी जाये, जिनके नेतृत्व में इस कांग्रेस ने एक करवट ली थी। खैर आलाकमान की मर्जी है।

अध्यक्ष महोदय, आपने महाभारत की बात कही। मैं महाभारत पर रामधारीसिंह दिनकर की कृष्ण चेतावनी, उनकी लिखी तीन लाइनें पढ़कर सुनाना चाहता हूं। इसीलिये सुनाना चाहता हूं कि शासन का केन्द्रीकरण करने का और शासन को विकेन्द्रीकृत नहीं करके जिनका हक था, हक नहीं देने के कारण आज सरकार की यह हालत है। सरकार पांच सितारा होटल के बाड़ों से निकलकर आई है। मैं निवेदन करना चाहूंगा। भगवान कृष्ण जब महाभारत का युद्ध टालने के लिये कौरवों के पास पाण्डवों का संदेश लेकर जाते हैं तो वे क्या कहते हैं।

(श्री राजेन्द्र राठौड़)

'दो न्याय अगर तो आधा दो,
पर, इसमें भी यदि बाधा हो,
तो दे दो केवल पांच ग्राम,
रखो अपनी धरती तमाम।
हम वहीं खुशी से खायेंगे,
परिजन पर असि न उठायेंगे।
दुर्योधन वह भी दे न सका,
आशीष समाज की ले न सका,
उल्टे हरि को बांधने चला,
जो था असाध्य, साधने चला।
जब नाश मनुज पर छाता है,
पहले विवेक मर जाता है।'

अध्यक्ष महोदय, मैं समझता हूं कि यह जिस प्रकार की बात हुई मुख्य मंत्रीजी खुद कह दें, डेढ़ साल से मैंने मेरे सहयोगी उप मुख्य मंत्री से संवाद नहीं किया, तब तूफान तो आना ही था। इस चिंगारी का विस्फोट तो होना ही था। इसका टार्गेट किसको बनाया जाये। वैसे सावन में चिंगारी बुझती है, संसदीय कार्य मंत्रीजी, परन्तु इस बार यह जो सावन आया, इसने चिंगारी को बुझाने में बड़ा विलम्ब कर दिया। डेढ़ महीना लग गया और आपको बाड़ाबंदी में जाना पड़ा।

मैं आर्टिकल 164(2) की तरफ आपका ध्यान दिलाना चाहता हूं, माननीय अध्यक्ष महोदय, जिसमें लिखा है कि मंत्रिपरिषद का राज्य की विधान सभा के प्रति सामूहिक उत्तरदायित्व होगा। परन्तु बजट सत्र में हमने देखा कि तीन दर्जन से ज्यादा सत्ता पक्ष के माननीय सदस्य, आधा दर्जन से ज्यादा मंत्री इसी सरकार के मुख्य मंत्रीजी की कार्यशैली के खिलाफ मुखर हुए।

आज मैं समझता हूं कि जिनके हस्ताक्षर से ये सामने बैठे सब लोग टिकट लेकर के जो आज एम.एल.ए. बने, जिस व्यक्ति ने हस्ताक्षर किये, आज साढ़े छह वर्ष व्यतीत हो जाने के पश्चात् यह जो नाकारा, निकम्मा, ये साढ़े छह वर्ष तक इन भावों को क्यों दबाये रखा। मैं समझता हूं कि विधायक दल की बैठकें पांच सितारा होटल में हुईं अध्यक्ष महोदय, यह जो बात चली

(श्री राजेन्द्र राठौड़)

होर्स ट्रेडिंग की, यह एलीफेंट ट्रेडिंग करने वाली सरकार किस मुंह से होर्स ट्रेडिंग की बात कर रही है। दो बार आप पूरी ब.स.पा. को लील गये।

गहलोत साहब ने कहा कि इनकी रगड़ाई नहीं हुई। गहलोत साहब, 1980 में 29 वर्ष की उम्र में आप सांसद बने। 1984 में 33 वर्ष की उम्र में आप केन्द्रीय मंत्री बने और 1998 में 47 वर्ष की उम्र में आप मुख्य मंत्री बने। उधर पायलट साहब की बात करूं तो 27 वर्ष में सांसद बने, 2009 में 32 वर्ष में केन्द्रीय मंत्री बने और 43 वर्ष की उम्र में डिप्टी सी.एम. बने। अब यह रगड़ाई किसकी कैसे होनी चाहिए थी, उसकी बात है।

अध्यक्ष महोदय, एक बात कहना चाहता हूं। आज जो हालात देख रहे हैं, एक है, सियासत की अपनी अलग जुबां होती है। संसदीय कार्य मंत्रीजी, सियासत की अपनी अलग जुबां होती है। लिखा जो इकरार, इनकार पढ़ना। सियासत भी मोहब्बत की तरह राह बदलती है। कभी तख्त पर रहती है, कभी बाहें बदलती है। कई लोगों ने बाहें भी बदल डालीं। अध्यक्ष महोदय, मैं निवेदन करना चाहूंगा।

श्री अध्यक्ष: माननीय सदस्य, प्लीज।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (चूरू): अध्यक्ष महोदय, बस तीन मिनट, पांच मिनट में खतम कर दूंगा।

अध्यक्ष महोदय, जिस प्रकार का बेजा इस्तेमाल इस सरकार ने, जो सी.बी.आई. की बात करती है, जो ई.डी. की बात करती है, एस.ओ.जी. और ए.सी.बी. का जिस प्रकार बेजा इस्तेमाल किया और मैं समझता हूं कि राज्य के डी.जी.पी., जिनकी खुद की नियुक्ति का मामला सर्वोच्च न्यायालय में विचाराधीन है, वे जिस प्रकार टूल बने, भूतो न भविष्यति, आज विवाद कहां से चालू हुआ। मैं दो मिनट में बात कहकर खतम करता हूं कि10 जुलाई को डाक्टर जोशीजी ने एक पत्र लिखा। उस पत्र के आधार पर, सूत्र-सूचना के आधार पर एक एफ.आई.आर. 47/2020 दर्ज की गई और दो लोगों के टेलीफोन, अशोक सिंह और भरत मालानी के टेलीफोन सर्विलांस पर लिये गये। अध्यक्ष महोदय, टेलीग्राफ एक्ट, 1885 की धारा 5(2) में प्रावधान है कि टेलीफोन सर्विलांस पर कब लिया जायेगा, परन्तु सब धता बता दिया। उन टेलीफोन्स पर जो बात आई, जो समाचार पत्रों में छपी कि डिप्टी सी.एम. और

(श्री राजेन्द्र राठौड़)

सी.एम. में झगड़ा है, सरकार बदलना चाहते हैं, राज्य सभा में सरकार बदल जाती।

श्री रघु शर्मा (चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री): ये आप कहां ले जा रहे हो?

श्री सचिन पायलट (टोंक): माननीय अध्यक्षजी, मैं इंटरवीन करना चाहता हूं, क्योंकि बार-बार माननीय उप नेता महोदय, राठौड़ साहब मेरा नाम ले रहे हैं।

अध्यक्षजी, जब आपने मेरी सीट में बदलाव किया, मैं सुबह पौने ग्यारह बजे हाउस के अन्दर आया और सीट को यहां पर पाया। मैं बहुत लम्बा इंटरवेंशन नहीं करना चाहता हूं, लेकिन पहले जब मैं वहां बैठता था तो सुरक्षित था, सरकार का हिस्सा था। फिर मैंने सोचा कि अध्यक्ष महोदय ने और हमारे चीफ व्हिप साहब ने मेरी सीट यहां पर क्यों रखी है। दो मिनट मैंने सोचा और फिर देखा कि यह सरहद है। पक्ष है और विपक्ष है। सरहद पर किसको भेजा जाता है, सबसे मजबूत योद्धा को भेजा जाता है। आज इस विश्वास मत पर जो चर्चा हो रही है उसमें बहुत-सी बातें बोली गईं, बहुत-सी बातें बोली जाएंगी। समय के साथ-साथ सब बातों का खुलासा होगा।

आज मैं भाषण देने के लिये खड़ा नहीं हुआ हूं अध्यक्ष महोदय, लेकिन मैं इतना कहना चाहता हूं कि जो कुछ कहना था, सुनना था, चाहे मैं हूं, चाहे मेरा कोई साथी हो, हम लोगों ने जिस डाक्टर के पास अपने मर्ज को बताना था, वह बता दिया। इलाज कराने के बाद हम सब लोग आज सवा सौ लोग यहां सदन में खड़े हैं और सदन के अन्दर जब हम लोग आये हैं तो कहने-सुनने वाली बातों से परे हटकर आज वास्तविकता पर ध्यान देना पड़ेगा। धरातल पर जब हमने इसका संकल्प लिया, बैठकर बातें कीं, सारी बात खतम करके जब आज सदन में प्रवेश किया है तो इस सरहद पर कितनी भी गोलाबारी हो, हम सब लोग और मैं कवच और ढाल, गदा और भाला बनकर यहां पर सुरक्षित रखूंगा, सबको बताना चाहता हूं।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (चूरू): आपको बहुत-बहुत मुबारक हो। आपकी गदा, आपका कवच और इस कवच को पहनाने में जिन्होंने आपकी यह हालत की, मैं समझता हूं ...(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष: माननीय सदस्य, सीधे-सीधे, आसन की तरफ सम्बोधित करें, इधर-इधर।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (चूरू): मैं समझता हूं जिंदा कौमें पांच साल इंतजार नहीं किया करतीं, इसका परिणाम निश्चित तौर पर आयेगा।

श्री अध्यक्ष: माननीय सदस्य, प्लीज वाइंड-अप।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (चूरू): परन्तु मुझे तकलीफ इस बात की है, मैंने जिस एफ.आई.आर. का जिक्र किया, उस एफ.आई.आर. में, जिस दिन एफ.आई.आर. दर्ज होती है, उसी दिन नोटिस जारी होता है। मुख्य मंत्रीजी एक नोटिस अपने नाम लेते हैं, एक डिप्टी चीफ मिनिस्टर को मिलता है और 16 विधायकों को खोजने के लिये एस.ओ.जी. निकल पड़ती है। पपला गुर्जर, जो आज डेढ़ साल से फरार है, उसको खोजने में एस.ओ.जी. की रुचि नहीं, परन्तु उन विधायकों को, जो अपनों से नाराज हो करके चले गये, उनको खोजने के लिये जो हुआ, मैं समझता हूं, अध्यक्ष महोदय, धारा 124, राजद्रोह और यह धारा वह है जो कांग्रेस ने लोक सभा के चुनावों में कहा कि हम शासन में आयेंगे, उसको समाप्त करेंगे। आपने उस धारा का जिस प्रकार दुरुपयोग किया है, राजस्थान के इतिहास में राजस्थान इसको भूल नहीं सकता।

श्री अध्यक्ष: माननीय सदस्य।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (चूरू): माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं अंत में यही कहूंगा, वैसे मैं कुछ बातें और भी बोलना चाह रहा था और मैं यह कहना चाह रहा था कि महेश जोशीजी ने जो एफ.आई.आर. दर्ज करवाई और जो टेलीफोन के साथ आडियो क्लिप दी, मैं समझता हूं कि यह आडियो क्लिप जो 9829620202, +++ ओ.एस.डी. टू चीफ मिनिस्टर अगर वीडियो को, आडियो को रिकार्ड करके, क्योंकि फर्जी रिकार्डिंग हुई है। हमारी निजता पर हमला हुआ है, हमें संविधान के अंदर जो मौलिक अधिकार मिला है, उस पर हमला हुआ है। टेलीफोन को टैप करके और उस टेलीफोन के आधार पर एस.ओ.जी. के माध्यम से एक दो नहीं, तीन-तीन, चार-चार एफ.आई.आर. दर्ज करवाई जाए तो मैं समझता हूं कि यह दहशतगर्दी का वातावरण जो तैयार हो रहा है राजस्थान के अंदर यह दहशतगर्दी का वातावरण लोकतंत्र को नष्ट कर देगा। लोकतंत्र की बात करने वाले लोग यह भूल गये कि लोकतंत्र पांच सितारा होटल में पल्लवित नहीं होगा। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष: माननीय सदस्य। माननीय सदस्य, प्लीज, नहीं।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (चूरू): लोकतंत्र पांच सितारा होटल में पल्लवित नहीं होगा। लोकतंत्र राजस्थान के गांव और ढाणी में पल्लवित होगा और जिस दिन

(श्री राजेन्द्र राठौड़)

उसके हाथ में आएगा तब वोट की चोट से आपको बता देगा कि शासन करने के असली हकदार कौन थे। माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का समय दिया, धन्यवाद।

श्री शान्ती कुमार धारीवाल (स्वायत्त शासन, नगरीय विकास एवं आवासन मंत्री): इतना नीरस भाषण आपके मुंह से कभी नहीं सुना।

श्री अध्यक्ष: श्री संयम लोढ़ा। प्लीज, बैठे-बैठे नहीं बोलेंगे।

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): माननीय अध्यक्ष महोदय, हम आह भी करते हैं तो हो जाते हैं बदनाम, वे कत्ल भी करते हैं तो चर्चा नहीं होती।

माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी प्रतिपक्ष के उप नेता राष्ट्र कवि श्री रामधारी सिंह दिनकर की पंक्तियां पढ़ रहे थे कि जब नाश मनुज पर छाता है, विवेक पहले मर जाता है। अब यह अपने गिरहबान में झांकना चाहिए कि विवेक किसका मर गया है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्रजी ने यह कहा था कि मैं मृत्यु से नहीं डरता पर बदनामी से डरता हूं और आपके विचार स्रोत दीनदयाल उपाध्याय ने अपनी राजनीतिक डायरी में यह लिखा था कि किसी दूसरी पोलिटिकल पार्टी का कोई भी आदमी आये तो उसको कभी टिकट मत देना।

हमने अभी कुछ दिन पहले योगीराज श्रीकृष्ण का जन्म दिन मनाया, वह क्या कहते थे? करने वाला तो मैं हूं, तुम तो निमित्त हो और आज उस परम्परा के वारिस के रूप में राजस्थान की राजनीति में, हिंदुस्तान की राजनीति में कोई शख़्सियत उभर कर आयी है, जिसने चारों दिशाओं से होते हुए हमले का सामना किया है और राजस्थान के आठ करोड़ लोगों के सपने को साकार करने के लिए इन 102 साथियों के माध्यम से लोकतंत्र को बचाने की लड़ाई लड़ी है। (व्यवधान) 123, सारी, 123. बहुत दिन से 102 कह रहे थे, अब हो गये 123 तो 123 ही कहेंगे। मुझे टिकट नहीं दिया तो इसमें मेरा क्या कसूर? मुझे तो जनता ने टिकट दे दिया।

श्री अध्यक्ष: माननीय सदस्य, बैठे-बैठे नहीं बोलें।

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): माननीय अध्यक्ष महोदय, मानव जाति के इतिहास का हम अवलोकन करेंगे तो अनेक ऐसे विश्व विजेता सपना लेकर चलने वाले लोग आये, सिकंदर से लेकर हिटलर, मुसोलिनी, स्टालिन, जिन्होंने

(श्री संयम लोढ़ा)

हमेशा इस तरह का सोच रखा कि हम ही हैं लोगों के भाग्य विधाता और जो विरोधी विचार है, उसको कुचल दिया जाए, उसको खतम कर दिया जाए।

माननीय अध्यक्ष महोदय, पिछले कई सालों से हिन्दुस्तान की राजनीति में भी जो राजनीतिक दल अपना अस्तित्व तलाश रहा था, उसे अपनी जगह मिली तो एक ऐसा नेता उनका सामने आया जिसने अपनी वाक्चातुर्य के बल पर, अपने आर्टिक्यूलेशन के बल पर लोगों के साथ एक तारतम्य कायम किया लेकिन साथ में यह भी नजरिया रखा कि हमारा विरोधी कोई भी जिंदा नहीं रहना चाहिए। हमारे जो विरोधी हैं, या तो वह जेल में होने चाहिए, हमारे खिलाफ चुनकर जो लोग आये हैं, वह सत्ता में नहीं रहने चाहिए और उसी सिलसिले को आगे बढ़ाते हुए, माननीय अध्यक्ष महोदय, पिछले कुछ सालों से देश में इस तरह का वातावरण बना है कि लोगों का भरोसा प्रजातंत्र से कमजोर होने लगा है। वोट देने का कोई मतलब नहीं रह गया है। जो लोग चुनकर किसी और विचारधारा से आये हैं, उनको आप मेजोरिटी को सूटकेस के बल पर माइनोरिटी में बदलने का काम कर रहे हैं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से यह निवेदन करना चाहूंगा कि क्या हालात थे? अर्थव्यवस्था लड़खड़ा रही थी, लोग अपने घरों में बंद थे, उद्योग-धंधे बंद थे, स्कूल-कालेज बंद थे और देश की हुकूमत क्या कर रही थी? मैं याद दिलाना चाहूंगा मध्यप्रदेश का वह उदाहरण जब पूरे देश में कोराना का संक्रमण बढ़ रहा था और दिल्ली की हुकूमत में बैठे हुए लोग सरकार गिराने का षड्यंत्र करने में लगे हुए थे।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आज आपके माध्यम से यह निवेदन करना चाहूंगा कि राजस्थान की सरकार ने क्या काम नहीं किया? धारीवाल साहब विश्वास मत प्रस्ताव लेकर आये हैं। आप सभी जानते हैं, आदरणीय श्रीमती वसुन्धराजी भी बैठी हैं, यह दो बार सत्ता में रही हैं। क्या राजस्थान की जनता के सारे काम हो गये? क्या राजस्थान की जनता के काम बाकी नहीं रहे? क्या नोटबंदी के बाद देश के जो हालात बने, प्रदेश के जो हालात बने, आर्थिक जगत के हालात बने, अर्थव्यवस्था के हालात बने, सरकारों के हालात बने, क्या दिल्ली की हुकूमत के हालात बने, कितना रेवेन्यू किसका घटा, कितने संसाधन हमारे पास उपलब्ध हैं, क्या राजस्थान विधान सभा के 200 माननीय सदस्यों को इस बात की जानकारी नहीं है? लेकिन, मैं धन्यवाद दूंगा

(श्री संयम लोढ़ा)

राजस्थान के माननीय मुख्य मंत्री श्री अशोक गहलोत को कि इन विषम परिस्थितियों के बावजूद उन्होंने राजस्थान की आम-अवाम की हिफाजत करने का काम किया, उनकी देखभाल करने का काम किया, 35 लाख लोगों को इस कोरोना काल के अंदर 3500 रुपये उनकी जेब में डालने का काम किया है। नवम्बर तक, एन.एफ.एस.ए. का गेहूं देने का उन्होंने ऐलान किया है।

इसके अलावा, हम सभी चुनकर आते हैं। हमारे सभी माननीय सदस्यों के क्षेत्र के लोगों की आकांक्षाएं और इच्छाएं होती हैं। क्या नहीं मिला हम लोगों को? कालेज नहीं मिले? डिग्री कालेज नहीं मिले? क्या कृषि मंडियां नहीं मिलीं? क्या नई ग्राम पंचायतें नहीं मिलीं? क्या पंचायत समितियां नहीं मिलीं? क्या नगरपालिकाएं नहीं मिलीं और क्या मेडिकल कालेज नहीं मिले? कौनसे विकास के अंदर कमी रही है? आज हम में से हर आदमी जनता के बीच में जाकर यह कह सकता है कि जो वादे पौने दो साल पहले राजस्थान की जनता के बीच में करके आये हैं, उन वादों को पूरा करने का काम श्री अशोक गहलोत की सरकार कर रही है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, प्रतिपक्ष के उप नेता ने कोरोना का जिक्र किया। जब कोरोना आया तो राजस्थान में एक सैम्पल जांचने की स्थिति में हम नहीं थे। पहला सैम्पल भी हमें पूना भेजना पड़ा था। आज श्री अशोक गहलोत के प्रयासों से राजस्थान रोजाना 43 हजार सैम्पल जांच करने की स्थिति में है और आप देश के किन्हीं बड़े दस राज्यों से तुलना कर लीजिए, भारत सरकार के औसत से तुलना कर लीजिए, राजस्थान उसमें आपको अव्वल दिखेगा।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं एक छोटा-सा एग्जाम्पल देना चाहूंगा कि अंडमान निकोबार, सिर्फ एक जगह है पोर्ट ब्लेयर के अंदर एक हास्पिटल, जहां पर जांच की जा सकती है। पांच महीने का कोरोना होने के बाद भी भारत सरकार ने इस बात का प्रयास किया कि दूसरे टापू में रह रहे लोग हैं, वह जांच करवाने कैसे आएंगे, उनकी जीवन रक्षा कैसे की जा सकती है और राजस्थान, मेडिकल कालेज छोड़िये, प्राइवेट कालेज छोड़िये, सात जिला अस्पतालों के अंदर भी कोविड टैस्ट लैब एस्टेब्लिश करके उनका संचालन शुरू कर दिया गया है और अपना सब कुछ छोड़कर, रात और दिन, कौनसा ऐसा व्यक्ति है समाज का, जिससे माननीय मुख्य मंत्रीजी ने चर्चा नहीं की, जिनसे

(श्री संयम लोढ़ा)

बात नहीं की कि हम मिल-जुलकर इस कोरोना के खिलाफ जंग को कैसे जीतें। जो सुझाव दिये, उन पर अमल करने का काम किया है।

श्री शान्ती कुमार धारीवाल (स्वायत्त शासन, नगरीय विकास एवं आवासन मंत्री): इनसे भी की थी।

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): हां, इनसे भी की थी। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं निवेदन करना चाहूंगा कि यह विश्वास मत प्रस्ताव लाने की आवश्यकता क्यों पड़ी और इसकी बुनियाद कब रखी गयी थी। मैं हमारे भारतीय जनता पार्टी के मित्रों से यह पूछना चाहता हूं कि जब आपके पास सिर्फ 72 वोट थे तो वह कौनसा कारण था कि राज्य सभा के चुनाव में वह चौथा उम्मीदवार आप लेकर आये? आपका किनके साथ गठजोड़ था और किनके साथ मिलकर राजस्थान में तब भी आप खरीद-फरोख्त का धंधा करना चाहते थे? यह तो मुख्य मंत्री श्री अशोक गहलोत हैं, जिन्होंने उस वक्त भी आपके षड्यंत्र को विफल किया और इस वक्त भी इन दोनों गुजरातियों के षड्यंत्र को विफल कर दिया।

(14.00 बजे)

क्या हालात बन रहे हैं? आज अदालतों में क्या हो रहा है? हमारे जैसे साधारण लोगों के मुकदमों की सुनवाई सालों-साल नहीं होती है लेकिन आप जब जाते हैं राजस्थान उच्च न्यायालय की अदालत में पिटीशन लेकर, सेम-डे आपका अमैंडमेंट अलाउ हो जाता है, सेम-डे आपके डी.बी. में जाने का निर्णय हो जाता है, सेम-डे आपकी डी.बी. कांस्टीट्यूट हो जाती है और अगले साल सुनवाई हो जाती है। पूरा देश देख रहा है कि सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य पीठ के निर्णयों को किस तरीके से हाई कोर्ट अनदेखी कर रहा है, यह कोई साधारण प्रश्न नहीं है।

मैं आपको याद दिलाना चाहूंगा 1996 का, श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी का अविश्वास प्रस्ताव पर दिया गया वह भाषण। सुनिए आप लोग। क्या कहा था उन्होंने कि हम अटैची के बल पर बहुमत में अपनी सरकार नहीं बदलेंगे। ये उनके शब्द थे और आज आप किस दिशा में ले जाना चाहते हैं? राजस्थान के इस सर्वोच्च सदन की गरिमा तार-तार हो रही है। सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय, जो माननीय अध्यक्ष के संबंध में दिये गये हैं, उन निर्णयों की अनदेखी की जा रही है। क्या राजस्थान के इस सर्वोच्च सदन में हम सब लोग इसलिए बैठे हुए हैं कि सर्वोच्च सदन की गरिमा से खेलने का

(श्री संयम लोढ़ा)

मौका दूसरी संवैधानिक संस्थाओं को दें? क्या हमारा कोई दायित्व नहीं बनता है, हम सबका मिल-जुलकर यह फर्ज नहीं बनता है कि इस संस्था की सर्वोच्चता, गरिमा और प्रतिष्ठा बनाये रखने के लिये यह पूरा सदन एकजुट होकर संघर्ष करे।

माननीय अध्यक्ष महोदय, क्या-क्या नहीं किया आपने लोगों के वोट से चुनी हुई सरकार को गिराने के लिये? खरीद-फरोख्त अपनी जगह है, पद का लालच अपनी जगह है, काले धन का उपयोग अपनी जगह है। एनफोर्समेंट डायरेक्ट्रेट, इनकम टैक्स, सी.बी.आई.। माननीय मुख्य मंत्रीजी के भाई पर 15 साल पुराने मामले के अंदर आप नोटिस भिजवाते हैं। आप क्या समझते हैं, कोई डरता है आपकी सरकार से? क्या करेंगे? अशोक गहलोत की राजस्थान सरकार की कैबिनेट के सदस्य यह बैठे हैं। भैरोंसिंह जी के सगे भाई, लक्ष्मण सिंह जी शेखावत, इस बुढ़ापे के अंदर आपने उनको वहां के दरवाजे पर घसीट दिया, आपको शर्म नहीं आयी, आपको इसके लिये लज्जा नहीं आयी? आप सत्ता के लिये कितने गिर सकते हैं। वह लक्ष्मण सिंह शेखावत, जिसने अपनी पूरी जिंदगी भैरोंसिंह शेखावत जी के साथ मिलकर जनसंघ के पोस्टर चिपकाये थे, उनको आप निशाना बना रहे हैं, सिर्फ इसलिए कि गवर्नमेंट को टोपल (Topple) किया जा सके।

माननीय अध्यक्ष महोदय, आप कहते हैं फाइव स्टार कल्चर में बैठे हैं। फाइव स्टार कल्चर नहीं, अपनी आत्मा की आवाज सुनकर बैठे थे और इसलिए बैठे थे कि अशोक गहलोत दिल्ली की हुकूमत में बैठे हुए उन अहंकारी लोगों के खिलाफ देश के प्रजातंत्र की लड़ाई लड़ रहे थे। मैंने वह दृश्य देखा है सूर्यागढ़ होटल के अंदर, मेरे एक साथी विधायक रात को अपने छोटे बच्चों, तीन साल और पांच साल के बच्चों से वीडियो काल पर बात कर रहे थे। बच्चे रोने लग गये बाप के लिये, बाप रोने लग गया बच्चों के लिये। वह दारूण दृश्य मैंने देखा है। मैंने समझाया कि इस समय हमारे लिये फर्ज बड़ा है। बच्चों को भी समझाओ, मां को भी समझाओ। इस लड़ाई को हमको मिलकर लड़ना है और हमें खुशी है कि जो पाप आपने मध्य प्रदेश में किया, आपने कर्नाटक में किया, आपने गोवा में किया, राजस्थान की जनता को हमने कलंकित नहीं होने दिया।

माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने क्या प्रचार चलाया अखबार और टी.वी. के अंदर, वसुन्धरा राजे कांग्रेस को सपोर्ट कर रही हैं। कांग्रेस की

(श्री संयम लोढ़ा)

सरकार को गिरने से बचाना चाहते हैं। शर्म करो, आप उनके मंत्रिमण्डल में रहे हो, उनके साथ रहे हो। अगर वसुन्धरा राजे सपोर्ट कर रही थीं तो आपकी बैठक में 74 लोग कैसे पहुंचे? वह सपोर्ट कर रही होतीं तो 24 भी नहीं पहुंचते, समझे आप। (समय-समाप्ति-सूचक घंटी)

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से निवेदन करना चाहता हूं कि इस सारी पृष्ठभूमि में संवैधानिक संस्थाओं का किस रूप में दुरुपयोग हुआ। क्या यह सदन 21 दिन से पहले कभी आहूत नहीं हुआ? क्या इस राजस्थान की विधान सभा का वह इतिहास हमारे सामने नहीं है? क्या इस पन्द्रहवीं विधान सभा में भी ऐसा नहीं हुआ? क्या पिछली विधान सभाओं में भी ऐसा नहीं हुआ और क्या विधान सभा के रूल्स में यह पावर सिर्फ स्पीकर के पास नहीं है? फिर कौन लोग थे, जो राजस्थान विधान सभा का सत्र नहीं होने देना चाहते थे? वह कौन लोग थे, जो इस सरकार को गिराना चाहते थे और चुपके से जाकर शपथ ले लेना चाहते थे? लेकिन एक व्यक्ति के हौंसले के कारण यह सारा षड्यन्त्र आपका विफल हो गया। किस-किस तरह की खबरें प्लांट कीं आपने? एक एम. एल. ए. से दूसरे एम. एल. ए. को मिलने नहीं दे रहे हैं। एक एम. एल. ए. को दूसरे कमरे में जाने नहीं दे रहे हैं। रोज आपकी छाती पर मूंग दल रहे थे हम। कौनसे एम. एल. ए. को मिलने नहीं दे रहे थे और इसके अलावा क्या छपवाया? मानसरोवर के अंदर इंस्ट्रूमेंट लगे हुए हैं, फोन टेप किये जा रहे हैं और सारी जानकारियां रिकार्ड की जा रही हैं। संवैधानिक अधिकारों का हनन किया जा रहा है। कौन टेप कर रहा है? यह मिले-जुले तरीके से सरकार को विफल करने का षड्यन्त्र पूरी तरह से आपका बेनकाब हो चुका है। (समय-समाप्ति-सूचक घंटी)

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से निवेदन करना चाहता हूं कि राजस्थान को जिस रूप में इस कोरोना काल में, आप याद कीजिए, माननीय अध्यक्ष महोदय, हजारों लोग गुजरात से चलकर सीमा पर आकर खड़े हो गये थे बिना किसी तरह की जांच के, वह गाड़ियों में भर-भरकर छोड़ दिये गये, उन लाखों लोगों को क्या इस सरकार ने संभालने में कोई कमी रखी? जो यह वादा किया था माननीय मुख्य मंत्रीजी ने कि कोई आदमी भूखा नहीं सोयेगा। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं खुद 175 गांवों में मई से लेकर जुलाई

(श्री संयम लोढ़ा)

तक गया हूं। नरेगा के एक-एक काम पर गया हूं और वहां पर जाकर लोगों को पूछा है कि गांव के अंदर कोई आदमी भूखा रहा? कोई जवाब नहीं, कोई हां नहीं कहता है। पूरे देश के अंदर सबसे पहले मई महीने के अंदर नरेगा के काम शुरू करके रोजगार देने का काम इस सरकार ने किया। इससे लाखों लोगों को रोजगार मिला। आपकी तो तकलीफ यह है कि आज राजस्थान में कहीं भी आक्रोश नहीं है। इस वातावरण के बाद भी राजस्थान का जन-जन, आठ करोड़ लोग यह चाहते थे कि आप कितने ही समय रहे, एक महीने नहीं, अब छह महीने चाहे अंदर रहे, पर अशोक गहलोत जी की सरकार बचनी चाहिए, अशोक गहलोत जी की सरकार रहनी चाहिए। (समय-समाप्ति-सूचक घंटी)

श्री अध्यक्ष: माननीय सदस्य, विराजें।

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं अन्त में, चार पंक्तियों के साथ अपनी बात खतम करता हूं-

''बन सहारा बेसहारों के लिये,
बन किनारा बेकिनारों के लिये,
जो जीए अपने लिये तो क्या जीए,
जी सके तो जी, हजारों के लिये।''

श्री अध्यक्ष: श्री सतीश पूनियां।

श्री सतीश पूनियां (आमेर): आदरणीय अध्यक्ष महोदय, मैं इस विश्वास मत के प्रस्ताव का पुरजोर विरोध करता हूं। इसलिए करता हूं कि यहां तो हो सकता है सिर गिना दें लेकिन राजस्थान की जनता कभी स्वीकार नहीं करेगी। 34 दिन की पांच फिल्में रिलीज हुई। बाड़ाबंदी एक, बाड़ाबंदी दो, बाड़ाबंदी तीन, बाड़ाबंदी चार और पांचवीं बाड़ाबंदी, जिस तरीके से राजस्थान की जनता ने बहुत सारे दृश्य इस दौरान देखे। फेयरमोंट की इटेलियन डिश, क्रिकेट, अन्ताक्षरी, लेकिन इस दौरान ऐसी चीखें भी थीं, जिसमें गैंगरेप की, कोरोना मौतों की थीं। अफसोस हुआ और मैं धन्यवाद दूंगा उन सूर्यागढ़ के, जैसलमेर के उन मांगणियार गायकों का, कि उन्होंने बड़ी दिलेरी से कहा 'बेवफा तेरा यूं मुस्कुराना भूल जाने के काबिल नहीं।'

माननीय अध्यक्ष महोदय, यदि दुनिया के आंकड़े पर नजर डालें तो

(श्री सतीश पूनियां)

शायद यह पहली सरकार होगी विश्व में जो लगभग एक महीने से बात तो लोकतंत्र की और नैतिकता की कर रही थी लेकिन सरकार बाड़े से चल रही थी। चल रही थी कि चल नहीं रही थी, वह तो यह आंकड़े बताएंगे लेकिन जिस तरीके से वहां जो दृश्य राजस्थान की जनता ने देखा, मैं थोड़ा पीछे मुड़ना चाहूंगा। आप जब लोकतंत्र की बात करते हैं जिस विचार से आते हैं, क्यों भूल जाते हैं इस देश में आर्टिकल 356 का दुरुपयोग पहली बार हिन्दुस्तान की धरती पर हुआ, इस विचार के कारण हुआ।

यहां बहुत लोग बैठे हैं लेकिन पीछे जो लोग बैठे हैं उनके पुरखे, पूर्वज और ऐसे बुजुर्ग लोग जो 1975 के आपातकाल में 90 महीने तक जिस जिल्लत का वे शिकार हुए, कैसे भूल जायेंगे लोकतंत्र की बात करते-करते 19 महीने की उस जेल की यातना को, उस पीड़ा को? आपके पाप धुल जायेंगे? आपको याद करना पड़ेगा और जब तक पीढ़ियां रहेंगी इस बात का जवाब हिन्दुस्तान और राजस्थान की जनता आपसे मांगती रहेगी।

आप दम्भ भरते हो जनमत का, 2008 में भी यही दृश्य था और 2018 में भी यही। राजस्थान का जुगाड़ मशहूर है और उस जुगाड़ के लिए जादूगर भी मशहूर है। किस तरीके से 2008 में, 2018 में फैसला कानून करेगा लेकिन आपने किस तरीके से उस बी.एस.पी. की पूरी की पूरी पार्टी को, आप कभी बकरा मंडी बताते हो, कभी होर्स ट्रेडिंग करते हो, आप तो पूरे के पूरे हाथी गटक गये। पूरे-पूरे एलीफैंट, एलीफैंट ट्रेडिंग का कोई आविष्कारक है तो, श्रीमान आप हैं। जिस तरीके से आपने राजस्थान की जनता को 2018 के चुनाव में जिन लोक लुभावन बातों के लिए भोले-भाले किसानों को क्या कहा था आपके महान राष्ट्रीय नेता ने? जालौर की उस सभा में यह कहा था दस गिनेंगे और राजस्थान के किसानों का कर्जा माफ कर देंगे। एक, दो, तीन, चार, पांच, छह, सात, आठ, नौ, लेकिन कहां गया? राजस्थान का वह किसान जवाब मांगेगा, आपसे जवाब मांगेगा।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं निवेदन करना चाहता हूं कि 25 से भी ज्यादा ऐसे मामले रोजगार के, 25 भर्तियों के मामले अभी लम्बित हैं, चार हजार से भी ज्यादा कोर्ट में लम्बित हैं इन बेरोजगारों के, राजस्थान की सड़कों पर बेरोजगार आपकी सरकार से जवाब मांगते हैं आपके पास जवाब नहीं है।

श्री शान्ती कुमार धारीवाल (स्वायत्त शासन, नगरीय विकास एवं आवासन मंत्री): जवाब तो मोदी की सरकार को देना होगा। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष: माननीय मंत्री जी, संसदीय मंत्री जी, बैठे-बैठे नहीं। (व्यवधान)

श्री सतीश पूनियां (आमेर): ऐसा है आप 1885 की पार्टी हो, आप लोगों को शर्म आनी चाहिए।

श्री अध्यक्ष: प्लीज, आप संसदीय मंत्री हैं। (व्यवधान) माननीय मंत्री जी, अंकित नहीं होगा। अंकित नहीं होगा।

श्री शान्ती कुमार धारीवाल (स्वायत्त शासन, नगरीय विकास एवं आवासन मंत्री): 000

श्री अध्यक्ष: अंकित नहीं होगा, मंत्री जी। मंत्री जी, अंकित नहीं होगा।

श्री शान्ती कुमार धारीवाल (स्वायत्त शासन, नगरीय विकास एवं आवासन मंत्री): 000

श्री अध्यक्ष: मंत्री जी, मंत्री जी, अंकित नहीं होगा। I'll not allow it....(व्यवधान) प्लीज, मलिंगा जी, क्या हो गया? यह परम्पराएं ठीक नहीं हैं। संसदीय मंत्री हैं, आपसे लोग अपेक्षा करते हैं कि आप संसदीय परम्पराओं का पालन करेंगे। नहीं, माननीय मंत्री जी, प्लीज। उन्होंने यील्ड नहीं किया है, right now he is having his floor. जब फ्लोर उनके हाथ में है तो प्लीज मेहरबानी करके, please don't intervene. सतीश जी।

श्री सतीश पूनियां (आमेर): आदरणीय अध्यक्ष महोदय, राजस्थान के बारे में अब कहा जाने लगा कि ये अपराधों की राजधानी हो गई। लगभग दो लाख से भी ऊपर मुकदमे दर्ज हुए और यदि मैं भ्रष्टाचार का जिक्र करूं तो लगभग 445 मामले, जिसमें आपने 293 मामलों में ऐसे लोगों को गिरफ्तार किया है, आपकी नाक के नीचे भ्रष्टाचार पल रहा था। इस राजस्थान को जिस तरीके से अपराध की दुनिया में धकेला, मैंने जिक्र किया कि दो लाख से ज्यादा, 56 प्रतिशत अपराध बढ़े हत्या के, 60 प्रतिशत डकैती के, लूट के 41 प्रतिशत, अपहरण के 128 प्रतिशत, दुष्कर्म के 98 प्रतिशत, दंगों के 300 प्रतिशत, रोबरी के 46 प्रतिशत, चोरी के 107 प्रतिशत और ऐसे अन्य अपराध 77 प्रतिशत लेकिन मुझे अफसोस है ये जितने अपराध हुए, आप दलितों के हिमायती मानते हो लेकिन राजस्थान में दलित उत्पीड़न की घटनाएं 92

(श्री सतीश पूनियां)

प्रतिशत हुई हैं आपके इस काल खंड में। अनुसूचित जाति और जनजाति पर जो एट्रोसिटी हुई 101 प्रतिशत हुई और आपका सिर शर्म से झुक जायेगा, आप महिला हितैषी होने की बात करते हो, 122.98 प्रतिशत महिला उत्पीड़न के काम आपकी इस सरकार के दौरान हुए हैं। यह जवाब राजस्थान की जनता मांगेगी, हमें दें या नहीं दें लेकिन सड़क पर आपको जवाब जनता को देना पड़ेगा।

आप लोकतंत्र और अनैतिकता की बात करते हैं। इस देश में 1952 में संविधान लागू हुआ, 1957 में पहली कम्यूनिस्ट पार्टी की सरकार थी जिस सरकार को गिराने से लेकर एक लम्बी फेहरिस्त थी इस तरीके की चुनी हुई सरकारों को आपने किस तरीके से धारा 156 का दुरुपयोग करते हुए किया। एक पूर्व प्रधान मंत्री जी थे, उस समय के तत्कालीन गृह मंत्री से कहा, जब एक के साथ एक सरकारें कत्ल होती गई तो कहा, सरदार जी, कृपाण आप अन्दर रख लीजिए, कितनी सरकारें हलाल करेंगे। यह आपके रिकार्ड पर है, इस बात को देश और दुनिया जानती है। आप किस बात की कल्पना करते हैं, किस बात के लिए जवाब मांगते हैं?

राजस्थान में इस पिछले पूरे काल खंड में जिस तरीके से ये सारी घटनाएं हुईं। 20 जिलों में टिड्डी का हमला हुआ, 20 जिलों में और 90 हजार हैक्टेयर में और मैंने तो कहा भी जब मुझे पता लगा, किसी ने कहा कि सरकार अब फेयरमोंट की बजाय अब जैसलमेर चली गई तो जैसलमेर के आगे तो कोई जगह थी भी नहीं और फिर जब आप वहां इतने निठल्ले हो गये थे तो मैंने तो सौ पीपे भिजवाये थे, कम से कम टिड्डी भगाकर उन किसानों की तो मदद करते।

मैं निवेदन करना चाह रहा हूं कि जिस तरीके से आज राजस्थान में, क्योंकि कोराना का जिक्र तो आप बाद में करेंगे लेकिन 56 हजार से भी ज्यादा मुकदमे और 833 लोगों की मौत लेकिन इस मौत के दौरान ऐसे दर्दनाक दृश्य थे कि बेटी अस्पताल में चीखती रही और कोरोना से पीड़ित बाप वहां पर दम तोड़ता रहा। यह आपकी सरकार में। आपने कोरोना में प्रबंधन की बात की लेकिन 29 मार्च को जो घटिया पीपीई किट खरीद, एन 95 मास्क उनका एस.एम.एस. से गायब होना, उनकी खरीद होना और उसमें अनियमितता होना, इसका जवाब भी राजस्थान की जनता मांगेगी।

(श्री सतीश पूनियां)

मैं तो यह कहना चाह रहा हूं कि जिस तरीके से पौने दो साल की सरकार ने, आप आरोप लगा सकते हो, आपका अधिकार है, लेकिन मुझे लगता है कि, 'जिन्हें महसूस इन्सानों के रंजों गम नहीं होते, वो इन्सान भी हरगिज पत्थर से कम नहीं होते', पौने दो साल में आपकी फितरत ऐसी रही है कि किसी भी तरीके से राजस्थान की जनता को आपने रिलीफ देने की कोशिश नहीं की।

अभी आपने जिक्र तो खूब किया, सदन को इसलिए इस्तेमाल कर लिया कि अपनी भड़ास कहां निकालें, 'मन की बातें कहां निकालें जरिया नहीं मिलता, किसी से नजर नहीं मिलती, किसी से नजरिया नहीं मिलता', ऐसी सरकार को चला करके करेंगे भी क्या? न तो नजर मिलती न नजरिया मिलता।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपको निवेदन करना चाह रहा हूं केवल प्रधान मंत्री जी पर, केवल गृह मंत्री जी पर और केवल भारतीय जनता पार्टी को आरोपित करके आप अपने पापों से छुप नहीं सकते, आप उन पापों को ढंक नहीं सकते। इस तरीके के सहकारी संघवाद का नारा लेकर, आप ही ने कहा था कि 8 करोड़ राजस्थान की जनता राजभवन को घेर लेगी, आपके पास उस बात का जवाब है? फिर आप क्यों पलटे? इसी तरीके से आपने एस.ओ.जी., ए.सी.बी. को, राजस्थान की पुलिस को जिस तरीके से इंस्ट्रूमेंट के रूप में इस्तेमाल किया, ये आपका ही, आपकी सरकार का आदेश था, किस तरीके से आपने अपने लोगों पर भरोसा नहीं किया, ये 22 अप्रैल, 2020 का कागज है।

आपने दिल्ली में इंटेलीजेंस की यूनिट को स्थापित करने की बात कही, इसका मतलब आपको अपने लोगों पर भरोसा नहीं था। फिर यू टर्न पर यू टर्न, एस.ओ.जी. की एफ.आई.आर. भी की और फिर एफ.आर. भी लगा दी। आपने 124 (ए) के देशद्रोह का, राजद्रोह का मामला दर्ज किया, वापस भी ले लिया लेकिन यह सरकार का इकबाल कहां है कि जिस अपराधी को, जिस कथित विधायक को ए.सी.बी. के जरिये पुलिस ढूंढ़ रही थी, वह गृह मंत्री के यहां दूसरे दिन चाय पी रहा था। क्या यह आपका न्याय था, बताइये। गृह मंत्री के नाते उसी अपराधी को आप नोटिस चस्पा करते हो, एस.ओ.जी. को पीछे करते हो, ए.सी.बी. पीछे लगाते हो लेकिन बड़े प्यार से काफी पिलाते हो उसी अपराधी को। आपने ऐसी कौनसी अदालत स्थापित कर ली बिना जांच

(श्री सतीश पूनियां)

के, बिना तरकीब के? लेकिन मुझे लगता है यह सरकार, मौजूदा सरकार किसी भी तरीके से, यहां संख्या, सिर गिना सकते हैं, पर लोकतंत्र की प्रक्रिया और परम्परा है लेकिन मुझे लगता है कि इससे पहले आपको अपने गिरहबान में झांकने की आवश्यकता है।

आप पूरे देश पर राज करते थे, आपकी 1885 की पार्टी है। आपको दर्द यह है कि आप केवल साढ़े तीन प्रदेशों में सिमटकर रह गये। पूरे देश पर राज करते थे कश्मीर से कन्याकुमारी तक। क्यों हिन्दुस्तान की जनता ने नकार दिया? क्या इसके लिए मोदी जी दोषी हैं? आपके अपने दल के लोग आपको छोड़कर चले गये, 1939 में सुभाष चंद्र बोस ने जब छोड़ा होगा तो क्या उनको बी.जे.पी. ने कहा होगा? एक लम्बी फेहरिस्त है और आज भी वे सब क्षत्रप बैठे हैं, शरद पवार से लेकर ममता बनर्जी तक आपकी अपनी पार्टी के थे, क्या बी.जे.पी. की सियासत थी? लेकिन मैं यह कहना चाह रहा हूं, आपको तकलीफ यह है कि विचार के नाते, व्यवहार के नाते, आज कांग्रेस पार्टी का विचार भ्रष्टाचार का विचार है। यह राष्ट्रवाद के खिलाफ का विचार है। यह बेरोजगारों को दमन करने का विचार है। यह किसानों को झूठ बोलने का विचार है। ऐसी नाकारा और निकम्मी सरकार को सत्ता पर रहने का कोई हक नहीं है। बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री अध्यक्ष: श्री सुभाष गर्ग।

डा. सुभाष गर्ग (राज्य मंत्री, तकनीकी शिक्षा): अध्यक्ष महोदय, धन्यवाद। आज एक ऐसे अवसर पर मुझे बोलने का मौका मिल रहा है, जिसमें सरकार के द्वारा एक गैर सरकारी प्रस्ताव, विश्वास मत प्रस्तुत किया गया है।

अध्यक्ष महोदय, ऐसे समय में ऐसी परिस्थितियां क्यों उत्पन्न हुईं इस पर मैं कुछ चर्चा और कुछ बिन्दु आपके समक्ष रख रहा हूं। मेरे से पूर्व के वक्ताओं ने, विशेष रूप से विपक्ष के साथियों ने, उप नेता, प्रतिपक्ष और विपक्षी पार्टी के अध्यक्ष ने बहुत सारी चीजें कही हैं। बहुत सारी बातें कही हैं।

सबसे पहले मैं शुरुआत करना चाहता हूं कि यह परिस्थितियां कब पैदा हुईं। क्या इस प्रदेश की जनता ने इस सरकार को चुनकर नहीं भेजा? लोकतांत्रिक ढंग से एक चुनी हुई सरकार को बहुमत दिया। उस बहुमत के

(डा. सुभाष गर्ग)

आधार पर माननीय मुख्य मंत्री अशोक जी गहलोत को उस पद पर सुशोभित किया। इन डेढ़ सालों के अंदर ही क्या ऐसे कारण थे, क्या ऐसी परिस्थितियां पैदा हो गईं, क्या ऐसे जनता ने आक्रोश दिखाए, क्या ऐसे आंदोलन हुए प्रदेश में, जिसकी वजह से विपक्ष के कुछ साथियों ने ऐसा षड्यंत्र करना शुरू कर दिया कि कैसे इस लोकप्रिय सरकार को गिराया जाए? कैसे इस सरकार को टोपल डाउन किया जाए? ...(व्यवधान) सुन लीजिए, हमने भी सुना है। इसमें क्या दिक्कत है? मैं तो विधायक पहली बार चुनकर आया हूं, इसलिए आपका यह फर्ज बनता है कि मुझे मौका दीजिए, सुनिए। कभी कुछ बड़े लोग, अनुभवी लोग गलती कर देते हैं। कई बार मुखिया भी गलती कर देता है लेकिन बेटा भी सलाह देता है, यह मानकर कुछ अपनी बात आपके समक्ष रख रहा हूं। अभी पूनियां साहब बात कर रहे थे कि प्रदेश के गृह मंत्री के समक्ष उस व्यक्ति को चाय पिलाई जा रही थी, जिसके खिलाफ एसीबी का मुकदमा था। बिलकुल, गृह मंत्री, जब कहीं किसी तरह की बात होती है, उस प्रत्येक आरोपी को रिप्रजेंटेशन देने का अधिकार होता है, चाहे वह एसीबी का मुखिया हो, चाहे वह प्रदेश का मुख्य मंत्री हो। इस नाते वह जो एमएलए, जो भी गए, वह मुख्य मंत्री जी को रिप्रजेंटेशन देने गए। अपनी बात कहने गए। हंसी आएगी निश्चित रूप से। हंसी इसलिए भी आएगी कि अभी उप नेता, प्रतिपक्ष भी बात कर रहे थे कि जाने क्या हो जाए, बिलकुल सही कहा। लेकिन मैं यह कहना चाहूंगा कि जाने कब क्या हो जाए। जिस तरह से सीबीआई का, ईडी का और आईटी का इस्तेमाल किया गया। कब किसके पीछे इनकम टैक्स पड़ जाए, सीबीआई पड़ जाए, ईडी पड़ जाए, यह केन्द्र सरकार के शासन में ही हो सकता है। आदमी यहां बहस कर रहा है, मालूम पड़ेगा सुभाष गर्ग के यहां ईडी पहुंच चुकी है। बिलकुल आप सही कह रहे हैं। किसी भी प्रदेश के मुखिया को यह अधिकार है कि वह अपनी आंख खुली रखे, कान खुले रखे और मुंह भी खुला रखे। यह उसका अधिकार है। इस रूप में मैं कहना चाहूंगा कि आपने बहुत सारी चीजें कही हैं। विपक्ष के जो उप नेता हैं बीजेपी के जो प्रदेशाध्यक्ष हैं, उनसे कहना चाहूंगा कि कम से कम कुछ शुरू करने से पहले अपने कुछ पूर्व अनुभवी नेताओं से तो सम्पर्क कर लिया होता।

बात कर रहे थे कि सम्मान नहीं होता है। अभी चर्चा थी कि हमारे

(डा. सुभाष गर्ग)

मुख्य मंत्री जी और हमारे पूर्व उप मुख्य मंत्री के बीच में संवाद नहीं हुआ। मैं उप नेता, प्रतिपक्ष से और पूनियां जी से पूछना चाहता हूं कि उन्होंने अपनी पूर्व मुख्य मंत्री जी के साथ पिछले डेढ़ साल में, पौने 2 साल में कितनी बार संवाद किया? यह निर्णय लेने से पूर्व कि सरकार को गिराया जाना है, क्या मेघवाल साहब से सम्पर्क किया? क्या वसुन्धरा राजे जी से सम्पर्क किया? दूसरों को सलाह देने चले हैं। आप नेताओं की नहीं सुनते। आप मुखिया की नहीं सुनते।

माननीय अध्यक्ष महोदय, बड़ा अफसोस होता है, पहली बार विधायक चुनकर आया। लगता था कि यहां जनता की आवाज सुनकर, जनता की आवाज को महसूस करके हम सब, पूरा सदन काम करता है लेकिन क्या समय चुना गया, कैसा वक्त चुना गया? पूरा विश्व कोरोना महामारी से लड़ रहा था। हमारे मुख्य मंत्री सौ के करीब वी.सी. के माध्यम से, एक न्यू माडल आफ गवर्नेंस के माध्यम की बात कर रहे थे। वह संकल्प लेकर कि कोरोना से कोई न मरे, कोई भूखा न सोए, इस बात के लिए प्रतिदिन, ऐसा कोई दिन नहीं गया जिस दिन हमारी सरकार ने जन कल्याणकारी नीतियों की घोषणा नहीं की हो। उस वक्त इन्होंने सोचा कि मुख्य मंत्री और उनकी सरकार तो काम में संलग्न है। काम कर रही है। यह अच्छा मौका है। लोग अपने-अपने घरों पर हैं। यह सबसे अच्छा मौका है। इस वक्त को चुना जाए।

मैं धन्यवाद देना चाहता हूं मेघवाल जी जैसे नेताओं को और विपक्ष के उन साथियों को जिन्होंने अंतरात्मा की आवाज पर यह संकल्प लिया और इनके नेताओं को बाध्य कर दिया कि हम ऐसे षड्यंत्र में शामिल नहीं होंगे। वाजपेयी जी को तो सुन लिया होता। उनसे भी कुछ लैसन ले लिए होते। भैरोंसिंह जी शेखावत साहब जैसे नेता, उनके बारे में खुद मुख्य मंत्री जी ने अपने उद्बोधन में कहा था और मीडिया के माध्यम से आपको मालूम था, आपने पढ़ा होगा। क्या कहा था? वह होता है राजनीतिक चरित्र। किसी भी ऐसे काम में नहीं पड़ेंगे। किसी भी चुनी हुई सरकार को गिरने नहीं देंगे। जिसको प्रदेश की जनता ने सरकार को चुनकर भेजा है। गलतियां खुद करते हैं और आरोप हम पर लगाते हैं।

अध्यक्ष महोदय, माननीय वसुन्धरा जी हैं नहीं, मैं कहना चाह रहा था। मैं उनकी अनुपस्थिति में बता रहा हूं, कि

(डा. सुभाष गर्ग)

'किस्सा बना दिया उन लोगों ने भी मुझे,

जो कल तक मुझे अपना हिस्सा बताया करते थे'।

राठौड़ साहब, यह मैंने आपके लिए शेर कहा है। सुन लिया या नहीं सुना? दुबारा सुना दूं? "किस्सा बना दिया उन लोगों ने मुझे, जो कल तक मुझे अपना हिस्सा बताया करते थे।" मैं कहना चाहता हूं कि जिस नेता ने, आपके नेता ने यहां 10 वर्ष शासन किया, उनकी बेकद्री किस तरह से आप लोगों के द्वारा की गई और आरोप हमारे ऊपर लगाते हैं।

मैं धन्यवाद देना चाहता हूं, इस सदन में बैठे हुए हमारे सत्ता पक्ष के सभी सहयोगी दल कांग्रेस, लोकदल, सीपीआई (एम) के साथी, निर्दलीय साथी, बीटीपी के साथी, बीएसपी, नहीं, अब बीएसपी नहीं, वह कांग्रेस है। इन साथियों ने चाहे आपने कितने ही प्रयास कर लिए, कितनी भी कोशिश कर ली, लेकिन मैं इस बात को कह सकता हूं कि जो कहते हैं न कि अपना कुनबा तो संभाला नहीं गया, आपने तो पूरी कोशिश की उस कुनबे को तोड़ने के लिए। मैं इस बात का विटनैस हूं और आपके अध्यक्ष के ऊपर आरोप लगाता हूं कि उन्होंने फोन नहीं किए? उन्होंने कोशिश नहीं की?

श्री राजेन्द्र राठौड़ (चूरू): आपकी सरकार बचाने की हमारी जिम्मेदारी है क्या?

डा. सुभाष गर्ग (राज्य मंत्री, तकनीकी शिक्षा): आप सुन लीजिए। सुन लीजिए। माद्दा रखिए थोड़ा सा।

श्री अध्यक्ष: इन्होंने यील्ड नहीं किया है। आप सीनियर आदमी हैं। यील्ड नहीं किया है।

डा. सुभाष गर्ग (राज्य मंत्री, तकनीकी शिक्षा): माननीय अध्यक्ष महोदय, ऐसा वक्त चुना लेकिन उस वक्त को चुनने में इनसे कहीं न कहीं गलती हो गई। हमारे इन साथियों का जो उत्साह, जज्बा और राजस्थान की यह भूमि, रणभूमि है और जैसा कि माननीय धारीवाल जी ने कहा कि इस राजस्थान में रथ रोक दिया गया। हमारे अशोक गहलोत साहब के नेतृत्व में इन सभी सदस्यों ने जो निष्ठा व्यक्त की और यह विश्वास दिला दिया कि चाहे कुछ भी हो जाए, हां, गए फाइव स्टार होटल में, कोई गलत काम नहीं किया। स्वेच्छा से गए। जब गुंडे पीछे पड़ जाते हैं न गुंडे, तो कहीं न कहीं तो जाना ही पड़ता है। जब इस तरह से सीबीआई, ईडी और आईटी को पीछे लगा

(डा. सुभाष गर्ग)

दिया गया, प्रताप सिंह जी बैठे हुए हैं, उनके फादर 80 साल के, कमाल है, आदमी का कुछ तो मोरल होता है। बिलो दी बैल्ट कभी भी राजनीति नहीं की जाती है। कुछ न कुछ तो मेघवाल साहब से सीख लिया होता।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं 2-3 बातें और कहना चाहूंगा। जितने भी कल्याणकारी कार्यक्रमों की फेहरिस्त कहूं, यह कहा कि कोई काम नहीं हुए। ऐसा कौनसा सैक्टर है जिसमें हमारी सरकार ने काम नहीं किए, चाहे वह हायर एजुकेशन का सैक्टर हो, टेक्निकल एजुकेशन हो, संस्कृत हो, मेडिकल हैल्थ हो। कम से कम माननीय प्रधान मंत्री जी का तो सम्मान करो, जिन्होंने सार्वजनिक रूप से वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से इस राजस्थान सरकार की सराहना की लेकिन आप उनका भी सम्मान नहीं करते हैं। किस मंत्रालय ने राजस्थान सरकार के प्रयासों की सराहना नहीं की? नरेगा में नंबर वन, फिर भी आप कहते हैं। मई में सबसे पहले काम शुरू कर दिए गए नरेगा के माध्यम से। कोई भूखा न सोए इसलिए खाद्य सुरक्षा के माध्यम से न केवल उनको बल्कि एनएफसीआई वालों को बराबर गेहूं उपलब्ध कराया। राजस्थान में एक व्यक्ति बता दो जो भूखा सोया हो, जिसको कि राशन सामग्री न पहुंची हो।

श्री अध्यक्ष: माननीय सदस्य।

डा. सुभाष गर्ग (राज्य मंत्री, तकनीकी शिक्षा): तीसरी बात मैं कहना चाहूंगा अनुग्रह राशि 3500 रुपये लोगों को जो दिहाड़ी के मजदूर होते हैं, बेलदार होते हैं, उनको भी उपलब्ध करायी गई।

श्री अध्यक्ष: समाप्त करें।

डा. सुभाष गर्ग (राज्य मंत्री, तकनीकी शिक्षा): माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं खतम करने वाला हूं। सर, एक शेर कह रहा हूं, बीजेपी की एक प्रोब्लम क्या है?

कहने को तो बहुत कुछ था,

मुझे चाहिए कोई बिलकुल मेरे जैसा,

किसी बेहतर से मेरी बनती नहीं।

और वह बेहतर आदमी हैं अशोक गहलोत जी।

श्री अध्यक्ष: थैंक यू।

डा. सुभाष गर्ग (राज्य मंत्री, तकनीकी शिक्षा): इसलिए आपको सब ऐसा लगता है कि इसको कैसे टॉपल डाउन किया जाए लेकिन इन काले मंसूबों को यह पूरा सदन जो सत्ता पक्ष यहां बैठा हुआ है, 125 लोग, सफल नहीं होने देंगे और जो माननीय राठौड़ साहब कहते हैं कि अभी तो क्या है, यह फिर होगा। बिलकुल, हमें मालूम है, आप करोगे, फिर कोशिश करोगे, अगले तीन महीने में, चार महीने में, पांच महीने में लेकिन हम सफल नहीं होने देंगे, यह हम दावे के साथ कह सकते हैं। धन्यवाद अध्यक्षजी।

श्री अध्यक्ष: धन्यवाद। श्रीमती किरण माहेश्वरी। (व्यवधान)

श्रीमती किरण माहेश्वरी (राजसमन्द): माननीय अध्यक्षजी, अभी बड़ा स्पष्टीकरण दिया जा रहा है विश्वास मत रखते हुए कि हम सब एक हैं, हम सब लोग सरकार के साथ हैं, मंत्रिमण्डल के साथ हैं, लेकिन चेहरे दिखा रहे हैं और यहां पर बैठे हुए सदस्यों में उदासीनता नजर आ रही है, संख्या बल जो देख रहे हैं उसमें कि यह जो विश्वास मत ला रहे हैं, सिर्फ कागजी कार्यवाही करने के लिए, मन अभी भी एक नहीं हुए हैं, अभी भी दिख रहा है इनके चेहरों के ऊपर कि खुशी नहीं है बल्कि 35 दिन तो अभी और उसके पहले राज्य सभा का जब चुनाव था, तब भी विश्वास नहीं था उस समय भी 9 दिन इन्होंने सभी को बाड़ेबंदी में रखा। बाड़ेबंदी से छूटकर आए हुए ऐसे हमारे सारे विधायक साथी बड़े असमंजस में हैं कि करें तो क्या करें इसलिए अपने आपको प्रूव करने के लिए बार-बार कहना पड़ रहा है कि बड़े अच्छे आए, बहुत अच्छा काम हुआ, बहुत काम किया, लेकिन जनता के बीच में यह जाएंगे आज भी, विश्वास मत अगर लाना है तो जनता के बीच में जाओ, चुनाव होने दो और चुनाव होगा तो वापस चुनकर आओगे कितने, यह समझ में आ जाएगा। विश्वास मत इस सदन के अंदर लाकर और जो बात ये कहना चाहते हैं, मैं पुरजोर विरोध करती हूं इस बात का कि इन्होंने एक तरह से पूरी नौटंकी की इस समय। क्या किया 34 डेज तक, फेयर मोंट होटल के अंदर, इटेलियन डिश सीखी हमारी बहनों ने, क्या वह राष्ट्रीय अध्यक्ष इनकी कांग्रेस की सोनिया गांधीजी जो इटली से आती हैं, उनको खुश करने के लिए? सरकार वहां पर मुगले आजम और अनारकली फिल्म देख रही है, क्या ये इसलिए चुनकर आए हैं। जब चुनकर आए थे यहां पर तो अच्छे तरीके से सरकार चलाते, आपके हाथ में जनता ने सरकार दी थी। इन पौने दो साल के अंदर पूरे राजस्थान का जो बंटाधार हुआ है, जिस प्रकार की सारी योजनाएं पूर्व में चल रही थीं, जो

(श्रीमती किरण माहेश्वरी)

हमारी पूर्व मुख्य मंत्री वसुधन्रा राजेजी ने चलाई थीं, गरीब के लिए चलाई थीं, किसान के लिए चलाई थीं, श्रमिकों के लिए चलाई थीं, उन सारी योजनाओं को बंद करना, नाम परिवर्तन करना, बस इसके अलावा कोई और काम इन्होंने नहीं किया। इसलिए यह जो सरकार वर्तमान में अपना बहुमत सिद्ध करने के लिए, अपना विश्वास मत जो लेकर आई है इसमें इनको बड़ा संशय है कि हम लोग अभी बहुमत दे दें फिर उसके बाद में वापस से अपने घर जाएंगे। अभी कह रहे थे सुभाषजी, पांच-छह महीने तक ये लोग यही काम करेंगे तो फिर ये बाड़ेबंदी की सरकार होने वाली है। इनका पूरा समय बाड़ेबंदी में जाने वाला है, ऐसा मुझे लगता है।

(14.32 बजे)

(श्री राजेन्द्र पारीक, सभापति, पदासीन)

इतना अविश्वास! आपस में इतना अविश्वास एक दूसरे के प्रति कि फोनों की टेपिंग हो, जहां रुके, वहां एक कमरे से दूसरे कमरे में इंटरकाम से भी बात न कर सकें, जोगिंग के लिए जाएं तो साथ-साथ कांस्टेबल उनके पीछे-पीछे दौड़े यह देखने के लिए कि कहीं किसी से बात तो न कर ले। यानी आप लोगों को क्या हाल हुआ, मुझे तो वास्तव में बहुत दया आती है। आपका यह सारा पेपर में पढ़ा तो लगा कि इस प्रकार की बाड़ेबंदी जो आज तक लोकतंत्र में अंदर ऐसा कभी नहीं हुआ कि इतने दिन की बाड़ेबंदी, 34 डेज एक साथ और उसके पहले 9 दिन राज्य सभा में, यानी यह तो एक बहुत बड़ा रिकार्ड बनाया। रिकार्ड तो राजस्थान के मुख्य मंत्रीजी ने इस बात का भी बनाया कि कोरोना के इस संकट के समय में जब सारे लोग, हम सब लोग यहां पर बैठे हुए हैं, एमएलएज भारतीय जनता पार्टी के, हमारे प्रदेश के अध्यक्ष, हमारे प्रतिपक्ष के नेता बराबर हमसे यह कहते रहते थे कि आप लोग क्षेत्र के अंदर जा रहे हो या नहीं, क्षेत्र के अंदर जनता की कोई प्रोब्लम है तो बताइए, जनता के अंदर कहीं कोई असुविधा है तो बताइए और इस दौरान पूरे तरीके से भोजन बांटने से लेकर, खाद्य सामग्री बांटने से लेकर जो कुछ भी जनता के बीच में हम लोग सेवा कर सकते थे, उसके लिए हम खड़े थे। जिस जनता ने इनको भी चुना, ये उस कोरोना संकट के बीच में जनता के बीच में नहीं खड़े थे। ये वहां पर फेयर मोंट होटल के अंदर ऐशो आराम से रह रहे थे, शर्म आनी चाहिए, लोकतंत्र का हवाला तो देते हो बार-बार कि लोकतंत्र के अंदर इस प्रकार का प्रहार हो रहा है, क्या प्रहार किया, हमने कब इनको कहा कि आप

(श्रीमती किरण माहेश्वरी)

हमारे पास आओ, आपके खुद के घर के अंदर ही झगड़ा था, आपके खुद के घर में अंतर्कलह था और उसको आप पूरी तरह से बीजेपी पर थोपते रहे, भारतीय जनता पार्टी पर आरोप लगाते रहे। भारतीय जनता पार्टी का कोई लेना न देना, क्योंकि आपकी सरकार अगर सुरक्षित न रहे तो हम पर दोषारोपण, आप आपस में हाथ मिला लेते, आप आपस में अच्छी बातें जो अभी कीं, वे 34 दिन पहले कर लेते तो ये सारी चीजें ही न होतीं, लेकिन पूरे राजस्थान को ऐसे संकट के समय में जनता को छोड़ा वह जनता कभी आपको माफ नहीं करेगी। आपने बहुत बड़ा जनता के साथ में मजाक किया। जिस जनता को इन्होंने वादे किए थे कि हम आपके लिए ये करेंगे, हम आपका कर्जा माफ करेंगे, आपके बिजली के दाम नहीं बढ़ाएंगे, आपको सुरक्षित रखेंगे, एक अच्छा शासन देंगे, एक पारदर्शी वातावरण बनाएंगे, लेकिन क्या किया इन्होंने? आपने देखा कि ये हर वादे से मुकर गये। इन्होंने जनता की कोई सेवा नहीं की, जितना पैसा था, जो कुछ करना था, इस कोरोना के समय में हुआ वह केन्द्र सरकार की तरफ से हुआ, माननीय मोदीजी ने जिन्होंने आज राजस्थान को इतनी बड़ी मदद की। लेकिन ये क्या करते थे मुख्य मंत्रीजी, और कुछ करे या न करे, हर रोज एक स्टेटमेंट इनको जरूर देना होता था और उसमें भी केन्द्र सरकार के ऊपर दोषारोपण करना। हर रोज यही कहना कि मोदीजी यह नहीं कर रहे, मोदीजी वह नहीं कर रहे, मोदीजी ने ऐसा नहीं किया, लेकिन जिस प्रकार से मदद मिली है, वह सिर्फ और सिर्फ मोदीजी की है जो कोरोना के इस संकट के समय राजस्थान की जनता के साथ में बराबर में खड़े रहे। राजस्थान सरकार से एक रुपये की भी मदद की हो तो बताओ। बड़ी-बड़ी बातें कर रहे थे, 3500 रुपये हमने गरीबों, बेरोजगारों को बांटे। कौनसे 3500 रुपये बांटे? आप जाकर जनता के बीच में कहो न कि 3500 रुपये बांटे, उसी समय जनता आपको बता देगी कि कौनसे 3500 रुपये। एक रुपया आपके यहां से नहीं आया। आपने जो दो रुपये किलो के गेहूं थे वे दो रुपये किलो के गेहूं जो एक इंसान को पांच किलो गेहूं देते थे खाद्य सुरक्षा के अंदर, वे भी आपने बंद कर दिये अब। उसको भी फ्री में दे रहे थे तीन महीने तक, उसका भी अब पैसा लेना शुरू किया है। ये मोदीजी की देन है कि खाद्य सुरक्षा के अंदर ...(व्यवधान) माननीय मंत्रीजी, ...(व्यवधान) माननीय मंत्रीजी, डिस्टर्ब मत करो। (व्यवधान)

श्री शान्ती कुमार धारीवाल (स्वायत्त शासन, नगरीय विकास एवं आवासन मंत्री): 35 लाख आदमियों का है ...(व्यवधान) जिनको 3500 रुपया दिया गया है।

श्रीमती किरण माहेश्वरी (राजसमन्द): ऐसा है, जो माननीय प्रधान मंत्रीजी ने खाद्य सुरक्षा में जुड़े हुए लोग नहीं थे उनको भी खाद्य देने का काम किया है राजस्थान के अंदर। (व्यवधान) 80 हजार टन खाद्य बांटा है उन्होंने राजस्थान के अंदर। (व्यवधान)

श्री शान्ती कुमार धारीवाल (स्वायत्त शासन, नगरीय विकास एवं आवासन मंत्री): 22 रुपये में खरीदकर गरीबों को 2 रुपये में दिया है। (व्यवधान)

श्री सभापति: माननीय मंत्रीजी, विराजिये। कृपया सहयोग करें।

श्रीमती किरण माहेश्वरी (राजसमन्द): माननीय सभापति महोदय, इनको गले नहीं उतर रहा है क्योंकि इन्होंने गरीबों के लिए कुछ नहीं किया, "गरीब का हाथ कांग्रेस के साथ", केवल यह नारा है आपका। आप कभी गरीब के साथ नहीं रहे, आपने गरीब के लिए क्या काम किया कोरोना के समय? कोरोना के इस संकट के समय मोदीजी ने जो खाद्य सामग्री बंटवाई, जिस तरीके से इस राजस्थान में 80 हजार टन खाद्यान्न बांटा गया और जो लोग खाद्य सुरक्षा में नहीं थे उन लोगों को भी दिया, यह कितनी बड़ी महानता है। नवम्बर तक यानी 8 महीने, 3 महीने पहले और 5 महीने अभी और, 8 महीने तक ये खाद्य सामग्री यदि बंट रही है तो केन्द्र सरकार की तरफ से। उज्ज्वला योजना के अंदर ...(व्यवधान)

श्री शान्ती कुमार धारीवाल (स्वायत्त शासन, नगरीय विकास एवं आवासन मंत्री): सिर्फ घोषणा की। (व्यवधान)

श्रीमती किरण माहेश्वरी (राजसमन्द): माननीय सभापति महोदय, इनको करंट आ रहा है क्योंकि इन्होंने कुछ किया नहीं है इसलिए करंट आएगा। वह करंट तो पब्लिक देगी, आप जनता में जाओ, 30 लाख महिलाओं को 3 गैस की टंकी उज्ज्वला योजना में फ्री में यदि किसी ने दी तो वह मोदी सरकार ने दी। गरीब कल्याण, दिव्यांगों को पेंशन देने का काम किया, अतिरिक्त एक हजार रुपया, अतिरिक्त। वह किसी ने दिया है तो मोदीजी ने दिया है। विधवा बहन हो, चाहे दिव्यांग भाई-बहन हो चाहे वह वृद्धजन हो, इन तीनों को एक हजार रुपया अतिरिक्त देने का काम किया, 1 लाख 70 हजार करोड़ की गरीब कल्याण योजना...

श्री शान्ती कुमार धारीवाल (स्वायत्त शासन, नगरीय विकास एवं आवासन मंत्री): सभापति महोदय, यह तो अपनी योजनाओं का गुणगान गाया जा रहा है।

श्रीमती किरण माहेश्वरी (राजसमन्द): गाएंगे हम गुणगान। काम किया है तो गुणगान भी गाएंगे।

श्री शान्ती कुमार धारीवाल (स्वायत्त शासन, नगरीय विकास एवं आवासन मंत्री): मोदी जी की यह चम्पीगिरी कहां तक करेंगे? (व्यवधान)

श्रीमती किरण माहेश्वरी (राजसमन्द): हमने काम किया है तो जरूर कहेंगे और आपको सुनना पड़ेगा, क्योंकि आपने कोई काम नहीं किया। कोरोना वारियर्स के लिए 50 लाख तक का बीमा अगर किसी ने कराया तो मोदी जी ने कराया। नरेगा में जहां पूरे देश का बजट सिर्फ 60 हजार करोड़ रुपये था, उसे 40 परसेंट बढ़ाया। नरेगा में 1 लाख करोड़ का बजट, आज गांव-गांव में नरेगा में मजदूरी मिल रही है। हमारे प्रवासी भाई-बहन जो आए, उन्हें काम मिला।

श्री सभापति: कृपया शांत रहें प्लीज। बैठे-बैठे मत बोलिए।

श्रीमती किरण माहेश्वरी (राजसमन्द): किसान सम्मान निधि में राजस्थान में 60 लाख लोगों को, जो किसानों को 1200 करोड़ रुपये का वितरण हुआ, यह मोदी जी की देन है कि किसान सम्मान निधि में किसान के खाते में पैसा आया। इन्होंने तो न किसान की सुध ली और न किसी गरीब की। केवल भाषण दे रहे हैं, 34 दिन तक हम बाड़ेबंदी में क्यों थे, क्यों हमें बाड़ेबंदी में रहना पड़ा, इसका स्पष्टीकरण यहां दे रहे हैं। स्पष्टीकरण न दें। अपने काम बताएं कि आप लोगों ने सरकार में आने के बाद क्या काम किया।

इनके मुख्य मंत्री जी ने दिल्ली में भाषण दिया और छपा हिन्दुस्तान टाइम्स में, जिसमें इन्होंने कहा कि क्वारंटाइन सेंटर्स में जो क्वारंटाइन में होंगे, सरकार उन पर 2400 रुपये प्रति व्यक्ति प्रतिदिन के हिसाब से खर्च करेगी। मैं आप सबसे पूछना चाहती हूं आज, यहां पर चिकित्सा मंत्री जी भी बैठे हैं, आप सब यह जवाब दें कि 2400 रुपये प्रति व्यक्ति प्रतिदिन क्या क्वारंटाइन सेंटर में आप लोगों ने दिये?

श्री रघु शर्मा (चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री): हां, बिलकुल खर्च किये हैं।

श्रीमती किरण माहेश्वरी (राजसमन्द): नहीं दिये, गलत मत बोलें। सदन की मेज पर गलत मत बोलें। (व्यवधान)

श्री सभापति: समाप्त करें। विराजिए।

श्रीमती किरण माहेश्वरी (राजसमन्द): एक पैसा नहीं। लोगों के घरों से खाना आया। लोगों के घरों से खाना बन-बनकर आया। (व्यवधान)

श्री रघु शर्मा (चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री): आपको जानकारी नहीं है। अभी कोरोना पर स्टेटमेंट दूंगा, सारी चीजें मालूम पड़ जाएंगी आपको। (व्यवधान)

श्री सभापति: विराजिए, विराजिए, माननीय सदस्य। समाप्त करें। प्लीज सहयोग करें।

श्रीमती किरण माहेश्वरी (राजसमन्द): माननीय सभापति जी, क्वारंटाइन सेंटर की यह हालत थी...

श्री सभापति: समाप्त करें, समाप्त करें अब। श्री बलवान पूनियां।

श्रीमती किरण माहेश्वरी (राजसमन्द): सर, पांच मिनट भी नहीं हुए हैं।

श्री सभापति: आपको 02:40 पर समाप्त करना चाहिए था, 02:43 तक बोल रही हैं। बैठिए आप।

श्रीमती किरण माहेश्वरी (राजसमन्द): मैं तो यह कहूंगी कि माननीय मुख्य मंत्री जी इस्तीफा दें। इस पर बात इस्तीफा दें कि उन्होंने कहा था, अगर किसी के ऊपर राजद्रोह का मुकदमा दर्ज हुआ है मैं अगर साबित नहीं कर पाया तो मैं इस्तीफा दे दूंगा।

श्री सभापति: प्लीज, प्लीज सहयोग करें। अंकित नहीं होगा। श्री बलवान पूनियां।

श्रीमती किरण माहेश्वरी (राजसमन्द): 000

श्री सभापति: विराजिए, विराजिए। माननीय सदस्या, अंकित नहीं होगा।

श्रीमती किरण माहेश्वरी (राजसमन्द): 000

श्री सभापति: प्लीज सहयोग करें।

श्रीमती किरण माहेश्वरी (राजसमन्द): 000

श्री बलवान पूनियां (भादरा): सभापति महोदय, आज राजस्थान विधान सभा का यहां सत्र है और सत्र में राजस्थान की सरकार द्वारा विश्वास प्रस्ताव में मुझे मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी की तरफ से बोलने का मौका मिला है।

श्रीमती किरण माहेश्वरी (राजसमन्द): 000

श्री सभापति: विराजिए आप। अंकित नहीं होगा।

श्री बलवान पूनियां (भादरा): सभापति महोदय, मैं इस समय अपनी बात बोल रहा हूं, लेकिन इस बीच बहन जी बोल रही हैं। यह समय मैं एक्स्ट्रा लूंगा। (व्यवधान)

श्रीमती किरण माहेश्वरी (राजसमन्द): 000

श्री सभापति: प्लीज सहयोग करें।

श्रीमती किरण माहेश्वरी (राजसमन्द): 000

श्री सभापति: विराजिए आप। अलाउ नहीं करूंगा मैं। समय की सीमा है। माननीय नेता, प्रतिपक्ष का समय काट रही हैं आप। प्लीज सहयोग करें।

श्री बलवान पूनियां (भादरा): सभापति महोदय, देश और दुनिया में लोक सभा-राज्य सभा के बाद लोकतंत्र की सबसे बड़ी तस्वीरें राज्यों की विधान सभाएं होती हैं। राजस्थान में 2018 में पन्द्रहवीं विधान सभा चुनी गयी थी। (व्यवधान) पन्द्रहवीं विधान सभा के गठन के समय यहां कांग्रेस पार्टी बहुमत के साथ आयी। (व्यवधान) भाजपा को विपक्ष में बैठने का मौका मिला। (व्यवधान)

श्री सभापति: प्लीज विराजिए, विराजिए। अंकित नहीं होगा। (व्यवधान) मैं अलाउ नहीं करूंगा। बिलकुल अलाउ नहीं करूंगा। (व्यवधान)

(14.44 बजे)

(श्री सी.पी. जोशी, अध्यक्ष, पदासीन)

श्री बलवान पूनियां (भादरा): अध्यक्ष महोदय, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के भी दो सदस्य जीतकर आये थे। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष: बस अब हो गया। प्लीज बैठें आप। I will not allow this.

श्री बलवान पूनियां (भादरा): हमने सरकार का समर्थन करने की बजाय जनता के मुद्दों पर बार-बार सरकार का ध्यान आकर्षित करने का काम किया। अध्यक्ष महोदय, प्रदेश की सवा सात करोड़ जनता में फैल रहे कोरोना को रोकने का काम चल रहा था। प्रदेश में किसान चने और सरसों का बेचान कर रहे थे। उसी समय 02 जुलाई को केन्द्र सरकार का एक आदेश आया कि और कोई चना अब नहीं खरीदा जाएगा। राजस्थान में 30 हजार

(श्री बलवान पूनियां)

किसानों के टोकन कटे हुए रह गये। हम राजस्थान की सरकार का ध्यान इंगित करवाना चाहते थे कि वह केन्द्र से बात करे और किसान के चने की तुलाई करवाए।

अध्यक्ष महोदय, उसी दरमियान यह सिलसिला चला कि राजस्थान में सरकार के पास बहुमत नहीं बचा। कुछ लोग इधर-उधर की बातें करने लगे। कुछ लोग धमकी देने लगे कि तेल नहीं तेल की धार देखना। वह धार हिन्दुस्तान की जनता ने मुगलों के हमलों से, अंग्रेजों के 200 साल के राज से, ब्रितानिया हुकुमत के खिलाफ आजादी की लड़ाई लड़ते हुए अपनी कुर्बानियां देते हुए बहुत बार देखी। यह बात सही है कि हिन्दुस्तान में चुनी हुई सरकारों को कई बार अपदस्थ करने का काम किया गया था। उसी दरमियान आज राजस्थान की सवा सात करोड़ जनता यह कतई उम्मीद नहीं कर रही थी कि ऐसे षड्यंत्र राजस्थान में भी होंगे।

आज नौजवान बेरोजगार दर-दर की ठोकरें खा रहे हैं। केन्द्र की सरकार बेरोजगारी के आंकड़े छिपाना चाहती है। आज रेल का निजीकरण चल रहा है, उद्योग-धंधे बेचे जा रहे हैं, एयरपोर्ट नीलाम किये जा रहे हैं। इस कोरोना काल में देश का निजीकरण तेजी से आगे बढ़ा। यह हमारे लिए एक सबक का विषय था। अध्यक्ष महोदय, इसी दौरान राजस्थान में यह राजनीतिक घटनाक्रम चला। कुछ लोग कह रहे हैं, हमारा कसूर नहीं। मैं कहता हूं, हम यह समझ रहे हैं कि हिन्दुस्तान में करोड़ों मुकदमे पैंडिंग हैं, फिर किसी स्पेशल सुनवाई में स्पेशल तारीखें कैसे आयीं?

अध्यक्ष महोदय, सीबीआई इन्हीं 33 दिनों में राजस्थान में सक्रिय कैसे हुई? ईडी कैसे आयी? कैसे इन्कम टैक्स डिपार्टमेंट आया? (व्यवधान) बीच में मत बोलिए। आपके रेडियो को बजने नहीं दूंगा। (व्यवधान) मेरे बीच में बोलने की जरूरत नहीं है। आपका रेडियो नहीं बजने दूंगा। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष: माननीय सदस्य। (व्यवधान)

श्री बलवान पूनियां (भादरा): अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे यह बात कहना चाहता हूं कि कॉलेजों में, स्कूलों में बेरोजगारों के रोजगार के लिए ... (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष: माननीय सदस्य, ...(व्यवधान) माननीय राठौड़ साहब। सदन की चर्चा समाप्त की जाती है। (व्यवधान)

श्री राजेन्द्र राठौड़ (चूरू): अध्यक्ष महोदय, क्या है यह? (व्यवधान)

श्री बलवान पूनियां (भादरा): अध्यक्ष महोदय, बिजली के बढ़े हुए दाम, उन्हें वापस घटाने का सरकार को काम करना था, जनता के मुद्दे देखने थे लेकिन ये जनता की बात करने वाले लोगों को रोकना चाहते हैं। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष: माननीय सदस्य, ...(व्यवधान) यह हाउस चलाना है कि नहीं? (व्यवधान)

श्री बलवान पूनियां (भादरा): अध्यक्ष महोदय, आज ये लोकतंत्र की बात कर रहे हैं। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष: I will not allow it. I will not allow it. No. चर्चा समाप्त हुई। माननीय सदस्य, बैठें आप। चर्चा समाप्त हुई। (व्यवधान)

श्री बलवान पूनियां (भादरा): अध्यक्ष महोदय, ...(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष: बैठें प्लीज। प्लीज बैठें। माननीय सदस्य, प्लीज बैठें। अंकित नहीं होगा।

श्री बलवान पूनियां (भादरा): 000

श्री अध्यक्ष: मिस्टर पूनियां, यह ठीक नहीं है। अध्यक्ष खड़ा है और आप बोले जा रहे हैं। माननीय कटारिया जी, मैं समझता हूं कि चर्चा बहुत अच्छी हो गयी है। यह तरीका नहीं है। मैं किसलिए बैठा हुआ हूं यहां? मैं यहां क्यों हूं? मान लीजिए, वे कुछ बोल भी गये हैं तो मैं अध्यक्ष किस काम के लिए हूं? मेरा काम भी सदस्य करेंगे?

एक माननीय सदस्य: अध्यक्ष महोदय, ये हमें धमका रहे हैं।

श्री अध्यक्ष: प्लीज आप बैठे रहें। धमका रहे हैं आपको। आप इतने कमजोर हैं दबे-कुचले धमकने को आ गये यहां पर। (व्यवधान) बैठें प्लीज। बैठें प्लीज। कटारिया जी, मैं क्षमा चाहता हूं आपसे। चर्चा समाप्त होती है।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (चूरू): नहीं, अध्यक्ष महोदय। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष: सुनिये, आप यह भी करना चाहते हो, वह भी करना चाहते हो?

श्री राजेन्द्र राठौड़ (चूरू): आपके आदेश की पालना करेंगे। अध्यक्ष महोदय, चर्चा को जारी रखें। (व्यवधान) काफी माननीय सदस्य बोलने वाले हैं।

श्री अध्यक्ष: यह बिलकुल गलत तरीका है, मैं फिर कह रहा हूं। आपको, कोई भी सदस्य को कम्पलेंट है वह मेरा अधिकार है। मेरे अधिकार को आप ले रहे हैं, सब सदस्य खड़े होकर बोल रहे हैं। यह कौनसी परम्परा आप डाल रहे हैं? मैं समझता हूं कि प्लीज...

श्री राजेन्द्र राठौड़ (चूरू): आप हमारे हो, आपका अधिकार कैसे ले सकते हैं साहब। आप हमारे हो। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष: मैं आप ही का हूं, विराजो आप। मैं आप ही का हूं, वही तकलीफ हो रही है। मैं आप ही का होने से तकलीफ है। मैं फिर निवेदन करना चाहता हूं, आप सदन को नहीं चलाना चाहें तो मुझे कोई तकलीफ नहीं है। अध्यक्ष की गरिमा को जितनी गिरा चुके हैं उसको और बाकी गिराने के लिए मैं अध्यक्ष नहीं हूं, वह नेचर भी नहीं है मेरी। इसलिए मैं किसी को अलाउ नहीं करूंगा कि मैं अध्यक्ष बैठा हुआ हूं तो हाउस में खड़ा होकर कोई किसी को डिक्टेट करे। किसी सदस्य की कम्पलेंट है तो यह मेरा काम है, मैं अपने कर्तव्य का निर्वहन नहीं कर सकूं तो आपको अधिकार है, लेकिन मेरे कर्तव्य के बीच में इंटरवीन करने का आपको अधिकार नहीं है। (व्यवधान) माननीय पूनियां जी, एक मिनट में अपनी बात खतम करें और प्रोवोक नहीं करेंगे। एक मिनट में केवल। एक मिनट में अपनी बात खतम करें प्लीज।

श्री बलवान पूनियां (भादरा): दो मिनट तो दो अध्यक्ष जी।

श्री अध्यक्ष: आप रख दीजिये अपनी बात।

श्री बलवान पूनियां (भादरा): अध्यक्ष जी, मैं पूरे मन से कह रहा हूं, आसन के सामने मैं कभी किसी के बीच में नहीं बोलता पर मुझे भी बोलने का हक है। हम भी जीतकर आए हैं, विधायक ही हम जीतकर आए हैं। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष: अपनी बात करो प्लीज, टापिक पर आओ। आप तो इस पर बात करें।

श्री बलवान पूनियां (भादरा): अध्यक्ष महोदय, आज प्रदेश में सरकार के सामने जो विश्वास मत की स्थिति है, मैं समझता हूं कि सरकार विश्वास मत हासिल कर लेगी लेकिन बहुत सारे मुद्दे हैं जिन मुद्दों पर सरकार को काम करना चाहिए। विपक्ष आपको डिस्टर्ब करने की कोशिश करे लेकिन आपका काम है कि एएनएम भर्ती पूरी करें, टिड्डियों के फाके को रोकें, फायरिंग फील्ड रेंज में जो फाका पैदा हुआ है, हापर्स पैदा हुए हैं उनको आप रोकें, किसानों का मुआवजा दें। चने और सरसों की जो खरीद बीच में केन्द्र की सरकार ने रोकी थी उसको आप फौरन सम्पर्क करके वह खरीद वापस करवायेंगे और उनका भुगतान करवायेंगे। बिजली के बिल जिस तरीके से बढ़कर आये हैं उनको आप कमेटी बनाकर ठीक करेंगे, बढ़ी हुई दर वापस लेंगे। सरकार ने जिस तरह से कोरोना में यह नारा दिया था कि कोई भूखा नहीं सोयेगा, मैं समझता हूं कि आज अलग-अलग बात हो सकती है, लेकिन

(श्री बलवान पूनियां)
उस दिन सब लोग, 200 के 200 लोग आपके साथ थे और राजस्थान प्रदेश में कोई भूखा नहीं सोया।

श्री अध्यक्ष: माननीय सदस्य।

श्री बलवान पूनियां (भादरा): इसमें कोई दो राय नहीं कि ये भी साथ थे। राजस्थान में जनता रसोइयां लोगों ने चलाई। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष: प्लीज बैठें आप, हो गया। माननीय सदस्य, अंकित नहीं होगा। प्लीज, बैठें। प्लीज, बैठें। श्री गुलाब चन्द जी कटारिया।

श्री गुलाब चन्द कटारिया (नेता, प्रतिपक्ष): अध्यक्ष महोदय, आज सरकार को विश्वास मत लेकर आना पड़ा। अगर वास्तव में हमारी मन्शा सरकार गिराने की होती तो हम अविश्वास प्रस्ताव लेकर आते। आप हमारे कारण से घायल नहीं हुए, घर के झगड़े से घायल हो और हमारे माथे यह ठीकरा फोड़ने का जो प्रयत्न कर रहे हो यह उचित नहीं है। इस सच्चाई को स्वीकार करो, सच्चाई को आंख बन्द करके नजरअंदाज करोगे तो परिणाम राजस्थान के लिए और आपके, मेरे और सबके लिए ठीक नहीं होगा। यह जो कुछ भी दृश्य उपस्थित हुआ, इसमें बीजेपी का कोई लेना देना नहीं है। हमारे 75 सदस्य भी नहीं हैं, हमारे 72 सदस्य हैं, 3 हमारे साथी और आ गये तो 75 क्या हम सरकार उलट सकते हैं? कम से कम हकीकत को, सच्चाई को समझने का प्रयास करो।

जब से सरकार बनी है, जब से आपने शपथ ली है, एक मुख्य मंत्री और एक उप मुख्य मंत्री, एक पार्टी का छह साल से अध्यक्ष। जिस व्यक्ति ने अपनी मेहनत से उस कांग्रेस को, जिसके 21 सदस्य थे, प्रयत्न किया, प्रयत्न सबका सामूहिक हो सकता है इसको मैं नकार नहीं रहा हूं, लेकिन सच में उस आदमी ने जिस ढंग से आपकी पार्टी को उस समय खड़ा करने का प्रयत्न किया उसमें उस छह वर्ष तो वह आपको बहुत अच्छा लगता था, तब तो बहुत अच्छा आदमी था, फिर यह अचानक कैसे बिगड़ गया? इसके लिए दोषी कौन? मैं बहुत हकीकत, मन से कहना चाहता हूं कि जब तक हम राजनेता, यह जो अपनी पार्टी का चश्मा है न, इसको उतारकर हकीकत को देखने का प्रयत्न नहीं करोगे, अपने आपकी टांगों पर कुल्हाड़ियां मारोगे। पहले दिन से, 18 महीने तक अगर आप यह कहो कि मैंने उप मुख्य मंत्री की 18 महीने से शक्ल नहीं देखी, मैं बातचीत नहीं करता हूं। नाकारा है, नाजोगा, अच्छे कपड़े

(श्री गुलाब चन्द कटारिया)

पहनता है, अच्छी अंग्रेजी बोलता है, यह मैंने बुलवाया था आपसे? यह मैंने तो नहीं बुलवाया, मैंने तो नहीं कहा। बीजेपी ने तो आपको यह नहीं कहा कि आप यह बोलो जिससे आपका मामला ठीक बैठ जाए। गलती आप करो, दोष हम पर मढ़ो। जब कभी भी पत्नी से झगड़ा हो जाता है न तो पत्नी को तो कुछ कह नहीं सकते हैं और बच्चे के थप्पड़ मारते हैं। समझ में तो सीधा आ रहा है न?

श्री अशोक गहलोत (मुख्य मंत्री): क्या आपने सुना मैंने क्या कहा था? आपने सुना यह? बिना सुने हुए क्यों बोल रहे हो? सुनी हुई बातों पर क्यों बोल रहे हो? पहले जाकर सुनिये।

श्री गुलाब चन्द कटारिया (नेता, प्रतिपक्ष): ऐसा है, मैंने अकेले नहीं सुना है, हिन्दुस्तान की पूरी जनता ने सुना है। कुछ समझने की कोशिश करो। महात्मा गांधी का नाम लेकर दुकानदारी ज्यादा दिन तक नहीं चल सकती है, याद रख लेना। इस बात का ध्यान रख लेना। (व्यवधान)

श्री रघु शर्मा (चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री): सरकार चलाने निकले थे, क्या है यह? दुकानदारी, क्या होता है यह? (व्यवधान) होश में रहिये, अपनी लिमिट में रहिये। ऐसा +++ प्रतिपक्ष का नेता हमने नहीं देखा है जिसको मालूम ही नहीं है कि पीछे-पीछे कौन क्या कर रहा है। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष: यह आपका काम है? यह आपका काम है? (व्यवधान) आप बैठें। प्लीज, बैठें।

श्री बुलाकी दास कल्ला (ऊर्जा मंत्री): दुकानदारी शब्द असंसदीय है, इसको एक्सपंज किया जाए। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष: राजेन्द्र जी, आप बहुत सीनियर आदमी हैं, आप सिखा रहे हो, फिर मैं अध्यक्ष क्यों हूं? यह काम आप ही को करवाना है तो अध्यक्ष को हटा दीजिये। आप बहुत गलत परम्परा डाल रहे हैं और मैं इस परम्परा को बहुत कंडेम करता हूं और मैं बहुत ईमानदारी से कहना चाहता हूं कि सदन इस तरह से नहीं चलेगा। आप जब चाहो तब डिक्टेट करो, आप चाहे जो अध्यक्ष से एक्सेप्ट करो, यह नहीं होगा। यदि मैं अपने कर्तव्य का निर्वहन नहीं कर सकूं, बीच में नहीं रोक सकूं तो मैं बात करूंगा। मेरे मित्र हैं धारीवाल साहब, मैं इनको भी रोकता हूं, पर आपको यह अधिकार नहीं देता हूं कि आपके सदस्य को खड़ा करके डिस्टर्ब करो हाउस को, यह भी मैं आपको अलाउ

(श्री अध्यक्ष)

नहीं करता हूं। मैं दुबारा से निवेदन करना चाहता हूं कि मेरे काम की जिम्मेदारी मुझ पर रखिये। कोई सदस्य बोल रहा है, रोक रहा है तो उसको टोकने का काम मेरा है और यह अधिकार मैं आपकी पार्टी के सदस्यों को नहीं देना चाहता हूं। मैं आशा करता हूं कि भविष्य में मेरे इस अधिकार का दुरुपयोग आप नहीं करेंगे। माननीय कटारिया जी। (व्यवधान) प्लीज, बैठें। मैंने बोल दिया, let him speak first. फिर बोलें आप। प्लीज माननीय सदस्य।

श्री गुलाब चन्द कटारिया (नेता, प्रतिपक्ष): अध्यक्ष महोदय, कभी भी कोई गलत भाव रखकर मैं बात नहीं करता हूं। मैं ईमानदारी से इस बात की कोशिश करता हूं। वास्तव में झगड़ा आपका था, ये दो कैम्पों में गये थे तो मेरे कहने से गये थे या मेरी पार्टी के कहने से थे कि दोनों कैम्पों में अलग-अलग जाना? वहां जाने के बाद जो कुछ भी दृश्य राजस्थान की जनता ने देखा है उसको आप छिपा सकते हो? अगर बीजेपी कोई कैम्प लगाकर अलग से एक ग्रुप बना लेती तब तो यह समझ में आ सकता था कि हां, हम सरकार गिराने के लिए प्रयत्न कर रहे हैं। घर के झगड़े को आप दूसरों के माथे मढ़ने का प्रयास कर रहे हो। आपके मंत्री महोदय ने यह कहा कि हमारे क्षेत्र में काम नहीं होता है। हम जो जनता से वादा करके आये, जिसके आधार पर हम चुनाव लड़े हैं, जो चीजें हमने कही हैं उन चीजों की इतने लम्बे समय बाद भी पूर्ति नहीं हो पाती है, सम्मान नहीं है, हमारी किसी प्रकार की सरकार में भागीदारी भी नहीं है। मैं सोचता हूं कि वे जो इतने लोग आपसे अलग होकर गये, वे क्या मेरे से, मेरी पार्टी से, दिल्ली की पार्टी से आदेश लेकर गये थे और वापस आये तो क्या मेरी पार्टी के आदेश से वापस आये? केवल और केवल अपनी बात को जमाने के लिए घुमाने का प्रयत्न मत करिये, भगवान के लिए सच्चे रास्ते पर चलने का प्रयास करिये। अगर आपके बीच में असंतोष नहीं होता, अगर आपके बीच में टकराव नहीं होता तो हम यहां बीच में क्यों आते? हम तो आप दोनों के झगड़ों को पहले दिन से देख रहे थे। मैंने पहले ही दिन, जिस दिन आपकी बाड़ेबन्दी हुई थी, मैंने 14 तारीख की प्रेस कांफ्रेंस में बहुत सीधे शब्दों में कहा था कि अगर आपको लगता है, जनता को एक सन्देह हो गया कि सरकार के पास बहुमत नहीं है, आप कह रहे हो कि हमारे पास बहुमत है तो केवल और केवल आप दो लाइन का एक प्रस्ताव बनाकर राज्यपाल के पास जाइये कि हमारी सरकार के बहुमत के बारे में एक सन्देह क्रियेट हो गया है इसलिए हम विधान सभा के फ्लोर पर अपना बहुमत सिद्ध

(श्री गुलाब चन्द कटारिया)

करना चाहते हैं। काम खतम हो जाता न। अब लौटकर 34 दिन के बाद क्यों आए? यही काम आप पहले दिन कर सकते थे या नहीं? (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष: माननीय मंत्री जी, रिकार्ड नहीं होगा। माननीय मंत्री जी, प्लीज। I say no, रिकार्ड नहीं होगा। आप बैठें। I say no, आप बैठें। आप बैठें प्लीज। (व्यवधान) आप बैठें, बैठें प्लीज। मंत्री जी, I'll leave, मैं कुर्सी छोड़ दूंगा।

(15.00 बजे)

श्री शान्ती कुमार धारीवाल (स्वायत्त शासन, नगरीय विकास एवं आवासन मंत्री): 000

श्री अध्यक्ष: I'll leave this Chair. माननीय मुख्य मंत्री जी I'll not allow it. माननीय मुख्य मंत्री जी I am very sorry, I'll not allow it. I'll prefer to leave the Chair rather than having this. मैं बिलकुल टोलरेट नहीं करूंगा, आप चाहे नाराज हों, चाहे कुछ हों। यदि मैं इनको कह रहा हूं तो आपको भी कह रहा हूं। आप संसदीय मंत्री हैं। आपको कोई अधिकार नहीं है। जब कोई माननीय सदस्य ने yield नहीं किया है तो please for god's sake. नहीं, अलाउ नहीं है। I'll not allow it. आप नहीं बोलेंगे, आप नहीं बोल सकते। पहले तो आपको अधिकार नहीं, अलग तरीका है उसको रेज करने का, आप संसदीय मंत्री हैं। वे गलत बोल रहे हैं तो तरीका है लाने का, कैसे बोलेंगे, हम बीच में बोलेंगे। प्लीज मैं फिर कह रहा हूं आपको, फिर मैं आपको कह रहा हूं, नहीं बोलेंगे आप। मैं माननीय मुख्य मंत्री जी, आपसे अपेक्षा करता हूं कि संसदीय मंत्री और आपके मंत्रिमंडल के सदस्य यदि सदन में आइडियल नहीं बनाना चाहते हैं और यदि रॉन्ग प्रैक्टिस करना चाहते हैं तो I'll not prefer to be Chair as the Speaker of the House. मुझे पसंद भी नहीं है ये चीज। जब मैं इनको कह रहा हूं तो आपको भी कह रहा हूं। सदन में सदन की गरिमा बनाने की जिम्मेदारी मेरी नहीं है, आपकी भी है। आपकी ज्यादा है, आप ये नहीं कर रहे हैं। आप यह काम बैठे-बैठे नहीं कर रहे हैं। आप नहीं कर रहे हैं। फिर बोल रहा हूं, फिर वहीं कर रहे हैं आप, जो नहीं करना चाहिए आपको, आप बिलकुल गलत काम कर रहे हैं। आप इतने सीनियर आदमी हैं, बैठे-बैठे बोले जा रहे हैं। मैं किसलिए खड़ा हूं यहां पर, आप क्या उदाहरण देना चाहते हैं। नये आदमी के सामने, Chair on leg और

(श्री अध्यक्ष)

बैठे-बैठे बोल रहे हैं। आप पार्लियामेंट मिनिस्टर भी हैं। दो चीजें नहीं हो सकती। यदि आपको पार्लियामेंट्री मिनिस्टर के रूप में काम करना है तो आपको एग्जाम्पल सैट करना पड़ेगा कि हाउस कैसे चलेगा, दो चीजें नहीं हो सकती don't be a Parliamentary Minister, behave like a MLA. It can't be tolerated. But being a Minister I don't expect that you do all these things. मैं फिर निवेदन करना चाहता हूं I'll prefer not to be on the Chair, मुझे कोई तकलीफ नहीं है पर मैं सदन में यदि अध्यक्ष के रूप में बैठा हुआ हूं तो इस कुर्सी की गरिमा बनाने की मेरी जिम्मेदारी है। उससे ज्यादा जिम्मेदारी पार्लियामेंट्री मिनिस्टर की है कि सदन की गरिमा बनाने में साथ दे। मैं यह आशा करता हूं आपसे। माननीय कटारिया जी प्लीज।

श्री गुलाब चन्द कटारिया (नेता, प्रतिपक्ष): अध्यक्ष जी, मैं आपका बहुत आभारी हूं और मैं आपको पूरा अधिकार देता हूं। अगर मेरे शब्दों को बोलने में, मैं कहीं अगर कोई गलत लाइन लेता हूं तो आप उसको कटवा दीजिए। मुझे कोई एतराज नहीं है, लेकिन, मैं जिस बात को कह रहा हूं, ये दो खेमे बनाये, आप लोगों ने बनाये और जब आपकी पार्टी की मीटिंग होती है तो पार्टी की मीटिंग में शत-प्रतिशत उपस्थिति कभी रहती है क्या? चाहे मेरी पार्टी की मीटिंग हो, चाहे आपकी पार्टी की मीटिंग हो, लेकिन आपने उस पार्टी का आधार लेकर, व्हिप का उल्लंघन मानकर, रात को 10 बजे इस सचिवालय में आकर, रात को कागज निकलवाकर, रात को 1.00 बजे घरों में चस्पा कराने का काम, ये लोकतांत्रिक परम्परा थी? उसकी पालना करते हुई की? मैं सोचता हूं।

श्री अध्यक्ष: कटारिया जी, please let me intervene, मैं बोलूंगा, ये काम असेम्बली सैक्रेटेरिएट का, please understand it, let me clear. कोई चीजें कन्फ्यूज नहीं होनी चाहिए, बिलकुल क्लियर होना चाहिए। मैं आपका भी ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं, please go through the Rules. रूल्स 7 में लिखा हुआ कि आप लिखित टिप्पणी मांगेंगे please understand it. मेरे पास कोई एक कमप्लेंट आई, एक अध्यक्ष के रूप में उस कमप्लेंट को डिस्पोज करने के लिए, जो नियम में लिखा हुआ था कि दूसरे सदस्य की क्या लिखित टिप्पणी है। ये काम किया है that's all इधर सरकार का इसमें कोई रोल नहीं है। ये रोल है असेम्बली सैक्रेटेरिएट का, so please don't confuse it और मैं फिर कहना चाहता हूं, वर्ड यूज करना चाहता हूं the Constitutional Institution को circumvent करके the word I am using it once

(श्री अध्यक्ष)

again Constitutional Institution को circumvent करके कोई political edge को प्राप्त करने का काम, ये सी.पी. जोशी अध्यक्ष के रूप में नहीं होने देगा। इसलिए मेरी जिम्मेदारी है, मैं जानता हूं। मैं कहना चाहता हूं बहुत गंभीरता से, लिखित टिप्पणी और show cause में डिफरेंस है। लिखित टिप्पणी मैंने मांगी, उसके बाद मेरे विवेक का उपयोग लेकर मैं काम करता this is show cause. लिखित टिप्पणी का मतलब ये नहीं होता खाली उसकी जांच करनी थी कि वे क्या कहना चाहते हैं। मेरा जो यह अधिकार है, इस अधिकार को कटारिया जी और माननीय सदस्य, यदि इस अधिकार की भी रक्षा करने में यदि कन्फ्यूज करते हैं तो इस सदन की कोई आवश्यकता नहीं है। फिर जुडीशियरी डिटरमाइन करेगा हर चीज को। इसलिए मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं please go through the rules. I have adhered to the rules. Rule says very categorically, Rule (7) दल बदल का कि आप लिखित टिप्पणी मांगेंगे, 7 दिन में जवाब दे सकते हैं। कम से कम सुनिए मेरी बात को मेरे विधायक, जिस सदन को मैं चला रहा हूं। उसे मेरे ऊपर विश्वास नहीं कि मेरे से आकर कहते कि साहब आपने यह मांगा, उसमें समय दिया जाए, न दिया जाए, मैं नहीं देता, मैं कोई निर्णय कर लेता तो समझ में आता है, पर एक अध्यक्ष नियम और कानून के अंतर्गत काम करे, लिखित टिप्पणी मांगे। उस लिखित टिप्पणी को सरकार के ऊपर ढोले, यह सरकार की नहीं, जिम्मेदारी मेरी है। यदि इसमें कुछ हुआ है तो यह काम मेरे द्वारा किया गया है और किसी के द्वारा नहीं किया गया है।

श्री गुलाब चन्द कटारिया (नेता, प्रतिपक्ष): मैं आपकी बात को थोड़ा-सा या तो समझाने में मेरी कोई कमी रह गई। मैं कहता हूं कि कल सवेरे भी होता था, सवेरे भी नोटिस भेजे जा सकते थे। ऐसी इमरजेंसी क्या आ गई, मुझे इस पर है केवल, मुझे ये नहीं है कि मैं आपके अधिकारों को चुनौती दे रहा हूं, आपके अधिकार हैं। उन अधिकारों का आप उपयोग करें लेकिन जन सामान्य को समझाने के लिए कोई तो भी ऐसा रीजनेबल कारण तो होना चाहिए कि अगर मान लो सवेरे 10 बजे ये निकाला जाता तो इसमें ये आफत पड़ जाने वाली है। जिसके कारण से बहुत आवश्यकता थी। इस बात पर कह रहा हूं और मैं सोचता हूं उसके बाद भी सरकार जब यह पहले दिन आ सकती थी तो ये डिले किसने किया? ये 34 दिन क्यों खराब किये? आपने इसको ले जाकर के कोर्ट कचहरी में, हाई कोर्ट और सुप्रीम कोर्ट में क्यों उलझाया और

(श्री गुलाब चन्द कटारिया)

उलझाने के बाद भी आप कहां गये? राज्यपाल के पास गये, वो भी उलझाने के लिए गये, आप उनके पास कोई हल निकालने के लिए नहीं गये, नहीं तो एक लाइन के प्रस्ताव में राज्यपाल और सबकी पहली प्रायोरिटी बनती है कि सरकार के प्रति अविश्वास है या मैजोरिटी कम है तो हाउस के फ्लोर पर हम इसको सिद्ध करना चाहते हैं। इसमें किसी को क्या एतराज हो सकता है। लेकिन, आप गये भी सही राजभवन में, कभी क्या लिखकर ले गये, कभी क्या लिखकर ले गये, कभी क्या लिखकर ले गये और आपने तो उनको फरमान ही जारी कर दिया कि 31 तारीख को सदन बुलाना पड़ेगा, जैसे कोई आपके हुक्म की पालना के लिए बैठे हुए हैं। आपके आदेश की पालना के लिए बैठे हैं वहां। मैं सोचता हूं हमारा जो अधिकार है, हमारा अधिकार है मंत्रिमंडल की जो अनुशंसा है, उस अनुशंसा को राज्यपाल के पास भेजते हैं, राज्यपाल का सामान्यत: अपने विधान के अनुसार, उस अनुशंसा पर अपना जो भी संवैधानिक तरीका होता है, उसके अनुसार से निर्णय लेते हैं। पर, ऐसा नहीं हो सकता हैं कि आप 31 तारीख को बुलाओ, क्यों अच्छा वार था, मुहूर्त निकाला हुआ था, किसी ज्योतिष ने बताया था और उसके कारण से डिले हुआ और फिर डिले होने के बाद भी आपने जिस प्रकार का कृत्य किया न, वो कृत्य हिन्दुस्तान के इतिहास में लिखा गया है। अगर राजस्थान के मुख्य मंत्री सार्वजनिक टीवी के ऊपर ये कहें कि अगर राज्यपाल ने निर्णय नहीं किया तो जनता घेर लेगी। यहां तक भी ठीक है, घेर लेगी। यह तो कह सकते हैं हम लोकतंत्र में, लेकिन मेरी कोई जिम्मेदारी नहीं होगी तो दादा भाई किसकी होगी, किसकी होगी। इसके बारे में तो कम से कम आप जैसे सीनियर व्यक्ति से मैं यह उम्मीद नहीं करता था, पर आपके अंदर इतना जहर भर गया था कि आपको बोलते समय इस बात का ध्यान नहीं रहा कि मैं गृह मंत्री भी हूं, मैं इस राज्य का मुखिया भी हूं, मुझे इन शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। जनता घेर लेगी, इसको भी समझ सकते हैं लोकतंत्र में, लेकिन यह नहीं समझ सकते कि राजस्थान का मुख्य मंत्री और राजस्थान का गृह मंत्री राज्यपाल को ये धमकी दे कि मैं जिम्मेदार नहीं होऊंगा तो कौन जिम्मेदार होगा, कौन जिम्मेदार होगा। वे बार-बार आपको लिखकर एक लाइन में दे रहे हैं कि आप रीजन तो समझाओ। आप यह सदन तुरंत इस समय कोरोना की महामारी के समय, अध्यक्ष महोदय, जब मार्च में सदन चल रहा था, बिजनस एडवाइजरी कमेटी ने एक कार्यक्रम दे दिया था। उस कार्यक्रम को भी आपने

(श्री गुलाब चन्द कटारिया)

इस कारण से नकारा कि जिस प्रकार की बीमारी का फैलाव हो रहा है और जिस प्रकार आज हम सब लोगों की, जनप्रतिनिधियों की फील्ड में आवश्यकता है। इस बात को ध्यान में रखकर के आपने सदन को उसी दिन स्थगित किया, समझ में आ सकता है। उसके बारे में किसी को कोई एतराज नहीं था लेकिन उसके बाद आपने इस एक महीने में इस बाड़ाबंदी के कारण, आपकी सरकार के जिस प्रकार के काम रहे, उसके कारण से उस दिन दो लोग मरे थे और उस दिन सैकड़ों की तादाद में अपनी संख्या थी। आज 56 हजार आंकड़ा पहुंच रहा है और इस 56 हजार का आंकड़ा, जब आपने शुरू किया न, जब आज बाड़ेबंदी में गये थे, तब उस समय 5 हजार 400 समथिंग बिलकुल हास्पिटलाइज्ड, आज 14 हजार है। कोई जवाब दे सकेगा, उन माता-पिता को, उन बच्चों को, जिनके घर के परिवार के लोग इस महामारी के कारण से संकट से जूझ रहे हैं। किसके पास जाकर कहें, किसके पास जाकर बताएं। मैं सोचता हूं इस बारे में सोचना चाहिए और बार-बार आपका एक ही टारगेट है भारतीय जनता पार्टी। आप सरकार चला रहे हो, मेरी विनम्र प्रार्थना है कि अगर गुलाब चंद कटारिया ने दोष किया है तो जेल भेजो न, कौन मना करता है? सरकार आपकी, पुलिस आपकी। एक दिन तो मुकदमा दर्ज कराते हैं चीफ व्हिप आपके और मुकदमे में 124 की धारा आप पर भी लगाते हैं और राजस्थान के मुख्य मंत्री पर भी धारा-124, वाह भैया एसओजी और उप मुख्य मंत्री पर भी 124 और फिर घूम करके एफआर लगानी पड़ी, क्या कारण है? यह आपकी पुलिस की व्यवस्था है या पुलिस के काम में दखलंदाजी है? पुलिस को जिस ढंग से आपने हैंडल किया है न, उसके कारण से आप इस समस्या को उलझाते चले गये और जब आपने उन पर 124 लगाई तो आपकी पुलिस वहां गुड़गांव में क्या गीत गाने गयी थी? क्या करने गयी थी? इतने दिनों तक आपके आफिसर्स वहां क्यों पड़े रहे? अगर वे वास्तव में दोषी थे, गिरफ्तार होना था तो फिर वो आपके पास आकर प्रेम से चाय कैसे पी रहे थे? इन दोनों का जवाब राजस्थान की जनता चाहेगी आपसे। आप दूसरों के ऊपर पत्थर फेंककर नहीं बच सकोगे। जिस प्रकार का कृत्य हुआ न, उस कृत्य के कारण से आपने दो लोगों को, मैं सोचता हूं कि अगर मुझे सही नाम याद है तो एक तो अशोक सिंह और एक कोई भरत मालानी, इन दो लोगों को आपने कोई टैपिंग के आधार पर पता किया कि ये सरकार गिराना चाहते हैं? टैपिंग करने का सरकार के होम डिपार्टमेंट का अधिकार है, मैं इसको चुनौती नहीं

(श्री गुलाब चन्द कटारिया)

देता हूं, पर मैं आपसे पूछना चाहता हूं कि परम्शिन लेकर किया या इल्लीगल किया? परमिशन लेकर किया तो माना जा सकता है और बिना परमिशन से किया तो आपने पुलिस को अपने व्यक्तिगत काम में डालकर इस पुलिस को कर्तव्यच्युत किया है और पुलिस की प्रतिष्ठा को दांव पर लगाया है। अपने स्वयं के व्यक्तिगत स्वार्थ के लिये आप पुलिस का कानून से बाहर निकल करके उपयोग करोगे? आपका ओएसडी कौन होता है जो किसी चीज को टेप करके और उसको वायरल करता है?

मैं सदन के माननीय सदस्यों से कहना चाहता हूं, पक्ष के हों या विपक्ष के हों कि अगर इस प्रकार का कृत्य राजनेता अपने ओएसडी के माध्यम से कराता है तो इससे बड़ा मुल्जिम और कोई नहीं हो सकता है। उसने किस अधिकार से कराया, किस कानून से कराया, उसे कौनसा अधिकार था जिसके कारण से उसने कराया? और उसके आधार पर आप मुकदमा दर्ज करते हो। मैं सोचता हूं कि पुलिस का भी इकबाल चला गया है। क्या होता, ट्रांसफर कर देते, जहन्नुम में डाल देते, लेकिन कम से कम कानून की ये धज्जियां उड़ करके राजस्थान की यह नजीर हिन्दुस्तान के सामने तो नहीं जाती और ये जो आपने पुलिस का पहरा लगाया है न दोनों कैम्पों में, यह क्या आपके नौकर थे जो वहां आये? कौन देगा जवाब इस बात का? जैसलमेर में आपने किलाबंदी में जो पुलिस लगाई थी, यह क्या राजकोष में पैसा जमा करके लगाई थी क्या? अपनी सरकार बचाने के लिए पुलिस का दुरुपयोग करते हो और उसके बाद कहते हो कि हमने बहुत अच्छा काम किया। मैं कहना चाहता हूं कि वास्तव में हमारे जितने अधिकार हैं, उनका आप उपयोग करिये, अगर आपको उसके बाद भी पुलिस की जरूरत पड़ रही है तो पैसे जमा करके पुलिस को आप ले सकते हैं, काम में इसमें कोई दिक्कत नहीं है, लेकिन केवल और केवल राज के डंडे के आधार पर अगर पुलिस को उसकी ड्यूटी से बाहर काम देते हो तो यह भविष्य के लिए अच्छा सिम्बल नहीं होगा। इसको बराबर ध्यान में रखने का प्रयास करिये, इतनी मेरी आपसे विनम्र प्रार्थना है।

संसदीय कार्य मंत्री जी का तो कुछ कह भी नहीं सकते। उन्होंने आज विश्वास मत पर भी पुराना इतिहास उखाड़ा यह भ्रष्टाचार, यह भ्रष्टाचार। आपके लोग घास खाकर जेल गये कि नहीं गये? टेलीफोन तार खाकर जेल

(श्री गुलाब चन्द कटारिया)

गये कि नहीं गये? खेल का सामान खाकर जेल गये कि नहीं गये? मकान खाकर के महाराष्ट्र का मुख्य मंत्री गया कि नहीं गया? जिस पार्टी का फाइनेंस मिनिस्टर जेल की सज़ा में रह करके और जमानत पर छूट कर आये, जिसके अध्यक्ष और पूर्व अध्यक्ष अभी जमानत पर छूटे हुए हैं वे हम पर आरोप लगाते हैं।

श्री बुलाकी दास कल्ला (ऊर्जा मंत्री): ओन ए पाइंट आफ आर्डर, सर। जो माननीय सदन के सदस्य नहीं हैं, उनके बारे में बात नहीं कर सकते।

श्री गुलाब चन्द कटारिया (नेता, प्रतिपक्ष): ...(व्यवधान) मैंने नाम नहीं लिया।

श्री शान्ती कुमार धारीवाल (स्वायत्त शासन, नगरीय विकास एवं आवासन मंत्री): जिस पार्टी का अध्यक्ष रिश्वत लेते हुए पकड़ा गया हो, वह हमसे सवाल पूछती है।

श्री रघु शर्मा (चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री): जिसका गृह मंत्री +++ हो। (व्यवधान)

श्री गुलाब चन्द कटारिया (नेता, प्रतिपक्ष): अगर पार्टी का अध्यक्ष पकड़ा गया तो सज़ा पाया। इसमें क्या कर सकते हो? आपने भी अगर मुझे कोई दोष करते हुए पाया तो सरकार चला रहे हो, झुनझुना नहीं बजा रहे हो, करो न कार्यवाही हिम्मत हो तो। केवल बहानेबाजी करके चले जाओ। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष: माननीय कटारिया जी, चेयर की तरफ।

श्री गुलाब चन्द कटारिया (नेता, प्रतिपक्ष): मेरी विनम्र प्रार्थना है कि जिस अशोक सिंह को आपने पकड़ा, जिस संजय जैन को आपने पकड़ा, इतने दिन से वह कस्टडी में है अगर उसने कोई विषय बताया हो, बीजेपी का कोई लीड़र उसमें आया हो, उसके पूरे के पूरे तथ्य हैं तो सार्वजनिक करो न, दबा कर क्यों बैठे हो? केवल और केवल आरोप लगाकर दूर हट जाते हो। यह तो कोई बात नहीं हुई। मैं सोचता हूं कि इस तरह की बात करना उचित नहीं होगा। आपके विधायक गुजरात क्यों गये? हमारे विधायक गुजरात क्यों गये, हम आपको देखकर गये थे क्या? अगर इसकी सच्चाई को देखो, जब भागती सेना होती है न, हारती सेना तो कहीं भी हमला कर देती है। हमला करने के पहले समझदारी है अपना सुरक्षित मोर्चा ले ले, उसमें क्या एतराज है आपको? कोई एतराज नहीं है, मैं सोचता हूं समझदारी है, इसमें क्या बात है। जब आप

(श्री गुलाब चन्द कटारिया)

दोनों ही ऐसे भिड़ रहे हो कि कोई रोज गिनती इधर लगा रहा है, कोई गिनती उधर लगा रहा है। हम तो आपका नाटक देख रहे थे और उसके कारण से अगर आपने देखा हो कि हमने कोई काम किया तो कोई बुरा काम तो नहीं किया, मैं सोचता हूं और मुख्य मंत्री जी का पत्र तो इस बार तो कमाल ही कर दिया और उससे सारी फिजां बदल गई। सारी फिजां बदल गई। मैं सोचता हूं कि फिजां तो घर की बदल दो। बाकी काम तो बाद में भी अपन कर लेंगे पहले घर को तो संभालो उसके बाद किसी को संभालना हो तो करो।

मैं सोचता हूं कि इसके बारे में एक और बड़ा जोरशोर से बोल रहे थे कि भूखे नहीं मरने दिया। मेरा दावा है, मैं बात नहीं कह रहा हूं। ये जो इस राजस्थान सरकार को राशन मिला है न अप्रैल महीने से लेकर अब तक और आगे नवम्बर तक, यह दिल्ली सरकार का है।

श्री शान्ती कुमार धारीवाल (स्वायत्त शासन, नगरीय विकास एवं आवासन मंत्री): 21 रुपये प्रति किलो में खरीदा है। (व्यवधान)

श्री रघु शर्मा (चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री): 23 रुपये में खरीदा है। ...(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष: माननीय मंत्री जी, मुख्य मंत्री जी को बोलना है। कुछ बात मुख्य मंत्री जी को भी बोलनी है, वे जवाब दे देंगे। क्यों चिन्ता कर रहे हो आप। बैठें, प्लीज।

श्री गुलाब चन्द कटारिया (नेता, प्रतिपक्ष): मैं सोचता हूं कि इस बारे में सच्चाई रिकार्ड से देखें कि आपको 67 लाख टन अनाज मिला कि नहीं मिला इनको फ्री देने के लिए? क्या यह सच नहीं है कि हिन्दुस्तान में आपको अकेले को नहीं हिन्दुस्तान के अस्सी करोड़ लोगों को, कितने? अस्सी करोड़ लोगों को नवम्बर महीने तक हर व्यक्ति के यूनिट के हिसाब से पांच किलो गेहूं और पांच किलो चावल और एक किलो दाल देने की घोषणा केन्द्र सरकार के पैसे से है कि नहीं है? है या नहीं है, मैं इसको जानना चाहता हूं मुख्य मंत्री जी, आपके मुंह से जानना चाहता हूं कि वास्तव में राजस्थान को भी प्रधान मंत्री जी की उस योजना के तहत यह अन्न प्राप्त हुआ कि नहीं हुआ? इस बारे में थोड़ा सा बता दें तो पता लग जाएगा।

मैंने पहले भी कहा, मैं पहले दिन से आपसे प्रार्थना कर रहा था कि इस विश्वास मत को लाने की आवश्यकता नहीं थी। पहले ही दिन आप अगर

(श्री गुलाब चन्द कटारिया)

चाहते तो इस सदन के 34 दिन बर्बाद होने से बचा लेते। मैं आपको सच कह रहा हूं कि आप अपने-अपने क्षेत्र में जब जायेंगे तो आपको लगेगा कि इस तीस दिन में इस कोरोना की महामारी से जिस प्रकार का दृश्य गांवों में और शहरों में खड़ा हुआ है, रोंगटे कांप जाते हैं। एक ही परिवार का तीन साल का बच्चा भी है तो उसकी पत्नी भी है, उसका बच्चा है, कौन कहां है, मर जाने के बाद उसकी लाश देखने का भी उसको अवसर नहीं मिलता है। ऐसे समय में हम कुछ ज्यादा तो नहीं कर सकते, पर कम से कम जो बाथरूम साफ नहीं हैं वो तो समय पर साफ करवा सकते हैं। अगर उनको कोई चीज नहीं मिल रही है तो समय पर उपलब्ध कराने का तो काम कर सकते हैं। हमारे पास जो पैसा है, साधन हैं उन साधनों से व्यवस्था में सुधार करके उस आदमी के हौसले को तो बढ़ा सकने का काम कर सकते हैं पर हम तो सब बंद हो गये। क्यों? क्योंकि हमें तो सत्ता चाहिये, बाकी जनता जाए भाड़ में। केवल और केवल सत्ता बनाये रखने के इस संघर्ष में आपने राजस्थान की सात करोड़ जनता को जो भगवान के भरोसे छोड़ा है। आप और मैं यहां पर भले ही हां-हूं करके प्रस्ताव पास कर देना, लेकिन राजस्थान की जनता यह प्रश्न हमेशा खड़ा रखेगी कि आखिर यह सरकार बंद हुई तो क्यों और खुली तो क्यों? किस कारण से बंद हुई और किस कारण से खुली, इसका कोई स्पष्टीकरण तो करे, कम से कम समझ में तो आए कि वास्तव में बंद किसने किया और खोला किसने? अगर यही समझौता होना था तो पहले ही कर लेते, मुझे क्या तकलीफ थी, लेकिन आपने इस बारे में देखने की कोशिश नहीं की।

मैं सोचता हूं कि आपने बातें बहुत कीं हमने यह कर दिया, यह कर दिया। सच में अभी आप सरकार चला रहे हो इसलिए आपका चश्मा बदला हुआ है, लेकिन जब धरातल पर जाओगे तब आपको समझ में आ जायेगा कि वास्तव में हमने 18-19 महीने, मेरी आज भी चुनौती है आपने राजस्थान के दो बजट पेश कर दिये हैं और उन दो बजट के अनुसार अगर किसी में माद्दा बचा है तो डिपार्टमेंट वाइज यहां एक सूची पेश कर दो कि हमने यह पैसा तो स्वीकृत किया था और यह काम तो पूरा हो गया और इतना बजट खतम हो गया। अभी भी वह पाइप लाइन में ही चल रहा है। अभी कहीं टेंडर प्रोसेस में है, कहीं टेंडर स्वीकृति में है, कहीं काम शुरू हुआ, कहीं नहीं हुआ और जिस नरेगा के नाम से आपने किया, वह तो आपके उप मुख्य मंत्री की मेहनत थी या नहीं थी? नरेगा उनके पास था न? जिस व्यक्ति ने मेहनत करके अगर

(श्री गुलाब चन्द कटारिया)

राजस्थान को नंबर एक का नरेगा में मजदूर लगाने का काम किया तो सर्टिफिकेट दिया या उसको धक्का मारा, क्या किया?

श्री सचिन पायलट (टोंक): अध्यक्ष जी, मेरा अधिकार है।

श्री अध्यक्ष: एक मिनट, let him yield first, then you can speak. प्लीज, प्लीज आप बैठें।

श्री सचिन पायलट (टोंक): माननीय अध्यक्ष जी, कई बार मेरा नाम लेकर उल्लेख किया और बहुत सी बातें मेरे संदर्भ में सदन में रखीं। मैं आपके माध्यम से सदन को बताना चाहता हूं कि मैं, मेरी कार्यशैली, मेरा पद, मेरी पार्टी, हमारे नेता, हमारे सहयोगी, हम क्या बोल रहे हैं, नहीं बोल रहे हैं, इसकी पीड़ा हो रही है या नहीं हो रही है, इसका सारा जिम्मा आप हम लोगों पर छोड़ दो और आप तो वह बात कीजिए जो आज सदन में रखी है। विश्वास मत के माध्यम से सरकार के गुणावगुण के बारे में चर्चा करें। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष: माननीय सदस्य, मुझे पता है, मुझे पता है। आप नीचे बैठें, नीचे बैठें, नीचे बैठें। I tell you, I'll name you, I'll name you, नीचे बैठें। अजीब आदमी हो बिलकुल। आपका लीडर बोल रहा है और आप खड़े हो गये। (व्यवधान) पार्टी में नये आये हो क्या, नई पार्टी बना ली क्या? प्लीज नीचे बैठें, नीचे बैठें। आपको समझ में नहीं आ रहा है आपके लीडर बोल रहे हैं फिर भी आप खड़े हो गये। (व्यवधान) प्लीज नीचे बैठें। आप समझ नहीं रहे हैं, नहीं तो बाहर निकलिये यहां से, should I call you? जब इन्होंने यील्ड किया है, वह बोल रहे हैं, आप बीच में खड़े होकर बोल रहे हैं। आप सदन में पहले नियम और कानून पढ़ कर आएं।

श्री सचिन पायलट (टोंक): अध्यक्ष जी, मेरी कोई इच्छा बार-बार किसी के भाषण को इंट्रप्ट करने की नहीं है, लेकिन जब बार-बार मेरा नाम लिया जा रहा है तो मैं समझता हूं कि मेरा दायित्व बनता है क्योंकि सदन के बाहर जो कहा या नहीं किया ...(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष: प्लीज, I'll not allow.

श्री सचिन पायलट (टोंक): अध्यक्ष जी, मैंने नेता प्रतिपक्ष के यील्ड होने के बाद अपनी बात को रखा और मैं इस सदन को बताना चाहता हूं कि जो कहा, नहीं कहा, जिसकी पीड़ा होनी या नहीं होनी चाहिये, वह मेरे पर निर्भर करता है। मैं यह चाहता हूं कि यह जो विश्वास प्रस्ताव है, इस पर

(श्री सचिन पायलट)

सरकार के गुणावगुण पर चर्चा करें तो शायद जनता और प्रदेश देख सकेगा, हम क्या कह रहे हैं, क्या नहीं कर रहे हैं।

श्री गुलाब चन्द कटारिया (नेता, प्रतिपक्ष): अध्यक्ष महोदय, मैंने जो कुछ हकीकत है, वह रखने का प्रयास किया।

श्री अध्यक्ष: कटारिया जी, अब आप वाइंड-अप करें। माननीय सदस्य, प्लीज।

श्री गुलाब चन्द कटारिया (नेता, प्रतिपक्ष): मैं सोचता हूं कि अगर हकीकत के धरातल को छोड़ोगे तो कुछ समय बहुत अच्छा लगेगा, लेकिन लंबे समय तक यह अच्छा नहीं चल सकता। इस सरकार के प्रति जो भी राजस्थान भुगत रहा है इन 30-34 दिनों में और आप सब लोगों ने कहा कि वह बीटीपी भी हमारे साथ, यह भी हमारे साथ, बहुत अच्छी बात है। उस बीटीपी के एमएलए की गाड़ी की चाबी निकालने का काम किसने किया और उसके आगे-पीछे गाड़ी लगाकर रोकने का काम किसने किया? (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष: माननीय सदस्य, प्लीज। I'll not allow. प्लीज, आप गलत परम्परा डाल रहे हैं। मुख्य मंत्री जी का बोलने का है न, सब जवाब दे देंगे। क्या मुख्य मंत्री जी के पास बोलने का टाइम नहीं है। (व्यवधान) not allowed, please. आप मंत्री हैं या क्या हैं, समझाओ मेरे को। I'll not allow. माननीय मुख्य मंत्री जी, मैं मंत्री जी को बिलकुल कह रहा हूं I'll not tolerate it. यह मंत्री का प्रिविलेज नहीं है। मैं आपको फिर बोल रहा हूं I am on Chair, please. आप यहां पर मंत्री हैं और मैं अध्यक्ष हूं यहां पर। आप यदि गरिमा नहीं बना सकते तो सदन में कोई नहीं बना सकता। माननीय कटारिया जी, प्लीज वाइंड-अप।

श्री गुलाब चन्द कटारिया (नेता, प्रतिपक्ष): मैंने जो बात कही है वह वीडियो सबने देखा है और उस वीडियो को देखने के बाद ही उसके स्वयं के वर्जन हैं, मेरे नहीं हैं। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष: कटारिया जी, आप मेरी तरफ देख कर बोलें।

श्री गुलाब चन्द कटारिया (नेता, प्रतिपक्ष): मेरे हिसाब से अगर सच्चाई जो हम सबने देखी वह गलत है तो शायद मैं सोचता हूं और आपने आगे एक होटल पर जाकर इनको रोककर एक घंटे तक जिस प्रकार की एक्सरसाइज करनी पड़ी, वह आपका लोकतांत्रिक तरीका था न? और वही

(श्री गुलाब चन्द कटारिया)

व्यक्ति आपके साथ आकर फोटो खिंचवाकर कहे कि हम समर्थन कर रहे हैं, तो बिना गुड़ लगे कर रहे हैं क्या? (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष: माननीय कटारिया जी। (व्यवधान) मुझे दिख रहा है, मेरा काम तो मैं ही करूंगा, मैंने अलाउ किया है। मेरा काम मैं ही करूंगा, आपकी जरूरत नहीं है। मेरा काम आप करेंगे क्या?

श्री राजकुमार रोत (चौरासी): पुलिस की वजह से जो मिस अंडरस्टेंडिंग की वजह से यह घटना हुई थी, जो घटना हुई उसके पहले ही दिन हमने सीएम साहब को जाकर कह दिया था कि हम लोकतंत्र बचाने के लिए जनता की जो आवाज है, जनता की जो भावना है, उस भावना के साथ हैं, लेकिन कुछ पुलिसकर्मियों की ग़लतफ़हमी की वजह से यह घटना हुई थी। हमने पहले ही दिन इसकी घोषणा कर दी थी। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष: माननीय सदस्य, यह क्या तरीका है? उनकी बात नहीं सुनेंगे, उनको कुछ भी बोल देंगे।

श्री गुलाब चन्द कटारिया (नेता, प्रतिपक्ष): आपकी भावना का बहुत-बहुत आदर और सम्मान कि आप लोकतंत्र को बचाने के लिए गाड़ी की चाबी निकली तभी लोकतंत्र बचा और उसके बाद भी लोकतंत्र ही बचा तो बचा, तो लोकतंत्र ही है जो यहां पर दिख रहा है।

श्री अध्यक्ष: माननीय कटारिया जी, प्लीज।

श्री गुलाब चन्द कटारिया (नेता, प्रतिपक्ष): मुख्य मंत्री जी, मैं यह निवेदन कर रहा हूं कि मेरी कुछ बात आपको कड़वी लग सकती है लेकिन मैं सोचता हूं इस कोरोना के समय में जिस प्रकार की हालत बनी और इन 34 दिन के कारण से जो कुछ भी स्थिति राजस्थान में गुजरी है, वह तो आपने और मैंने स्वयं ने भी देखी है और फील्ड में जाओगे तब आपको भी दिखाई देगी। आपने उस समय बड़ी अच्छी घोषणा की थी कि जितने प्रवासी हैं, सब रजिस्ट्रेशन करवा दो, मैं और मेरी सरकार आपको लेकर आयेगी। साढ़े 12 लाख लोगों ने रजिस्ट्रेशन करवाया था न? कितने लोगों को ट्रेन से लेकर आये, आप आंकड़ें बता देना। बाकी क्या सर पर बैठकर आये थे या पैदल चल कर आये थे। अगर वह पैदल चल कर आये थे तो आपने एक और घोषणा की थी कि एसडीओ उसके लिए जिम्मेदार होगा। राजस्थान के जितने भी टीवी चैनल आपने देखे होंगे, हिन्दुस्तान के, जिन लोगों ने भी दिखाया उसमें 80 परसेंट

(श्री गुलाब चन्द कटारिया)

पैदल चलने वाले अपने बच्चों को गोद में और ऊपर गठरी लेकर चलने वाले फोटो राजस्थान के थे या नहीं थे और अगर थे ...(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष: माननीय सदस्य, माननीय मंत्री जी, प्लीज। क्या कर रहे हैं आज आप?

श्री गुलाब चन्द कटारिया (नेता, प्रतिपक्ष): अगर थे तो राजस्थान के कितने एसडीओ को सज़ा दी है, वह आप लिस्ट पढ़ देना ताकि मुझे यह लगे कि वास्तव में आपने उन पर कार्यवाही कर दी। घोषणा तो बहुत अच्छी है ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन कराओ, सबको ले जायेंगे, 4000 बसें भगवान जाने कहां लगीं। आप जानते हो ज्यादा हिसाब आपके पास होगा, मेरे पास नहीं है। आपने इन 34 दिनों तक बाड़े में बंद रहने के बाद राजस्थान में जिस प्रकार के हालात लॉ एण्ड आर्डर के हुए, क्योंकि पुलिस को तो आपकी रखवाली में लगा दिया तो उसको कहां फुर्सत थी। अभी पांच साल की बच्ची का मुकदमा दर्ज कराने के लिये भी किसी न किसी पार्टी के पदाधिकारी को जाकर वहां बैठना पड़े, धरना देना पड़े तो समझ में आ सकता है कि आपने बहुत अच्छी व्यवस्था की। 34 दिन वहां रहकर भी आपने तो राम राज्य चलाया, आपको बहुत-बहुत मुबारक।

मैंने जो विकास के बारे में कहा उसका आप जवाब दे सकें तो दें, बाकी आपकी जैसी इच्छा। मैं आपसे पूछना चाह रहा हूं कि जो बजट आपने दिया, जो घोषणा की, मैं आज भी ईमानदारी से कह रहा हूं, मैं सहकारिता मंत्री जी से आपके माध्यम से क्वेश्चन पूछ चुका कि अब तक राजस्थान में कितने लोगों का कर्जा आपने माफ कर दिया। वसुन्धरा जी के पिछले टाइम अक्टूबर और नवम्बर में माफ हुआ और जिसका सर्टिफिकेट दे दिया, उसके अतिरिक्त अगर आपकी कोई लिस्ट हो तो जिलेवाइज जारी करके मुझे यह अमाउंट बता दो कि यह अमाउंट मैंने दिया है। केवल और केवल आप बातें कहकर किसी भी समस्या का समाधान नहीं कर सकोगे।

मेरा आपसे कहना है कि आप यह जो हम पर पत्थर फेंक रहे हो कि हमने ऐसा किया, हमने ऐसा किया तो हममें से 2-5 को तो जेल भेजो। अगर हमने गुनाह किया तो फिर यह सरकार चला रहे हो या क्या कर रहे हो? सारी सत्ता आपके हाथ में, पुलिस आपके हाथ में, हम लोग भी आपके सामने हैं, अगर गुनाह किया है तो जेल भेजो, लेकिन केवल और केवल बातें करके, वह

(श्री गुलाब चन्द कटारिया)

मैंने कहा कि बच्चे की मां से झगड़ा है न, बच्चे को थप्पड़ मारने से, बीजेपी को लांछित करने का प्रयास नहीं करना और अगर सत्यता है तो मैं आपको चुनौती दे रहा हूं कि अगर सच्चाई है तो सच्चाई तक पहुंचो जिससे हिन्दुस्तान की जनता यह सोचे कि वास्तव में जो कुछ भी आरोप लगाये गये, उसमें कोई सच्चाई है या नहीं है।

श्री अध्यक्ष: माननीय मुख्य मंत्री जी।

श्री अशोक गहलोत (मुख्य मंत्री): माननीय अध्यक्ष महोदय, विश्वास मत पर चर्चा में अभी हमारे माननीय सदस्यों ने भाग लिया और माननीय नेता, प्रतिपक्ष हैं, उनका आज एक नया रूप देखने को मिला, जिसकी अपेक्षा उनसे नहीं की जाती है, क्योंकि वे भावुक भी हैं, सच्चाई से प्रेम करते आये हैं, लेकिन आज मैं उनके तमाम आरोपों को अस्वीकार करता हूं। उन्होंने जिस रूप में प्रयास किये। आपके पास विश्वास मत पर बोलने के लिए बहुत कुछ था। आप पूछ सकते थे, डेढ़ साल में गवर्नमेंट की परफोर्मेंस। आपने कोरोना के बारे में जिस रूप में विस्तार से चर्चा की, उसका मुझे बहुत अफसोस भी है क्योंकि पूरा देश ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया के लोग राजस्थान की तारीफ करते हैं।

प्रधान मंत्री जी कहते हैं कि राजस्थान से अन्य राज्यों को प्रेरणा लेनी चाहिए। क्यों कहते हैं? मैंने तो उनसे नहीं कहा था। हमने नहीं कहा कि भीलवाड़ा मॉडल हमने बनाया है। आपकी केन्द्र में सरकार है, उसके स्वास्थ्य मंत्रालय ने कहा है और उसी के आधार पर हम लोगों ने काम किया है। आपने अभी बहुत कोशिशें कीं कि हमारे कुछ साथी, जो हमेशा राजनीतिक पार्टियों में होता है, आपके वक्त में भी हुआ, वसुन्धरा जी के वक्त में भी हुआ। यह कोई नयी बात नहीं है। देश के अंदर हर पोलिटिकल पार्टी में कई बार डिस्टेंसेज होते हैं, पर जिस खूबसूरती के साथ उसका समापन हुआ, उसका धक्का अगर देश के अंदर किसी को लगा है तो अमित शाह को लगा, आप सबको लगा। उससे आप बौखलाये हो। आज आपकी बौखलाहट नजर आ रही थी। आप ऐसे बन रहे थे और हो सकता है कि सही भी हो कि आपकी पार्टी के माननीय अध्यक्ष महोदय और माननीय नेता कहां चले गये। जान-बूझकर गये या अनजाने में गये, पता नहीं, परंतु या तो इन दोनों ने मिलकर आपसे बातें छिपायी हैं या केन्द्र सरकार के बड़े-बड़े नेता जो इस षड्यंत्र में शामिल थे, उन्होंने आपको इन्वाल्व नहीं किया है। इन दोनों को इन्वाल्व किया है। हो

(श्री अशोक गहलोत)

सकता है कि आप इनोसेंटली बोल रहे हो, इनोसेंटली बोल रहे हो, इसलिए मैं आपको क्या कहूं, क्योंकि आप नेता, प्रतिपक्ष हो और आपकी यहां राजनीति कैसी चल रही है, यह आपको मालूम है। किन-किन को इन्वाल्व करना है, कौन केन्द्रीय मंत्री इन्वाल्व थे, यह आपको मालूम ही है। उनके नाम तो आडियो टेप में आ ही गये। टेप कैसे हो गयी? आप तो गृह मंत्री रहे हैं, मुझसे पूछ रहे हैं। लीगल होता है या इल्लीगल होता है, वह आप मुझसे पूछ रहे हैं? राजस्थान में कभी परम्परा नहीं रही है विधायकों और एमपी के इल्लीगल टेप करने की और न यह यहां हुआ है, मैं यह दावे के साथ कह सकता हूं। आपने ऐसी फिजां बांधी कि जैसे वो वापस लड़ाई शुरू हो यहां कैसे? आपके सपने कभी पूरे नहीं होंगे। आपने हमारे डिप्टी सीएम साहब के लिए दो बार, आपको कोट करना पड़ा, बड़ी खूबसूरती के साथ में। आज तो आपकी अदायें बड़ी अजीब-सी थीं। आप किस अदा से बोल रहे थे कि कैसे वापस चार महीने बाद, छह महीने बाद में पुन: कैसे षड्यंत्र करें, पहले की तरह, वह षड्यंत्र आप लोगों का था, आपकी पार्टी का था, आपके हाईकमान का था।

मुझसे पूछते हो? पूरा देश गवाह है। आपकी पार्टी ने अरुणाचल प्रदेश के अंदर क्या किया? कांग्रेस के 45 विधायक थे, आप लोगों ने 40 चुरा लिए। आपने कर्नाटक में क्या किया? मध्य प्रदेश के अंदर क्या किया? गोवा के अंदर क्या किया? मणिपुर के अंदर क्या किया? देश के अंदर पूरा नंगा नाच हो रहा है, डेमोक्रेसी खतरे में है, आपको कोई चिंता नहीं है। आप इतने वरिष्ठ नेता हैं, आपको तो कम से कम चिंता होनी चाहिए कि देश में डेमोक्रेसी खतरे में है। उसको हम सब लोग मिलकर स्वीकार करें, उसको बचायें। जिस प्रकार से उस पर राज चल रहा है। दो लोग राज कर रहे हैं। किसी की पूछ हो रही है क्या? आप लोग धमेड़े ले रहे हो। आपकी पार्टी में दिल्ली में मैंबर पार्लियामेंट बने बैठे हैं या केंद्रीय मंत्री हैं, उनकी क्या स्थिति हो रही है? उनको कोई पूछ रहा है? देश में किस रूप में राजनीति हो रही है? किस रूप में फैसले हो रहे हैं? कोई सोच सकता है? क्या यह यहां पर डेमोक्रेसी है? चुनी हुई सरकारों को टोपल कर दो, यह डेमोक्रेसी है? आपने षड्यंत्र करके सरकार को बदलने का पूरा प्रयास किया है। आप तो ऐसे भोला भगत बन रहे हो जैसे आपको कुछ मालूम ही नहीं है। सौ चूहे खाकर बिल्ली निकली हज को। हालात देखकर बना दिया आपकी पार्टी ने। पार्टी ने आपकी परवाह ही नहीं की। हम सब चिंतित हैं। मैं दिल से चिंतित हूं। मैं 69 साल का हो गया हूं। 50 साल से राजनीति

(श्री अशोक गहलोत)

कर रहा हूं। मैं तीन बार केन्द्रीय मंत्री रहा, तीन बार प्रदेश अध्यक्ष रहा हूं। मैं तीन बार एआईसीसी का महामंत्री रहा हूं। आप सबके सहयोग में मैं तीसरी बार मुख्य मंत्री हूं। मैं आज चिंतित हूं मैं ही नहीं हूं, आपमें से कई लोग चिंतित होंगे। राजनीतिक पार्टियों में बोलते नहीं हैं। मैंने पत्र लिख दिया, उतने में ही एतराज हो गया। मैं सदन का नेता हूं, आपने मुझे चुना है। अगर मैं मेरे विधायकगणों को एक डीओ लैटर लिख दूं, कोई जरूरी है कि वे मेरी बात को मानकर चलें। आपकी अंतरात्मा का कहे, वह काम करें आप। कैलाश मेघवाल जी ने स्टेटमेंट दिया, पूरे राजस्थान में उसका वेलकम हुआ। क्यों हुआ? वह सच्चाई थी। मैं प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष था और आप तो खुद गवाह थे, उस सबका आपको मालूम होगा, किस प्रकार के अटेम्प्ट हुए थे भैरोंसिंह जी शेखावत की सरकार गिराने के लिए। मैं था जो प्रधान मंत्री जी के पास गया, यह गलत है, मैं इसका साथ नहीं देना चाहता, हमारी पार्टी साथ नहीं देगी। बलिराम भगत के पास मैं गया, एक इक्विलेंट मुख्य मंत्री जा रहा है, बीमार है। पता ही नहीं क्या इनकी स्थिति बड़ी सीरियस है। पीछे आपके लोग षड्यंत्र करके सरकार गिरा रहे थे, मैंने कहा कि हमारी पार्टी इनके साथ में नहीं है। यह बात भैरोंसिंह जी शेखावत साहब को मैंने नहीं कही। बलिराम भगत ने खुद ने कही। वे भावुक हो गये। वह राजनीति भी थी और आज आप लोग। मैं आप सबको नहीं कहता हूं। मुझे पता है कि आपमें से कई लोग इसके खिलाफ थे कि इस प्रकार से राजस्थान में सरकार गिराने की परम्परा नहीं रही है, गिर ही नहीं सकती।

आपकी पार्टी के अधिकतर लोग यह चाहते थे और मैं उम्मीद करता था कि आप भी चाहते होंगे, क्योंकि आपकी पर्सनैलिटी ऐसी रही है। आज आपका दूसरा रूप देखकर मुझे बहुत दुःख हो रहा है। इसलिए मैंने कहा, हो सकता है कि आपको जानकारी ये लोग नहीं देते होंगे। बड़े-बड़े नेता बैठे हुए हैं। छिपकर दिल्ली जाने की क्या तुक है? दिल्ली राजधानी है, जाओ-आओ। हम भी जाते थे, आते थे, कोई दिक्कत नहीं हुई। रात को छिपकर गये, काउंसलिंग में भाग लिया और रातों-रात वापस आ गये। सुबह प्रकट हो गये। मीडिया में कह रहे हैं कि हम तो दिल्ली में गये ही नहीं, हम तो यहीं पर हैं। कमाल हो गया। छिपकर राजनीति तभी होती है, जब कोई षड्यंत्र होता है और षड्यंत्र में भागीदार बने, कई चेहरे आ गए मुख्य मंत्री बनने के लिए। पता नहीं, क्या होगा? कौन मुख्य मंत्री बनेगा? वसुन्धरा जी का, कैसे प्रतिस्पर्धा

(श्री अशोक गहलोत)

करने का मौका अच्छा मिला है। हाईकमान भी जो सुनते हैं हम लोग, मुझे तो आप लोगों ने मौका दिया नहीं इनसे बातचीत करने का। ऐसे एडवाइजर इनको मिल गए 2004 के अंदर ही। मैं वह व्यक्ति था जब शेखावत साहब चुनाव हारे, 32 पर आ गए थे। हम तो 21 पर आए, अच्छी बात, सबको मालूम है। वह 32 पर आ गए थे, मुख्य मंत्री थे तीसरी बार और मैं 156 लेकर आया था राजस्थान के अंदर। हमने कभी घमंड नहीं किया। मैं खुद उनके घर पर गया। शपथ लेते ही पहले गया। मुख्य मंत्री आफिस से सीधा उनके घर पर गया और तीन बातें कहीं। आराम से आप रहें, कोई सिक्योरिटी आपकी, पहले जो मिर्धा कांड हुआ था, उसमें आपको थ्रेट है, पूरी सिक्योरिटी रहेगी। आपके बीमारी की प्रोब्लम है। दो बार पहले आपरेशन करवाया है। कोई तकलीफ आएगी नहीं डाक्टर्स से। अगर कुछ आप महसूस भी कर लो तो मुझे इत्तिला करना। मेरे तमाम मंत्रिमंडल के साथी थे खेतसिंह राठौड़, चन्दनमल बैद, देवेन्द्र सिंह जी, जो मंत्री थे प्रद्युम्न सिंह जी, सारे लोग निकल कर उनके घर जाते थे चाय पीने के लिए, गपशप करते थे। वह टाइम भी देखा है हम लोगों ने। होली-दीवाली मैं खुद जाता था या वे मेरे यहां आते थे।

वसुन्धरा जी बनीं मुख्य मंत्री, ऐसे सलाहकार इनको मिल गए कि ये जो पूर्व मुख्य मंत्री हैं, इनसे तो मिलना ही पाप है। ये राठौड़ साहब बैठे हैं। मेन एडवाइजर ये ही थे उस वक्त में। मैं उम्मीद करता था इनसे, ये मुझसे कई बार मिलते थे पहले, छिपकर नहीं सबके सामने। भैरोंसिंह शेखावत जी से ट्रेनिंग लिए हुए थे तो मैंने कहा कि ये तो कम से कम वसुन्धरा जी को सही सलाह देंगे। इनसे भी उम्मीद खतम हो गई। पूनियां साहब नये-नये आए हैं। बड़े अच्छे लगते हैं, बड़ी तारीफ सुनते थे। पहली बार एमएलए बने हैं, परंतु इतना बड़ा पार्टी का दबाव है जब तक प्रेस नोट में ऐसी बातें नहीं लिखोगे तो नेता नहीं बनोगे तो अभी इनका रूख बदल गया लिखने करने का। क्या तो इनकी पहले सोच थी और अब सोच बदल गई। इस प्रकार से आप लोगों ने राजनीति की।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं सम्माननीय नेता, प्रतिपक्ष को कहना चाहूंगा कि आपकी कोई चाल हमारा जो ये कुनबा बैठा हुआ है इसको आप कितनी भी कोशिश कर लेंगे, आप, आपके साथी, आपके हाईकमान, जिसने तय कर रखा है, राजस्थान सरकार को मैं गिरा कर रहूंगा और मैं तय कर चुका हूं कि किसी भी कीमत पर गिरने नहीं दूंगा। अमित शाह जी को सपने

(श्री अशोक गहलोत)

में भी सरकारें कैसे गिरे, कांग्रेस मुक्त भारत कैसे बने? मोदी जी हों या अमित शाह जी हों, दो लोग राज कर रहे हैं देश के अंदर। डेमोक्रेसी है ये? सरकारें गिराओ, कांग्रेस मुक्त भारत बनाओ। कांग्रेस का इतिहास पढ़ो। आप लोगों की आंखें खुल जाएंगी। कितना त्याग, बलिदान, किसे कहते हैं, दस-दस साल तक जेल में बंद रहना। दस-दस साल तक जेल में बंद रहे पंडित नेहरू, महात्मा गांधी की रहनुमाई में आजादी के आन्दोलन हुए। सरदार पटेल, मौलाना अबुल कलाम आजाद, अम्बेडकर ने बनाया संविधान, जिनकी धज्जियां आप उड़ा रहे हो और किस रूप में दस साल तक, कभी ढ़ाई साल, कभी 6 महीने, कभी 12 महीने, किसे कहते हैं जेल में रहना, आजादी ऐसे ही मिल गई थी? आप लोगों की पार्टी ने तो एक उंगली भी नहीं कटाई थी, अपनी उंगली भी नहीं कटाई है। किस मुंह से आप बातें करते हो, क्या मुकाबला करेंगे कांग्रेस से? सरकार आती है, जाती है। इंदिरा गांधी चुनाव हार गई थी। आंधी चली वापस, ढाई साल के अंदर और ये जो आज घमंड, अहम चल रहा है दिल्ली के अंदर, कब जनता फैसला उलटा कर दे, पता ही नहीं पड़ेगा। यह मैं कहना चाहता हूं।

आपने बड़ी खूबसूरती से बातें कीं, सीएम, डिप्टी सीएम के बारे में। आप कौन होते हैं बोलने वाले हमारी पार्टी के बारे में?

श्री गुलाब चन्द कटारिया (नेता, प्रतिपक्ष): हाउस में बोलने का मेरा अधिकार है। (व्यवधान) मेरा अधिकार है।

श्री अध्यक्ष: उन्होंने इंडिविजुअली यील्ड नहीं किया है। आप सबसे सीनियर आदमी हैं। जब वह बोल रहे हैं तो आप नहीं बोल पाएंगे। प्लीज।

श्री अशोक गहलोत (मुख्य मंत्री): आप नहीं कह सकते। हमारी पार्टी का अंदरूनी मामला है। आपकी पार्टी के अंदरूनी मामले हैं। हम तो नहीं कहते हैं कि आपका रिश्ता क्या है वसुन्धरा जी से? हम तो नहीं कहते हैं कि यूनुस खान कब प्यारा हो गया वसुन्धरा जी का और राजेन्द्र राठौड़ अलग क्यों हो गया। हमें पता ही नहीं है। यह आपकी पार्टी के झगड़े हैं, हम क्या कर सकते हैं? हमने कभी नहीं कहा यह हाउस के अंदर। आप पंचायती कर रहे हैं, ...(व्यवधान) हाउस के अंदर हमारी पंचायती करोगे आप लोग। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष: माननीय सदस्य ...(व्यवधान)

श्री गुलाब चन्द कटारिया (नेता, प्रतिपक्ष): आप बोलेंगे तो हम नहीं बोलेंगे ...(व्यवधान) मेरा अधिकार है।

श्री अध्यक्ष: माननीय सदस्य आप बैठिए प्लीज। मेरा अधिकार है। (व्यवधान) कटारिया जी, प्लीज। माननीय कटारिया जी, जब तब वे बोल रहे हैं आप इंटरवीन नहीं करें। Please don’t set a wrong precedent, आप सीनियर लीडर हैं, कोई आदमी बोल रहा है तो please don’t do it.

श्री अशोक गहलोत (मुख्य मंत्री): मुझे खुशी होती कि मैं भी भैरोंसिंह शेखावत और अशोक गहलोत के बीच जो संबंध रहे थे, उनके चुनाव हारने के बाद में, अगर मेरे संबंध भी वसुन्धरा जी से वैसे ही रहते 15 साल तक तो मैं समझता हूं कि हम आपस में आदान-प्रदान करते अपने अनुभवों का। एक बार शासन हमारा आया, एक बार आपका आ गया। अगर अनुभव एक्सचेंज होते और ज्यादा अच्छी सेवा राजस्थान की हो सकती थी, परंतु आपमें से कई लोगों ने, मैं आपका नाम नहीं ले रहा हूं, आपमें से कई लोगों ने ऐसा माहौल बनाया जिससे हमारी कभी बातचीत ही नहीं हुई। अब कई अफवाह चल रही हैं। मैं उसको रिपीट नहीं करना चाहता। स्वाभिमान की लड़ाई हो रही है, सब बातें हो रही हैं। कोरोना के बारे में, आप बताइए मैं आज तक पूरे देश की मीडिया को कहता आ रहा हूं, आज तक भी, जब कभी मेरा वीडियो या कांफ्रेस से वे इंटरव्यू लेते हैं, मुझे गर्व है कि राजस्थान में पक्ष-विपक्ष, जब से शुरू हमने किया है, आप सबको बुलाया मैंने, अच्छी मीटिंग हुई थी फिर आप मुझसे मिलने आए। मैंने बाद में धर्मगुरुओं को बुलाया, डाक्टर्स को बुलाया, उसके बाद में मैंने एक्टिविस्ट से बात की। कोई 50-60 वीसी कर ली मैंने, सरपंचों से कर ली, वार्ड पंचों से कर ली, ग्राम सेवकों से कर ली, किसी को भी नहीं छोड़ा। कांस्टेबलों से कर ली। मैं लगा हुआ हूं और मुझे खुशी है कि आप सबका पक्ष-विपक्ष का सहयोग मुझे मिला। चाहे हम लोगों ने सोशल सिक्योरिटी की स्कीम चलाई हो, कैश बांटा हो, काइंड में एमएलए फंड में से आप लोगों ने सेवा की हो, दानदाताओं को मोटिवेट किया हो, भामाशाह आगे आए हों, एमएलए के मोटिवेशन से आए हों, मैंने पक्ष-विपक्ष को साथ रखा। एक समान श्रेय दिया, कोई राजनीति नहीं की कोरोना के अंदर। अभी चाहे वे होटल के अंदर बैठे रहे होंगे, रोज वीडियो कांफ्रेंसिंग होती है, आप भी देखते हैं। फिर भी आपने उसका जिक्र नहीं किया, 21 घंटे मैंने वीसी की, आपकी पार्टी के 80 परसेंट लोगों ने, 90 परसेंट लोगों ने तारीफ की, हमारे यहां कोई दिक्कत नहीं है। हम सब अच्छा काम कर रहे हैं।

मुझे गर्व होता है कि पूरे देश के अंदर इसी कारण से उपलब्धि राजस्थान को मिली कि शानदार कोरोना का काम हो रहा है। उस पर राजनीति

(श्री अशोक गहलोत)

क्या करना? आप तो भावुक आदमी हो कटारिया जी। एक इंसान की जान चली जाती है, कितना दु:ख होता है हम लोगों को। एक की भी जान क्यों जाए? और ये ही सोचकर हम लोगों ने कोई भूखा नहीं सोये, पड़ोसी भी मदद करें। उसी रूप में हम लोगों ने छूट दी एमएलएज को, उसी रूप में हम लोगों ने सबको साथ लिया और यदि आप लोगों की टिप्पणियां आ भी गई हैं, मान लो अध्यक्ष जी की या किसी की भी आ भी गई है राजनीति में कोरोना को लेकर, तब भी मैंने कहा नहीं, हमारे यहां तो पक्ष-विपक्ष, प्रदेश की जनता, एक्टिविस्ट सब मिलकर हम लोग लड़े जा रहे हैं। यह जंग है जीवन को बचाने की। यह जंग है जीवन को और आजीविका को बचाने की। लॉकडाउन हुआ लंबा, बर्बाद हो गए। पूरा देश बर्बाद हो गया, पूरे प्रदेश बर्बाद हो गए। सारी रेवेन्यू कम हो गई। केन्द्र की हो गई और हमारी कम हो गई। अभी तो 40 परसेंट पर आ गए हैं। कैसे हम लोग काम कर पाएंगे? चिंता ये होनी चाहिए। डिस्कशन वह होना चाहिए था। आप मुझको पूछ रहे हैं आप बताइए, जवाब देना, आपने क्या कर लिया? क्या कर लिया, आप देख नहीं रहे हैं भुगत रहे हैं हम लोग 6 महीने से, जीवन बचाने का प्रश्न हमारे सामने है, उस पर तो कम से कम, लोगों के तो व्यवहार बदल गए, सोच बदल गई कि क्या पता नहीं कल मैं जिंदा रहूंगा या नहीं रहूंगा तो धन मेरे क्या काम आएगा? सादगी आ गई लोगों के अंदर। पूरी तरह देश के अंदर, दुनिया के अंदर, सोच बदल गई व्यक्ति की। कोरोना के अंदर भी मध्य प्रदेश की सरकार कैसे टोपल हो, कोरोना के अंदर भी। यह लापरवाही, कोरोना के अंदर एक महीने तक उठा-पटक चलती गई और मध्य प्रदेश के अंदर कोरोना फैल गया। यहां पर कोरोना आया तो दिल्ली से खबरें आ रही थीं कोरोना, नो कोरोना, हमारा मिशन टोपल रहे, मिशन लोटस, जो भी नाम देते हो आप लोग, वह कंटीन्यू रहना चाहिए। आप बताइये, देश कहां जा रहा है? कोरोना में जिंदगी जा रही हैं और आप लोग मिशन कंटीन्यू रखो। कंटीन्यू रखा गया। मार्च में राज्य सभा के चुनाव थे, मध्यप्रदेश के सीएम साहब शपथ ले रहे हैं, बड़े-बड़े जुलूस निकल रहे हैं, पार्लियामेंट चल रही है। अचानक दो दिन पहले इलेक्शन कमीशन आफ इंडिया चुनाव पोस्टपोन करता है, क्यों करता है? परसों चुनाव होने वाले हैं वोटिंग पड़ जाएगी, इसलिए कि जो उनका षड्यंत्र था कि कैसे हम गुजरात की तरह तोड़फोड करे। आपकी पार्टी ने 14 विधायक तोड़ लिए। अमित शाह जी थे वहां पर। रात को ढाई बजे तक हमारे गृह मंत्री महोदय असेम्बली के अंदर बैठे हुए

(श्री अशोक गहलोत)

थे, 14 विधायक तोड़ लिए, सात और तोड़ लिए, इसीलिए चुनाव पोस्टपोन किए गए। उनको राजस्थान से भी उम्मीद थी। गुजरात में इस बार और सात तोड़ लिए इस बार, एक सीट निकालने के लिए। क्या हो रहा है, यह तो कम से कम सोचो। डेमोक्रेसी नहीं रहेगी तो हम और आप कहां रहेंगे, उसकी कोई चिंता नहीं है। आपने शानदार मैनेजमेंट की कोई तारीफ नहीं की। मैं उम्मीद करता था कि आज पूरे हाउस के अंदर कोविड की चर्चा होगी तो आप कहेंगे कि राजस्थान ने वह उदाहरण पेश किया है जहां पक्ष-विपक्ष ने मिलकर राजस्थान के मैनेजमेंट में कमी नहीं रखी। मुझे कहते हुए गर्व है, मैं संतुष्ट हूं। मुझे मालूम है सबने मिलकर अपने-अपने क्षेत्रों के अंदर इतना शानदार काम किया है कि जनता खुश है। हमारे विधायक लोगों ने भी कहा, पहले फोन काम के लिए आते थे, अब फोन आते हैं कि आप डटे रहना भले ही महीना भर लग जाए, दो महीने लग जाएं, सरकार गिरनी नहीं चाहिए, यह स्थिति बनी हुई है इसलिए यह जो बातें की जा रही हैं, वह बहुत ही तकलीफदेह हैं।

कटारिया साहब कुछ बातें ऐसी होती हैं, महामहिम गवर्नर का बहुत बड़ा पद होता है, एक गरिमा होती है। आपने घेराव करने की बात कह दी, मैंने कहा, इतना गुस्सा आ सकता है। देश के आज तक के इतिहास के अंदर, जब कभी भी असेम्बली बुलाई जाती है तो कैबिनेट सिम्पल प्रस्ताव पास करती है और भेजती है, फाइल अंदर जाती है और वापस बाहर आती है। अंदर गई, साइन हुआ, बाहर आई। उसके अलावा कोई काम गवर्नर का नहीं होता है, कुछ होता ही नहीं है। आपने भी कई बार भेजी होगी, फाइल वापस आई होगी, ठीक है। इस बार जब फाइल नहीं आई, स्वाभाविक है क्या कारण होगा। गवर्नर साहब ने मुझे एक लैटर लिखा, जिसका जिक्र आप कर रहे थे। मैंने उनका जवाब दिया, उसका जिक्र शायद आपको मालूम नहीं है। मैं नहीं चाहता कि मेरे और गवर्नर के बीच क्या पत्राचार हुआ है उसका मैं जिक्र करूं। आप मुझे फोर्स मत करना वरना मैं जिक्र कर दूंगा। मैं ऐसा ही आदमी हूं, जब बोलने के लिए खड़ा होता हूं तो दिल से बोलता हूं और कोशिश करता हूं कि सच्चाई पर बोलूं, इस बात को गवर्नर साहब जानते हैं। उन्होंने हमें जो जवाब दिया, उसमें मेरे पत्र की भावना का एक पैरा आ गया, उनका बड़प्पन है कि जब मैंने उनसे बात की तो उन्होंने मेरे बात छेड़ते ही कहा, मैंने खुद महसूस किया, मैंने मेरे आदमी को डांटा, यह आपको नहीं करना चाहिए। यह बातें

(श्री अशोक गहलोत)

कृपा करके आप मुझसे मत करो। परन्तु मैं आपको कहना चाहूंगा कि एक फाइल जाती है और वापस आती है। मैं जानता हूं कि गवर्नर पर दवाब होते हैं, केन्द्रीय गृह मंत्री के भी होते हैं, सबके होते हैं। उनकी अपनी मजबूरी रही होगी, मैं यहां वह बात नहीं करना चाहता। गवर्नर साहब एक अच्छे इंसान हैं, भले आदमी हैं। कोविड के अंदर उन्होंने लगातार सब एमएलएज को फोन किए, मंत्री को फोन किए, पूछते रहे, बुलाते रहे। मुझे अच्छा लगा कि पहले गवर्नर आए हैं, जो इतना इंटरेस्ट ले रहे हैं तो मुझे उनसे कोई शिकायत नहीं रही, पर वह शिकायत वाजिब थी, तो मैंने कहा कि जनता में गुस्सा आ सकता है, घेराव कर सकती है, मेरी जिम्मेदारी नहीं होगी। यह मैंने नहीं कहा है, मेरी सरकार बचाने के लिए मैंने नहीं कहा है। आप लोग उनके दिमाग में गलतफहमी पैदा करते हो, मैंने कहा गुस्से में लोग आ जाएंगे। यह पोलिटिकली लैंग्वेज होती है। कोई सात करोड़ लोग यहां आएंगे? मेरी व्यक्तिगत जिम्मेदारी नहीं होगी, सरकार तो पुलिस भी है, प्रशासन भी है, वह तो बचाव करेगा ही करेगा, कोई हो गवर्नर। पर ऐसा फैलाया गया जैसे कि मैंने कह दिया हो कि कुछ भी हो जाएगा, हमें पता ही नहीं पड़ेगा क्या हुआ गवर्नर हाउस का। चलो कोई बात नहीं, वह तो हम दोनों के बीच की बात है।

इस रूप में जो कुछ भी हुआ वह अच्छा नहीं हुआ। तीनतीन बार फाइल गई, इतने एडिटोरियल लिखे गए देश के अंदर, कोई सौ लिखे गए होंगे। गवर्नर साहब ने जिंदगी भर अच्छे काम किए हैं, इनकी देश में अच्छी छवि रही है, सब पार्टियों के अंदर अच्छा ओहदा रहा है, कांग्रेस वाले उनकी तारीफ करते थे। पहली बार उनके खिलाफ सौ एडिटोरियल लिखे गए होंगे, कोई सोच सकता है? क्यों लिखे गए, क्योंकि आपकी पार्टी के नेताओं ने उन्हें तंग किया होगा, उनको गाइड किया होगा, उन्होंने मजबूरी में हमें असेम्बली बुलाने की परमिशन नहीं दी। उन्हें कोई हक नहीं था, उनका अधिकार ही नहीं है। अगर कैबिनेट लिखकर भेजता है, गवर्नर को असेम्बली बुलानी ही पड़ती है, कोई कारण है ही नहीं। हमारा बहुमत खतम हो सकता है, तो गवर्नर कह सकता है असेम्बली बुलानी ही पड़ेगी और फ्लोर टेस्ट करना होगा, इसके अलावा कोई काम नहीं होता। इस मामले में क्या किया गया, इन हालातों में चल रहे हैं। हमने खुद ने कहा, मैं कहना नहीं चाहता मेरे और गवर्नर साहब के बीच क्या बात हुई। हमें असेम्बली में सार्थक बात करनी चाहिए। जनता में ऐसे मैसेज चले गए कि पता नहीं इनके बीच में क्या-क्या बातें हो रही हैं।

(श्री अशोक गहलोत)

आगे हम सबको मिलकर काम करना है तो कम से कम ऐसा माहौल तो बने जिससे कि हम मिलकर काम कर सकें।

मैं तमाम माननीय सदस्यों को इतना निवेदन करना चाहूंगा। डेमोक्रेसी में क्या ईडी, सीबीआई, इनकम टैक्स का दुरुपयोग नहीं हो रहा देश के अंदर? आप लोग भी टेलीफोन पर बात करते हो, सीधा नहीं कहते हो कि फ्री स्टाइल पर आ जाओ भाई, व्हाट्सएप पर आ जाओ। क्यों कहते हो, क्या डेमोक्रेसी में यह बात अच्छी है? आप कहते हो कि फ्री स्टाइल पर आ जाओ, व्हाट्स आप पर बात करो, खुलकर बात नहीं कर सकते देश के अंदर, इसको हम क्या कहेंगे, किसी के पास कोई जवाब है? हो रहा है देश के अंदर। पूरी तरह से बरबादी हुई हुई है। उसके बाद भी बड़े अच्छे आग्र्युमेंट दिए गए। जैसे कि हमारी पार्टी के नेताओं की, आप लोगों को हम लोगों की जैसे कोई बहुत बड़ी चिंता है। क्या हुआ अपने घर की लड़ाई थी, बदनाम क्यों कर रहे हो? आपने अच्छा बचाव करने का प्रयास किया, हाईकमान का, वह आपका फर्ज था, मुझे उसमें कोई एतराज नहीं, परन्तु जिस रूप में लगता है नेता, प्रतिपक्ष को भी गुमराह रखा गया होगा। उनको सारी बातें बताई ही नहीं होगी कि कौन-कौन षड्यंत्र में शामिल था। क्या एक केन्द्रीय मंत्री का नाम नहीं आया आडिट टेप के अंदर, कोई इन्कार कर सकता है? क्यों नहीं वह अपनी वाइस टेस्ट करवाते। एसओजी के अंदर मुझे या डिप्टी सीएम साहब को नोटिस दिया था क्या? हमने आरोप लगाया कि सरकार को टोपल करने का षड्यंत्र चल रहा है। चीफ व्हिप ने लिखकर भेजा, उन्होंने उसके बदले में, एसओजी ने हमें लिखकर भेजा, आप बयान दे दीजिए, सिम्पल। 60 सीआरपीसी के अंदर खाली गवाही के लिए कहा था, कोई आरोप नहीं लगाए हैं, कि हम लोग कोई मुलजिम हैं, क्या है, क्या नहीं है। आपने बड़ी खूबसूरती से इसे एक्सप्लेन कर दिया। देश के अंदर ग़लतफ़हमी भी पैदा हुई थी। खाली सीएम, डिप्टी सीएम अथवा किसी अन्य एमएलए को नोटिस मुलजिम के तौर पर नहीं भेजा गया है। जानकारी होने के लिए संभावित गवाहों के तौर पर बयान, संभावित गवाह, अगर आप कुछ कहना चाहते हो, बयान लिखने के लिए समय और स्थान पूछा गया था खाली। आप ऐसे बोल रहे हो जैसे कि वास्तव में बहुत षड्यंत्र हो गया और एसओजी का दुरुपयोग हो गया। हम जो आरोप लगाते हैं ईडी पर, सीबीआई पर, इनकम टैक्स पर, तो हम खुद ही दुरुपयोग करेंगे एसओजी का, एसीबी का। क्या हुआ, हमारे कुछ एम.एल.ए. वहां पर बैठे हुए हैं, वे उनके बयान लेने उनके पास में नहीं जाएंगे और हमारे यहां कोई टेलीफोन टेप नहीं होता है, मैं

(श्री अशोक गहलोत)

आपको फिर कहना चाहता हूं। आपको विश्वास दिलाता हूं आप निश्चिंत रहो, कोई अफवाह नहीं चलनी चाहिए।

(16.00 बजे)

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं यही कहना चाहूंगा कि यहां पर टिड्डी के प्रकोप की बात भी हुई है। पेट्रोल और डीजल के दाम तो कमाल ही हो गया, 20 दिन तक लगातार बढ़ते गये, बढ़ते गये। 10 पैसे बढ़ते थे देश के अन्दर तो हंगामा होता था। आज आपकी पार्टी की सरकार वहां पर डीजल और पेट्रोल के दाम लगातार बढ़ाती गई, कोई आपको पूछने वाला नहीं है। किस प्रकार राजनीति का नैतिक पतन हो रहा है, वह सबको मालूम है। मैं क्या कहूं, आप खुद समझते हैं इन बातों को। आज जो स्थिति है, अलग से आपको रिक्वेस्ट की गई है कि हम चाहेंगे कोरोना पर और लॉकडाउन के बाद जो फाइनेंशल स्थिति बनी है, स्लो डाउन पहले ही था, कोरोना से पहले ही इकोनोमिक स्लो डाउन था, अब और ज्यादा बनी है तो हम सबका फर्ज बनता है कि हम क्यों नहीं उस पर चर्चा करें। पब्लिक का कांफिडेंस बनेगा और उसी हिसाब से हम चाहेंगे कि बाद में हम लोग अपना काम कर सकें। इसलिये मैं आपको रिक्वेस्ट करूंगा कि आप जब भी चाहें, हाउस बुला लीजिये। उसमें मैं चाहूंगा कि हमारे सब साथी, क्योंकि मैंने 21 घण्टे वीडियो कांफ्रेंसिंग की थी। मैं आभारी हूं वसुन्धराजी का भी, वहां लखनऊ में थीं, तब भी वहां से जुड़ीं। आप खुद जुड़े थे उसके अन्दर, आप भी जुड़े थे, सब लोग जुड़े। आपके मैम्बर आफ पार्लियामेंट भी जुड़े थे। कई केन्द्रीय मंत्री आये, वापस चले गये टाइम के कारण से पर सबने, पक्ष-विपक्ष ने, उस वक्त 21 घण्टे बैठ करके जो कुछ मुझे सलाह दी, मैंने प्रयास किया कि उन सलाहों के आधार पर मैं और क्या फैसले करूं। सबकी जानकारी में है, रघु शर्मा स्वास्थ्य मंत्री हैं, डाक्टरों की पूरी टीम बनी हुई है। हम लोग रोज बैठकर कलेक्टर्स के साथ में, सी.एम.एच.ओज. के साथ में वी.सी. करते हैं। कोई कमी नहीं रखी है। पूरा शानदार प्रबंधन है। अगर आपको यह अहसास होता हो कि यह कैम्प लगने के कारण कोई तकलीफ आ गई है तो मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि निश्चिंत रहो, राजस्थान की जनता में, घर-घर के अन्दर यह विश्वास है कि कोरोना काल के अन्दर इस सरकार ने हमारी पूरी हिफाजत रखी है, ध्यान रखा है। इसमें कोई दो राय नहीं है, इसीलिये राजस्थान के अन्दर मृत्यु दर सबसे कम है। एक बार जुलाई में तो 1 परसेंट से नीचे चली गई थी। हमारे यहां पर रिकवरी रेट शानदार है। हमारे यहां पर डबलिंग रेट बहुत शानदार है, पैरामीटर्स शानदार हैं।

(श्री अशोक गहलोत)

कोई चिंता करने की बात नहीं है। चिंतित हम हैं, आप सबके सहयोग से चिंतित हैं। उसमें आप सबका सहयोग मैं ले रहा हूं, मुझे मालूम है। इसलिए मैं लम्बी बात नहीं कहता हुआ, अध्यक्ष महोदय, चूंकि आज आर्थिक तंगी, कोरोना, देश में कई हालात हैं। चाइना की अलग हालत थी, उस पर चर्चा तो हो नहीं, खाली आपने खड़े हो करके किसी प्रकार से मुझे बड़ी होशियारी से, और वह भी गुलाब चन्दजी कटारियाजी के माध्यम से जो कुछ कहने का प्रयास किया गया, मैं समझता हूं कि उसमें कोई मैं स्वीकार करने के लिये तैयार हूं कि आपकी बातों में दम नहीं था। आप खाली, खाली अपना फेस सेव कर रहे थे। आपको मालूम नहीं कि आपकी पार्टी के नेताओं ने क्या-क्या षड्यंत्र किये, या तो आपको जानकारी नहीं है और आपको जानकारी है तो आप जान-बूझ करके आप उनके पार्ट और पार्शल हैं, आप मिल करके हमारी सरकार को टोपल करने के लिये पूरा प्रयास कर रहे थे। उसमें आपको बहुत बड़ा झटका लगा। जब हम एक हो गये तो इतना बड़ा झटका लगा, वह झटका आप अभी तक सहन नहीं कर पा रहे हो, यह मैं आपको कहना चाहता हूं।

अब लास्ट में, जो हमारे राजेन्द्र राठौड़ साहब ने कहा, तू इधर-उधर की बात न कर। मुझे पता नहीं, आपका क्या मकसद था, तो मैंने भी मेरे एक दोस्त से वह पूरा शेर मंगवाया है। आप कहो तो उसको पढ़कर सुना दूं? वह पूरा शेर यह है कि तू इधर-उधर की बात न कर, यह बता कि काफिले क्यों लुटे। (व्यवधान) काफिले क्यों लुटे।

श्री शान्ती कुमार धारीवाल (स्वायत्त शासन, नगरीय विकास एवं आवासन मंत्री): यह बता कि कारवां लुटा तो क्यों लुटा।

श्री अशोक गहलोत (मुख्य मंत्री): एक मिनट, एक मिनट।

मुझे राहजनों से गरज नहीं, मुझे राहजनों से गरज नहीं। जिन्हें लूटने से गरज नहीं, शिकायत नहीं, तेरी रहबरी का सवाल है। तेरी रहबरी का सवाल है, तू जो नेता बना फिरता है, उसका सवाल है। तुम्हारा और हमारे आमेर से आने वाले माननीय सदस्य, तुम दोनों और एक केन्द्रीय मंत्री का। तुम्हारी रहबरी का सवाल है कि कारवां क्यों लुटा। आप लोग नेतागीरी कर रहे थे सरकार गिराने के लिए, यह बताओ आप तो।

आगे इसका जवाब है, मैं बताऊं क्यों लुटा। मैं बताऊं काफिला क्यों लुटा। वह जो काफिले का रहबर था, जो लीडर था, वह था राहजनों से मिला

(श्री अशोक गहलोत)

हुआ। वह खुद ही लुटेरों से मिला हुआ था। उसे काफिले की फिक्र न थी। उसे काफिले की फिक्र न थी, उसका रहजनी का ही काम था। उसका खुद का काम ही यही था। धन्यवाद, जय हिन्द।

श्री अध्यक्ष: प्रश्न यह है कि यह सदन मंत्रीपरिषद् में विश्वास व्यक्त करता है?

(स्वीकृत)

सदन द्वारा मंत्रीपरिषद् में विश्वास व्यक्त किये जाने का प्रस्ताव स्वीकृत किया गया।

सदन की बैठक शुक्रवार, 21 अगस्त 2020 के प्रात: 11.00 बजे तक के लिए स्थगित की जाती है।

(तदनन्तर सदन की बैठक 16.06 बजे शुक्रवार, दिनांक 21 अगस्त 2020 के 11.00 बजे तक के लिए स्थगित हुई)